सोम एवं अयाहुआस्का (Ayahuasca)
एक सांस्कृतिक अध्ययन

जवाहरलालनेहरू विश्वविद्यालय की
एम.फिल्. शोध उपाधि
हेतु प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध

शोधनिर्देशक
डॉ. चौडूरि उपेन्द्र राव
विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र

शोधकर्त्री
उमा आर्या

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110067
2012

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110067

Special Centre for Sanskrit Studies
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
New Delhi-110067

DECLARATION

This is dissertation entitled ***"सोम एवं अयाहुआस्का (Ayahuasca) एक सांस्कृतिक अध्ययन"*** Submitted by **Uma Arya** to Special Centre for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067, for the award of the degree of Master of Philosophy is an original work and has not been submitted so far in part or full, for any other degree or diploma of any University. This may be placed before the examiners for evaluation and for award of the degree of Master of Philosophy.

UMA ARYA
Research Scholar

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110067

Special Centre for Sanskrit Studies
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
New Delhi-110067

20 July, 2012

CERTIFICATE

This is dissertation entitled ***"सोम एवं अयाहुआस्का (Ayahuasca) एक सांस्कृतिक अध्ययन"*** Submitted by **Uma Arya** to Special Centre for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067, for the award of the degree of Master of Philosophy is an original work and has not been submitted so far in part or full, for any other degree or diploma of any University. This may be placed before the examiners for evaluation and for award of the degree of Master of Philosophy.

DR. C. UPENDRA RAO
(Supervisor)

Prof. Shashiprbha Kumar
(Chairperson)

विषयानुक्रमाणिका

अध्याय		विषय–वस्तु	पृष्ठ संख्या
कृतज्ञता ज्ञापन			
पुरोवाक्			
संकेताक्षर सूची			
प्रथम अध्याय	:	**वैदिक साहित्य में सोम की अवधारणा**	**1–26**
		1.1 सोम का लक्षण तथा उत्पत्ति स्थान	1–2
		1.2 ऋग्वेद में सोम स्वरूप	3–6
		1.3 यजुर्वेद में सोम स्वरूप	6–12
		1.4 सामवेद में सोम स्वरूप	12–14
		1.5 अथर्ववेद में सोम स्वरूप	15–19
		1.6 ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम स्वरूप	19–24
		1.7 उपनिषदों में सोम स्वरूप	24–26
द्वितीय अध्याय	:	**उपलब्ध आंग्ल साहित्य में अयाहुआस्का का सामान्य परिचय**	**27–37**
		2.1 अयाहुआस्का परम्परा में परिवर्तन	32–34
		2.2 अयाहुआस्का कानूनी तौर से वैध या अवैध	34–35
		2.3 अयाहुआस्का का वैश्वीकरण	36–37

तृतीय अध्याय	:	**ऋग्वेद तथा आयुर्वेद में सोम का स्वरूप तथा विशेषताएँ**	**38–58**
		3.1 ऋग्वेद में सोम का स्वरूप एवं विशेषताएँ	38–46
		3.2 आयुर्वेद में सोम का स्वरूप	47–51
		3.3 सोम तथा आयुर्वैदिक सोम में भिन्नता	51–54
		3.3.1 रस अभिषवण में भिन्नता	51–52
		3.3.2 स्वरूप भेद	52
		3.3.3 सोम प्रकार	52
		3.3.4 सोमपान के बाद की स्थिति	52–54
		3.4 आध्यात्मिक सोम	54–56
		3.5 आधिदैविक सोम	56–57
		3.6 आधिभौतिक सोम	57–58
चतुर्थ अध्याय	:	**अयाहुआस्का का स्वरूप तथा विशेषताएँ**	**59–73**
		4.1 अयाहुआस्का का स्वरूप	59–62
		4.2 विशेषताएँ	62–73
		4.2.1 औषध गुण	63–65
		4.2.2 मनोवैज्ञानिक प्रभाव	65–68
		4.2.3 आध्यात्मिक प्रभाव	68–73
पंचम अध्याय	:	**सोम तथा अयाहुआस्का का सांस्कृतिक अध्ययन**	**74–100**
		5.1 सामाजिक उपयोगिता	74–76
		5.2 आर्थिक उपयोगिता	76–81
		5.3 राजनीतिक उपयोगिता	81–84

5.4	धार्मिक उपयोगिता	84—85
5.5	महाभिषव	85—86
5.6	क्षुल्लकाभिषव	87
5.7	सोमयाग	88—90
5.8	अयाहुआस्का का सांस्कृतिक अध्ययन	90
5.9	सामाजिक उपयोगिता	91—93
5.10	आर्थिक उपयोगिता	93—95
5.11	राजनीतिक उपयोगिता	95—96
5.12	धार्मिक उपयोगिता	97—100
उपसंहार		**100—104**
सन्दर्भ—ग्रन्थ सूची		**105—118**

संकेताक्षर–सूची

ऋ.	–	ऋग्वेद
यजु.	–	यजुर्वेद
साम.	–	सामवेद
अथर्व.	–	अथर्ववेद
मै. सं.	–	मैत्रायणी संहिता
वाज. सं.	–	वाजसनेयी संहिता
तै. सं.	–	तैत्तिरीय संहिता
तै. सं. सा. भा.	–	तैत्तिरीय संहिता सायण भाष्य
तै. ब्रा.	–	तैत्तिरीय ब्राह्मण
श. ब्रा.	–	शतपथ ब्राह्मण
गो. ब्रा.	–	गोपथ ब्राह्मण
ता. ब्रा.	–	ताण्ड्य ब्राह्मण
जै. उप. ब्रा.	–	जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण
कौ. ब्रा.	–	कौषितकी ब्राह्मण
ऐ. ब्रा.	–	ऐतरेय ब्राह्मण
च. सं.	–	चरक संहिता
सु. सं.	–	सुश्रुत संहिता
छा. उप.	–	छान्दोग्योपनिषद्
बृहद्. उप.	–	बृहदारण्यकोपनिषद्
मै. उप.	–	मैत्रायणी उपनिषद्

मु. उप.	–	मुण्डकोपनिषद्
कौ. उप.	–	कौषितकी उपनिषद्
श्वेता. उप.	–	श्वेताश्वतरोपनिषद्
तै. उप.	–	तैत्तिरीय उपनिषद्
शब्द. क.	–	शब्दकल्पदुम
अ. को.	–	अमरकोश
उ.	–	उणादिकोश
का. श्रौ. सू.	–	कात्यायन श्रौतसूत्र
भा. श्रौ. सू.	–	भारद्वाज श्रौत सूत्र
आश्व. श्रौ. सू.	–	आश्वलायन श्रौत सूत्र
मनु.	–	मनुस्मृति
दया. भा.	–	दयानन्द भाष्य
तै. आ.	–	तैत्तिरीय आरण्यक
श्रौ. प. नि.	–	श्रौत पदार्थ निवर्चनम्
नि.	–	निरुक्त

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं उस परमपिता परमेश्वर का स्मरण करती हूँ, जिसकी असीम अनुकम्पा से देववाणी को ज्ञान का माध्यम बना सकी। मैं अपने शोध–निर्देशक आदरणीय डॉ. चौडूरि उपेन्द्र राव के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध–विषय चयन से लेकर शोध–प्रबन्ध को पूर्ण रूप में परिणत करने में सहयोग प्रदान किया। उनके मार्गदर्शन और सुझावों के कारण मैं इस शोध कार्य को सुस्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम हुई हूँ।

संस्कृत विभाग की अध्यक्षा प्रो. शशिप्रभा कुमार जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने समय–समय पर मेरा उत्साहवर्धन कर मुझे सम्बल प्रदान किया। इन्होंने शोध–प्रविधि से सम्बन्धित सुझाव तथा त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट कर समुचित दिशानिर्देश प्रदान किया। संकाय सदस्य डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल जी, डॉ. हरिराम मिश्र जी, डॉ. रजनीश मिश्र जी, डॉ. रामनाथ झा जी एवं डॉ. गिरीशनाथ झा जी को हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके सानिध्य में मैंने एम.फिल् सत्र सम्पन्न किया।

मैं अपनी मातृतुल्या प्रो. सुकेशीरानी गुप्ता जी रीडर एवं विभागाध्यक्षा, आर. जी.पी.जी. कॉलेज (मेरठ) के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। जिन्होंने मेरे शोध–कार्य के लिए उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराई। इनका दिग्दर्शन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन सदैव प्रकाशस्तम्भ के सदृश मुझे आगे बढ़ाने में प्रेरित करता रहता है। मैं श्रद्धेय प्रो. देवीचन्द्र शर्मा जी रीडर एवं विभागाध्यक्ष जे.वी. जैन कॉलेज (सहारनपुर) का आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने अध्ययनक्रम में आने वाली दुविधाओं को दूर कर मेरा मार्ग प्रशस्त किया। मैं ईश्वर से इनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करती हूँ। मैं आदरणीय डॉ. कुँवर साहब जी के प्रति हृदय

से कृतज्ञ हूँ। जिनके अप्रतिम सहयोग से मैं इस शोध–प्रबन्ध को मूर्तरूप दे पाई हूँ। मैं परमपिता परमेश्वर से इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

मैं अपनी दादी, माता जी व पिता जी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। जिनक वात्सल्य, स्नेह एवं सतत् प्रेरणा से मैं उन्नति के पथ पर निरन्तर अग्रसर होती रही हूँ। मैं अपने दोनों भाईयों एवं भाभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। जिन्होंने सद्भावना एवं सुमधुर वचनों से सर्वदा मुझे शोध–कार्य के प्रति प्रवृत्त किया।

मैं अपनी ज्येष्ठ भगिनी सदृश सुधा दी, सहाध्यायी अमिता जी, मनीषा जी एवं अशोक जी को धन्यवाद देती हूँ। जिन्होंने शोध–प्रबन्ध को लिखने में सहयोग किया। इसके अतिरिक्त सभी मित्रों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में मेरा सहयोग किया।

मैं अपने शोध–प्रबन्ध के टंकणकर्त्ता संजय भण्डारी जी की अत्यन्त आभारी हूँ। जिन्होंने तत्परता से अविलम्ब टंकण कार्य समाप्त कर मेरे शोध–कार्य को सुगम बना दिया।

उमा आर्या

समर्पण

मेरे प्रेरणा-स्रोत
परमश्रद्धेय दादा जी
को सादर समर्पित॥

पुरोवाक्

वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ है। सभी प्रकार का ज्ञान–विज्ञान वेदों में निहित है। चाहे वनस्पति विज्ञान हो या सृष्टि विषयक वार्ता, विमान, नौका निर्माण सम्बन्धी कला हो या फिर वास्तुकला, औषधि शास्त्र सम्बन्धी वार्ता, सबके अंकुर वेदों में ही विद्यमान है। अतः यह उचित ही कहा गया है– भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति। मनु.। प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध में सोम एवं अयाहुआस्का के सांस्कृतिक अध्ययन को लेकर कार्य किया गया है। वैदिक साहित्य में सोम एक लता (बेल) लता से निसृत रस, सोमदेवता तथा चन्द्रमा के रूप में मिलता है। ठीक उसी प्रकार दक्षिण अमेरिका में अयाहुआस्का नामक लता प्राप्त होती है। जिसके रस को निकालकर अन्य वनस्पतियों के साथ मिश्रित करके काढा तैयार किया जाता है। वैदिक साहित्य में सोम को दिव्य लता तथा पश्चिमी देशों में अयाहुआस्का को दिव्य लता कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में सोम को यज्ञानुष्ठान धार्मिक कृत्यों में प्रयोग किया जाता है। उसी प्रकार से पश्चिमी संस्कृति में अयाहुआस्का को धार्मिक स्थलों (चर्चों) में उपयोग में लाया जाता है। इन्हीं सोम को महौषधि कहा गया है, उसी प्रकार अयाहुआस्का भी औषधि के रूप में प्रयुक्त की जाती है। इन्हीं पर्याप्त तथ्यों को समक्ष रखते हुए सांस्कृतिक गतिविधियों से इस तथ्य को प्रमाणित करने की कोशिश की गई है। यद्यपि सोमरस तथा अयाहुआस्का पर पृथक्–पृथक् दृष्टिकोणों से अनेकविध शोध कार्य किए गए हैं। तथापि दोनों को समग्र रूप से केन्द्र में रखकर कोई शोध–कार्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। अतः सांस्कृतिक दृष्टि से ऐसा कोई शोध–कार्य नहीं हुआ है जो सोम एवं अयाहुआस्का के सांस्कृतिक अध्ययन का आकलन करता है। प्रस्तुत शोध–भविष्य में होने वाले शोध–कार्यों के आधार रूप में अनेक नवीन

सम्भावनाओं के लिए सहायक सिद्ध होगा। इस शोध–कार्य में मुख्यतः विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध–प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। शोध–कार्य का क्षेत्र मुख्यतः भारतीय परिप्रेक्ष्य ऋग्वेद के नवम मण्डल (सायण भाष्य) तथा कुछ विशिष्ट सोम सम्बन्धी मन्त्रों का ग्रहण किया गया है। आयुर्वेद का विषय–विवेचन सुश्रुत संहिता तक ही सीमित किया गया है। इसके अतिरिक्त आंग्ल साहित्य में Dennis J. Mekenna की पुस्तक Ayahuasca : An Ethnapharmacologic History तथा Kenneth William Tupper की पुस्तक Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy महत्वपूर्ण ग्रन्थों तक सीमित किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। **प्रथम अध्याय** में सोम को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मणग्रन्थ तथा उपनिषद् में सामान्य परिचय के रूप में वर्णित किया गया है। विषय सामग्री अधिक होने से उपर्युक्त ग्रन्थों में सोम के विशिष्ट (महत्वपूर्ण) अंशों (मन्त्रस्थल) को ही ग्रहण किया है। **द्वितीय अध्याय** में आंग्ल साहित्य में वर्णित अयाहुआस्का का सामान्य परिचय दिया गया है। **तृतीय अध्याय** में सोम का ऋग्वेद तथा आयुर्वेद में स्वरूप तथा विशेषताओं को स्पष्ट किया है। आयुर्वेद से केवल सुश्रुत संहिता को आधार ग्रन्थ बनाया गया है। इसके साथ ही ऋग्वैदिक सोम तथा आयुवैदिक सोम में भिन्नता को दर्शाया गया है। इसके अनन्तर आध्यात्मिक, आधिभौतिक आधिदैविक सोम को स्पष्ट किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में अयाहुआस्का का स्वरूप विशदरूप से स्पष्ट किया गया है तथा विशेषताओं में मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक तथा औषध गुण पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय में सोम तथा अयाहुआस्का का सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्व को सुस्पष्ट किया है। इस अध्याय में सोम तथा अयाहुआस्का के राजनैतिक, धार्मिक,

आर्थिक, सामाजिक उपयोगों पर दृष्टिपात किया गया है। सोमक्रय सोमाभिषवण प्रक्रियाओं को भी वर्णित किया गया है।

उपसंहार में सोम तथा अयाहुआस्का का साम्य–वैषम्य तथा आधुनिक वैज्ञानिकों के मत में सोम क्या है? सोमलता क्या अयाहुआस्का ही तो नहीं? सम्पूर्ण शोध–प्रबन्ध का सिंहावलोकन उपसंहार में दिया गया है। अन्त में सहायक ग्रन्थ सूची भी दी गई है।

प्रथम अध्याय

वैदिक साहित्य में सोम की अवधारणा

प्रथम अध्याय
वैदिक साहित्य में सोम की अवधारणा

प्राचीन भारतीय चिन्तन परम्परा के अमूल्य निधि वेद, विश्व साहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। वेद भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आधारभूत स्रोत हैं। सम्पूर्ण भारतीय विधाएँ (काव्यसृजन, नाट्य, सूत्रगन्थ) वेदों से ही विकसित हुई हैं। वेद न केवल भारतीय परम्परा एवं सांस्कृतिक विधाओं के स्रोत हैं बल्कि यहाँ के निवासियों की जीवनशैली का भी प्रतिनिधित्व करतें हैं। भारतीय समाज का वैयक्तिक जीवन, सामाजिक–व्यवस्था तथा राष्ट्रिय संगठन वेदों की दृढ़ आधारशिला पर अवलम्बित है। वेदों का शाश्वत निर्भ्रान्त ज्ञान मानव–मात्र के लिए उपादेय है। इसके साथ ही वेदों में अनेक देवी देवताओं, दिव्य शक्तियों, विज्ञान, औषध आदि के भी दर्शन होते हैं। जिनकी उपादेयता मानव जीवन में स्वयंसिद्ध है। इसी श्रृंखला में सोम भी अनेक गुणों से समन्वित होकर वैदिक साहित्य में देदीप्यमान हो रहा है।

ऋग्वेद में वर्णित सोम की स्तुति से सोम की महत्ता स्पष्ट है। वैदिक संहिताओं के लगभग दशमांश में सोम का वर्णन किया गया है। इन्द्र तथा अग्नि के पश्चात् सोम को तृतीय स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद का सम्पूर्ण नवम मण्डल जिसमें 114 सूक्त हैं, सोम का ही गुणगान कर रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य मण्डलों के छः सूक्तों में सोम की स्तुति की गई है। यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद में भी सोमविषयक लगभग 40 मन्त्र हैं।

1.1 सोम का लक्षण तथा उत्पत्ति स्थान :–

सोम शब्द सु प्रसवे धातु से मन् प्रत्यय लगने से सिद्ध होता है।[1] सोम का अभिप्राय सोमलता, सोमरस, सोमाधिष्ठातृ देवता तथा सोम (चन्द्रमा) से है।

[1] उ. अर्तिस्तुसुहस्रिति 1.139

अमरकोष में सोम के बीस पर्यायवाची दिए गए हैं, वही पर्याय चन्द्रमा के भी हैं।[1] परन्तु अमरकोष में सोमलता के जो वत्सादिनी, छिन्न, रुहा, गुडुची, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी पर्यायवाची मिलते हैं। ये गिलोय के पर्यायवाची हैं, सोमलता के नहीं।[2] चरक तथा सुश्रुत संहिता में सोमलता को चन्द्रमा की कलाओं के साथ बढ़ने तथा घटने वाली वनस्पति कहा गया है।[3] यही कारण है कि सोम चन्द्रमा का वाचक बन गया। सोम को औषधियों का राजा एवं सुपर्ण कहा गया है।[4] यह पर्वत की चोटी पर पाया जाता है, और यह भी उल्लेख मिलता है कि यह पर्वत पर उत्पन्न होता है।[5]

सोमवल्ली का उत्पत्ति स्थान मौञ्जवान् (हिमालय का एक भाग) शर्यणावत, सुषोमा, आजीकीया तथा सिन्धु को बताया गया है। मुञ्जवान की तुलना पाकिस्तान में स्थित हिन्दुकुश पर्वत श्रृंखला से की जाती है। जो काबुल तक विस्तृत है। यास्कमतानुसार यह मुञ्जवान पर्वत पर उत्पन्न होने के कारण मौञ्जवत कहा गया है।[6] सायणभाष्य में स्पष्ट है कि मुञ्जवान पर्वत पर उत्पन्न होने से सोम अत्युत्तम है।[7] सोम को पृथ्वीस्थानीय तथा द्युस्थानीय रूप में भी वर्णित किया गया है। सोम बादल के द्वारा आकाश से पृथ्वी पर लाया जाता है। सोम को पर्वतों से ढूंढकर नीचे लाया जाता है।[8] पर्वतों पर उत्पन्न होने के कारण इसे पर्वतावृध[9] और गिरिष्ठा[10] भी कहा जाता है।

---

1 अ.को. 1.3

2 *वही* 2.3.83

3 सोमनामौषधिराजः पञ्चदशपर्णः स सोम इव हीर्यते वर्द्धते च। चरक संहिता चि. 1.46

4 सोम ओषधिनामधि राजा गो. ब्रा. 1.171

5 (i) श्रृंगे शिशानो अर्षति, ऋ. 9.5.21
(ii) परिसुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोम ऋ. 9.85.10

6 मौञ्जवतः मूंजवति जातः। मूंजवान पर्वतो मुञ्जवान् नि. 10.4

7 मुजवति पर्वते जातौ मौजवतः, तस्य तत्र ह्युत्तमः सोमो जायते। सा.भा. ऋ. 10.34.1

8 ऋ. 9.18.1

9 ऋ. 9.71.4

10 ऋ. 9.62.4

1.2 ऋग्वेद में सोम स्वरूप :–

वस्तुतः ऋग्वेद में सोम का द्विविध रूप मिलता है। प्रथम पार्थिव लता के रूप में द्वितीय देवता के रूप में। ब्राह्मणग्रन्थों में भी स्पष्ट कहा गया है– **सोमोऽन्तरिक्षे तिष्ठति खलु सोमो वै राजागन्धर्वेष्वासीत्।**[1] शब्दकल्पद्रुम में कहा गया है– **रसायनं पीतवांस्तुनिवाते तन्मनाः शुचिः।**[2]

ऋग्वेद में लगभग 1000 बार सोम शब्द का प्रयोग किया गया है। सोम को हरे रंगवाला[3] तथा बभ्रु वर्ण[4] से युक्त कहा गया है। सोम को अनेक रूपों वाला बताया गया है। सोम के बभ्रु वर्ण को सम्भवतः अधिक महत्त्व दिया गया है क्योंकि यज्ञ हेतु सोम के बदले बभ्रु वर्ण की गाय को दिया जाता है। सोम का प्रयोग यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता था।[5] इन्द्र को ही सोमपान का उचित पात्र दर्शाया गया है।[6] शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु इन्द्र सोमपान करता था।[7] सोम द्युस्थानीय है इसी कारण द्युलोक से कुछ अंश पर्वत पर गिरे जिससे वहाँ पर सोमलताएँ उत्पन्न हो गयीं।[8] सोम के द्वारा ही प्रजा का पालन–पोषण होता है। चन्द्रमा महीनों के द्वारा और सोम ओषधियों के द्वारा प्रजा का परिपालन करते हैं।[9]

अधिकांश रूप में सोम का महिमागान वनस्पति के रूप में हुआ है। सोम में एक प्रकार की भैषज्य शक्ति है। जिसके कारण यह मानव जाति को आरोग्य एवं दीर्घायु प्रदान करता है।[10] सोम मनुष्य का अंगरक्षक है तथा समस्त अंगों में व्याप्त

---

1 ऐ. ब्रा. 1.27
2 शब्द. क., पृ.सं. 416
3 ऋ. 9.2.6, 9.103.2
4 ऋ. 9.31.5, 9.33.2
5 त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः। ऋ. 9.96.5
6 एष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य। ऋ. 2.14.2
7 इन्द्र हिमत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोम पर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ऋ. 1.9.1
8 दिवि ते नाभा परमः यः आददे। ऋ. 9.80.4
9 19.26.2 ऋक्।
10 (i) प्रण आयुर्जीवसे सोमतारी। ऋ. 8.48.4
(ii) सोम राजन् प्रण आयूंसतारीः। ऋ. 8.48.7
(iii) त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे। प्रिय स्तोत्रो वनस्पति ऋ. 1.91.6

है।[1] सोम को वाचस्पति तथा वाचो अग्रिम या अग्रे वाचाम् कहा गया है।[2] सोम रस आस्वादन में मधु, सुगन्धियुक्त तथा मदकारी होता है।[3] सोम रस को कूटकर भेड़ो से निर्मित ऊन के वस्त्र में पवित्र किया जाता है।[4] दश युवतियाँ सोम की शुद्धि करती हैं।[5] सोम ने सारे वीरुधों को उत्पन्न किया।[6]

सोम रस श्रेष्ठ बलदायी, वीर्यवर्धक है, इसके पीने के लिए प्रतिदिन इसकी स्तुति की जाती है। इसे मन का प्रिय पेय कहा जाता है।[7] यह यज्ञ की आत्मा है।[8] सोम को ऋषि कहा जाता है।[9] सोम देवों में ब्रह्म, ब्राह्मणों में ऋषि तथा मनुष्यों में सम्राट् है।[10] सोमपान से योद्धा विशेष बल का अनुभव करता है तथा रणस्थल में विजयी होता है।[11]

सोम छः ऋतुओं में रहता है।[12] सोम ने ओषधी, वृष्टि, गाएँ तथा अन्तरिक्ष का विस्तार कर अन्धकार को नष्ट किया।[13] सोम अन्धकार से युद्ध करता है तथा दिव्य प्रकाश उत्पन्न करता है।[14]

---

1 त्वं हि नस्तन्वं सोम गोपाः। ऋ. 10, 25, 11

2 (i) वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा, ऋ. 9.101.5
(ii) पवस्वे वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरुतिभिः। ऋ. 9.62.25

3 (i) स्वादिष्ठया मदिष्ठया सोमधारया ऋ. 9.1.1
(ii) सहस्रधारः सुरभिः ऋ. 9.97.19

4 अव्ययेवारे अर्षति ऋ. 9.103.3

5 एतमुत्यं दश सिप्रो मृजन्ति सप्त धीतयः। स्वायुधंमदिन्तममृ ऋ. 9.15.8

6 त्वमिमां ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वंगाः। ऋ. 1.91.22

7 (i) स ना च सोम जेषि च पवमान महिश्रवः। ऋ. 9.4.1
(ii) वर्धन्तोऽस्य वीर्यम् ऋ. 9.8.1
(iii) नित्यस्तोत्रः ऋ. 9.12.7
(iv) मनश्चित् मनस्पति ऋ. 9.11.8

8 आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः। ऋ. 9.2.10

9 ऋषिर्विप्रः काव्येन ऋ. 8.79.1

10 ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषि विप्राणां महिषो नृणानाम् ऋ. 9.96.9

11 अस्येदिन्द्री मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिहनते शूरो मघा ना मंहते। ऋ. 9.1.10

12 इन्दुभिः षट् युक्ताम् ऋ. 1.23.15

13 त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजयनस्त्वंगा। ऋ. 1.91.22

14 पवमान ऋतं ब्रहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत्। कृष्णा तमांसि जघनत। ऋ. 9.66.24

ऋग्वेद में कहा गया है कि सोम सूर्य के सदृश अपनी किरणों से पृथिवी और स्वर्ग को आविष्ट कर लेता है।[1] सोम ने जब जन्म लिया तो अपने माता–पिता (घावापृथिवी) को प्रदीप्त कर दिया।[2] सोम दिव्य महौषधी है। सोम को अमरत्व प्रदान करने वाला कहा गया है।[3] यही कारण है कि देवता सोम पीने के लिए उद्यत रहते हैं।[4] सोम अमर है, इसलिए देवताओं ने अमरता के लिए इसका पान किया।[5] सोम–मद में ही इन्द्र असंख्य शत्रुओं को विनष्ट कर देता है।[6] इन्द्र का प्रिय–प्रेय होने के कारण सोम को इन्द्र की आत्मा कहा गया है।[7] सोम तथा इन्द्र परस्पर मित्र हैं।[8]

वृत्र वध करने में सोम ही इन्द्र की सहायता करता है।[9] इन्द्र के बल को बढ़ाने वाला सोम ही है। कुछ स्थलों पर सोम को इन्द्र–वज्र की संज्ञा मिली है।[10] सोम को विवेकयुक्त बताया गया है। सोम विवेक के साथ समस्त प्राणियों का निरीक्षण करता है, इसीलिए वह सहस्रचक्षु युक्त है।[11] सोम ने ही पितरों को यज्ञ इत्यादि कृत्यों में प्रेरित किया।[12] एक मन्त्र में कहा गया है कि सोम और पितर साथ–साथ ही रहते हैं।[13] इसी कारणवश पितरों को सोमप्रिय कहा गया है।[14]

---

1 स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी प्रण। उषा सूर्यो न रश्मिभिः ऋ. 9.41.5

2 स सुनुमांतरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्। महान्मही ऋतावृधा ऋ. 9.9.3

3 इममिन्द्रं सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्

4 (i) पिबन्त्यस्य विश्वे देवासः। ऋ. 9.109.15
(ii) दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः। ऋ. 9.85.2

5 त्वां देवानो अमृताय कं पपुः। ऋ. 9.10

6 अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिघ्नते। ऋ. 9.1.10

7 अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तस आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः। ऋ. 9.85.3

8 त्वं नो वृत्रहन्तमेन्द्रस्येन्दो शिवः सखा। ऋ. 10.25.9

9 स पवस्व य आवियेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। ऋ. 9.61.22

10 (i) इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः। वहीं 9.72.7
(ii) वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता। वहीं 9.111.3

11 (i) इन्दुं सहस्रचक्षसम्। वहीं 9.60.1
(ii) हर्यतं भूरिचक्षसम्। वहीं 9.26.5

12 त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमानः धीरा। वहीं 9.96.11

13 स पितृभ्यः सोमवद्भ्यः। षटकपालं पुरोडाशं निर्वपति सोमाय वा पितृमते श. ब्रा. 2.1.6.4

14 अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम। ऋ. 10.14.6

सोम की गणना अन्न के अन्तर्गत भी की गई है। सोम को देवताओं का अन्न कहा गया है।[1] सोम रस को मुख्यरुपेण इन्द्र का अन्न कहा गया है।[2] सोमरस के प्रवाह को अश्व सदृश क्षिप्र गति वाला बताया गया है। यह तीव्र गति वाला होता है।[3]

सोमपान करने से नशा होता है, ऐसा कहना सर्वथा अनुचित है क्योंकि सोमरस सुरा नहीं है, इसको मेधावी लोग पीते हैं।[4] सोम पीने से उत्तम हृदय, सुमति, पवित्रता, वीर्य की वृद्धि होती है। सोम की दिव्य शक्ति का प्रभाव इन्द्र के शत्रु–समूह को विनष्ट करने में सहायक सिद्ध होता है।[5] इसके कारण ही इन्द्र प्रसन्नतापूर्वक सभी कार्यों का निष्पादन कर लेता है।[6]

1.3 यजुर्वेद में सोम स्वरूप :–

यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रमुख ग्रन्थ है, कर्मकाण्ड का सर्वाधिक विवेचन यजुर्वेद में उपलब्ध होता है। यद्यपि ऋग्वेद में भी कर्मकाण्ड का वर्णन प्राप्त होता है, परंतु यजुर्वेद में इसका एक नया आकार मिलता है। तत्कालीन समाज समृद्ध था यह भी एक कारण रहा कि कर्मकाण्ड का प्रचलन समाज में बढ़ा। उस समय के सांस्कृतिक वातावरण में कर्मकाण्ड का महत्त्व अत्यधिक था। ऋग्वेद में कर्मकाण्ड मुख्यरूप से ईश्वर की प्रशंसा के लिए है, परन्तु यजुर्वेद में ऐसा नहीं है, इसमें स्तुति पर बल न देकर कर्मकाण्ड पर बल दिया गया है। यजुर्वेद में अन्य सभी प्रक्रियाएँ ऋग्वेद की तरह ग्रहण की गई हैं। कर्मकाण्ड में सोमरस का अधिक

---

1 अन्नं वै सोमः। श. ब्रा. 3.9.1.8
एतत् वै देवानां परमं अन्नं यत्सोमः। तै. ब्रा. 1.3.3.2
एष वै सोमो राजा देवानां अन्नम्। श. ब्रा. 1.6.45
औषधिभ्योऽन्नम्। तै. उप. 6.41.3

2 ते अन्नम्। ऋ. 6.41.3

3 एमाशुमाशवे भर यज्ञाश्रियं नृमादनम्। *वही,* 1.4.7

4 अनु विप्रा अमादिषु। ऋ. 9.8.4

5 यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः। य ओजो दातमो मदः। *वही,* 8.92.17

6 स गोरश्व विप्रजंमन्दानः सोम्येभ्यः। पुरंनशूरदर्षसि। ऋ. 8.32.5

प्रयोग होने के कारण देवता के रूप में इसका महत्त्व कम होता चला गया। यही कारण रहा है कि सोम की अन्य देवों की अपेक्षा आकृति नहीं बन सकी, बल्कि यह सोमलता के रूप में अधिक प्रतिष्ठित हुआ।

यजुर्वेद में सोम को वनस्पति के रूप में वर्णित किया गया है। यहाँ पर सोम के रस को अंशु कहा गया है। इसके अतिरिक्त पुरु का प्रयोग भी मन्त्रों में मिलता है।[1] यजुर्वेद में सोम सुगन्ध को गन्ध कहा गया है। ऋग्वेद में सम्पूर्ण सोम रस को सुरभि के नाम से सम्बोधित किया गया है। कहीं पर सोम को इन्दु भी कहा गया है। एकवचन में सोम का प्रयोग पौधे तथा रस के रूप में है तथा बहुवचन में सोम के रस की बूंदों के रूप में ग्रहण किया गया है।[2] सोम की बूंदों को द्रप्स भी कहा गया है। यजमान सोम के मीठे रस को द्रप्सो मधुमान् कहता है तथा इन्द्र के लिए अर्पित करता है।[3] एक मन्त्र में कहा गया है कि हे सोम! आपका तना संयुक्त हो जाए तथा सोम की गन्ध हमारी रक्षा करे।[4] कुछ स्थलों पर तना भाग को सोम माना है, सम्भवतः इसीलिए प्रस्तुत मन्त्रांश में तना भाग से जुड़ने की प्रार्थना की गई है।

चमकीले होने से सोम को शुक्र भी कहा जाता है। शुक्र का प्रयोग शुद्ध सोम के लिए होता है। इसके पीने वाले को शुक्रपा कहा जाता है।[5] चन्द्र से तात्पर्य चमकीले सोने से है, स्वर्ण देकर भी सोम खरीदा जाता था।[6] यजुर्वेद में

---

1 (i) अशुंना ते अंशुः पृच्यतां परुषा पुरु। वाज.स. 20, 27
(ii) अंशुना ते अंशुः पृच्यता। तै. सं. 1.2.6.1

2 (i) बृहस्पति सुतस्य त इन्दो इन्द्रियावतः पानीवन्तं ग्रहं ग्रहणाभ्याग्ना इ पत्नी वा सजूर्देवेन त्वष्ट्रा सोम पिब स्वाहा तै.स. 1.4.27.1
(ii) उपयामगृहीतोसि वायवे त्वेन्द्रवायू इमे सुताः।
उप प्रयोभिरागतमिन्दवो वामुशन्ति हि। वही 1.4.4.1

3 यस्ते द्रप्सो मधुमान् इन्द्रियावान् सवाहावृतः पुनरप्येति देवान्।
दिवः पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्स्वाहावृतमिन्द्राय तं जुहोमि। *वही,* 3.1.10.2

4 अशुंना अंशु पृच्यतां परुषा परुर्गन्धस्ते काममबतु।। तै.सं. 1.2.5.6.1

5 शुक्रं शुक्रपेभ्यः तै. सं. 1.3.13.2

6 शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेण। वा. सं. 4.26

सोम का वर्ण हरित् तथा बभ्रु बताया गया है, यहाँ पर अरुण तथा अरुष वर्ण का प्रयोग नहीं मिलता है। यजुर्वेद के एक मन्त्र में सोम को हरि कहा गया जो इन्द्र के घोड़े का पर्यायवाची है।[1] सोम खरीदते समय यजमान पिनाक्षी एवं अरुणा वर्ण की गौ को सोमविक्रेता को प्रदान करता है।[2] इससे स्पष्ट होता है कि सोम बभ्रु वर्ण का होता है।

सोम का जन्म पार्थिव लता के रूप में हुआ है, वरुण ने सोम को पर्वत पर रख दिया था।[3] सोम रस को स्वधु, तीव्र तथा चारु कहा गया है। सौत्रामणि कर्मकाण्ड में सोम तथा सुरा को मिलाकर प्रयोग किया जाता है। यजमान कहता है कि मैंने मीठे (सुरा) में मीठे (सोम) को मिला दिया, शक्तिशाली को शक्तिशाली से, अमरता को अमरता से मिला दिया।[4] सोम को मन्दितम भी कहा गया है।[5] जो नशे के लिए पान किया जाता है।[6] सोमपान यदि मनुष्य करता है तो भक्ष यदि देवता ग्रहण करे तो अन्धस् कहा जाता है।[7] सोम मीठा पेय है इसके लिए मधुमान, माधव और माधवऊर्मि शब्दों का भी उल्लेख मिलता है।[8]

सोम को उद्व्यास (श्रेष्ठ भोजन) भी कहा गया है।[9] उद्व्यास रस रूप में पानी का श्रेष्ठ तत्त्व है।[10] सोम शक्ति प्रदान करने वाला है, इसलिए सोम को वाजिन् भी कहा गया है।[11] वाजिन् शब्द के लिए ऊर्जस्वन्, ऊर्जन, इन्द्रयवन,

---

1 हरिरसि हारियोजनो। तै.सं. 1.4.28.1

2 अरुणया पिनाक्ष्या क्रीणात्येतदेव सोमस्य रूपं स्वयैनैवं देवतया क्रीणाति तै. सं. 6.1.6.7

3 वरुणा विक्ष्वग्निं दिवि सूर्यमदधात् सोमभद्रौ। तै. सं. 1.2.8.2

4 स्वादवीं त्वा स्वादुना तीव्रां तीव्रेणामृताममृतेन सृजामि सं सोमेन। तै. सं. 1.8.21.1.

5 आप्यायस्व मन्दितम सोम विश्वाभिरुतिभिः। वहीं 1.4.32.1

6 चारुर्मदाय पीतय। *वही,* 3.3.11.1

7 (i) भक्षेहि माऽऽविश दीर्घायुत्वाय *वही,* 3.2.5.1
(ii) उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिष्वे पूर्वपेयम्। वही, 1.4.4.1

8 (i) यस्ते द्रप्सो मधुमाँ इन्द्रियावान्त्स्वाहावृतः पुनरप्येति देवान। *वही,* 3.1.10.2
(ii) आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मि त्वं राजाऽसि प्रदिवः सुतानाम्। *वही,* 1.4.19.1

9 अपां रसमुद्वयसम् सूर्यरश्मिं समामृतम्। तै. सं. 1.7.12.2

10 अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाभ्युमभेष ते योनिरिन्द्राय त्वा।। तै. सं.

11 वाचस्पतयेपवस्व वाजिन्वृषा। तै. सं. 1.4.2.1

वीरयवन पदों का प्रयोग किया गया है।[1] सोम धन, समृद्धि और यश को बढ़ाता है।[2] सोम आयु को बढ़ाने वाला है।[3] सोम का वर्णन औषधिरूप में भी किया गया है जो स्वास्थ्यवर्धक है। यजमान प्रार्थना करता है कि हे सोम! आप मेरे अन्दर प्रविष्ट होकर दीर्घायु, समृद्धि, स्वास्थ्य तथा पुत्र, पौत्रादि, सम्पत्ति प्रदान करें।[4]

सोम याचनाकर्त्ता को बुद्धि तथा सम्पत्ति प्रदान करता है।[5] सोमपान करने से शरीर में ऊर्जा का आधान होता है।[6] यजुर्वेद में सोम अमरता प्रदान करने वाला तत्त्व कहा गया है, इसे अमृत नाम भी दिया गया है।[7] अमृत ही मनुष्य को अमर बनाता है। जो भी वस्तु कर्मकाण्ड में प्रयोग की जाती है उसको अमर तथा दैविक रूप प्रदान किया जाता है, उसे सोम की पत्नी भी कहा जाता है।[8] सौत्रामणि कर्मकाण्ड में सुरा को अमृत कहा गया है क्योंकि वह सोम के साथ मिलाया जाता है।[9] जिस स्वर्ण से सोम खरीदते थे उसे भी अमृत कहा गया है।

तैतिरीय संहिता में सोम का औषधरुप प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। प्राण, व्यान के लिए सोम का प्रयोग किया जाता है।[10] सोमपान से हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। प्राण तथा व्यान शुद्ध हो जाते हैं।

ऋग्वेद के नवम मण्डल में पवमान सोम की स्तुति की गई है, परन्तु

---

1 (i) सोमं ते क्रीणाम्यूर्जस्वन्तं पयस्वन्तं वीर्यावन्तमभिमातिषाहम्। *वही,* 1.2.7.1
(ii) तेषां विशिप्रियाणामिषमूर्जं समग्रभीमेष ते योनिरिन्द्राय त्वा। वही, 1.7.1, 2.2
(iii) यस्ते द्रप्सो मधुमाँ इन्द्रियावान्त्स्वाहाकृतः पुनरप्येति देवान्। वही, 31.10.2

2 भक्षेहि माऽऽविश वर्चसे। तै. सं. 3.2.5.1

3 भक्षेहि माऽऽविश दीर्घायुत्वाय। तै. सं. 3.2.5.1

4 भक्षेहि माऽऽविश दीर्घायुत्वाय शंतनुत्वाय रायस्पोषाय वर्चसे। तै. सं. 3.2.51

5 आप्यायस्व सखीन्सन्या मेधया। *वही,* 1.2.11.1

6 हिन्व मे गात्रा। तै. सं. 3.2.5.3

7 अपाम सोमोऽमृता भूमदशर्म ज्योतिरविदाम् देवान्।
किमस्मान्कृण्वदरातिः किमुधूर्तिरमृत मर्त्यस्य। तै. सं. 3.2.5.4

8 अमृतस्य पत्नीस्ता देवी देवत्रेमं यज्ञ धत्तोपहूताः। तै. सं. 1.4.1.1

9 अमृताममृतेन सृजामि सं सोमेन। तै. सं. 1.8.21.1

10 (i) प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा। तै. सं. 1.2.6.1
(ii) हृदे त्वा मनसे त्वा। तै. सं. 1.3.13.1

कर्मकाण्ड का विवेचन नहीं मिलता है। कर्मकाण्ड का विस्तृत स्वरूप यजुर्वेद में ही दृष्टिगोचर होता है। ऋग्वेद की अपेक्षा यजुर्वेद में ही सोम–अभिषवण, सोमपान, सोम से यज्ञानुष्ठान, देवों को अर्पित करना, यजमान शुद्धि इत्यादि पद्धतियों से प्रवेश करते हुए 'यज्ञ' का सम्पन्न होना प्रतीत होता है।

सोम अभिषवण पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर अमावस्या तक किया जाता था। यजुर्वेद में तीन बार सोम रस को निकालने का विधान मिलता है। प्रातःकालीन तथा मध्याह्न का कर्मकाण्ड शुद्ध सोम से किया जाता है। तृतीयसवन में कर्मकाण्ड ऋजीष (शेष) से किया जाता है।[1] ऋग्वेद की भान्ति ही यजुर्वेद में भी सोम को शुद्ध करने की पद्धति में समानता है। जिस छननी का प्रयोग किया जाता है उसे पवित्र कहते हैं।[2] जिस सोम को गभस्ति से शुद्ध किया जाता है, उसे गभस्तिपूत कहते हैं[3], इसके अतिरिक्त जो पानी से धोया जाता है, उसे अप्सुधौत कहा जाता है।[4] वस्तुतः यजुर्वेद में कर्मकाण्ड के जटिल स्वरूप को निरुपित किया गया है।

कर्मकाण्ड पद्धति में यदि सोम–अभाव होता है तो इसके स्थान पर पूतीका का प्रयोग किया जाता है।[5] जो कि सायण के अनुसार सोम की तरह का ही पौधा होता है।[6] एक मन्त्र में कहा गया है कि हे सोम! आप हमारे मित्र बन जाओ और हमें समृद्ध करो।[7]

सोम को दुग्धवर्धक तथा गायों का रक्षक के रूप में भी वर्णित किया गया

---

1 गायत्री आ पद्भ्यां द्वे सवने समगृह्णान्मुखेनैकं यन्मुखेन समगृह्णात्तदधयत्तस्माद् द्वे सवने शुक्रवतो प्रातः सवनं च माध्यंदिनं च तस्मात् तृतीयसवन ऋजीषभभिषुण्वन्ति धीतमिव हि मन्यन्ते। तै. सं. 6.1.6.4

2 अध्वर्यो परि यस्ते पवित्रात्स्वाहाकृतमिन्द्राय तं जुहोमि। *वही,* 3.1.10.1

3 गभस्तिपूतो देवो देवानां पवित्रमसि। *वही,* 1.4.2.1

4 अप्सु धौतस्य सोम देव ते नृभिः सुतस्य। *वही,* 3.2.57

5 यत्पूतीकेर्वा पर्णबल्केर्वातञ्चयात् सौम्यम्। तै. सं. 2.5.3

6 सोमवल्ली समानायाः लतायाः खण्डाः पूतीकाः। सा. भा. तै. सं. 2.5.3

7 आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेरंशुभिः।
भवनः सप्रथस्तमः सखा व्रधे। वाज. सं. 12.115, ऋ. 1.91.17

है, कहा गया है– तुम इसे सूंघो और हमें दूध दो।[1] सोम क्रय के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु गौ होती है। सोमक्रयणी गौ को स्वर्ण से अधिक महत्वपूर्ण बताया गया है तथा उस गाय को देवी की संज्ञा दी गई है।[2] सोमक्रयणी गौ को सोमसखा कहा गया है।[3] सोमक्रयणी गौ का रंग लाल भूरा होता है।[4] यह गाय एक वर्ष की होनी चाहिए।

वाजसनेयी संहिता में सोम के स्वन, अंघारी, बम्भारे, हस्त, सुहस्त, कृशनु भ्रज ये सात संरक्षक बताए गए हैं।[5] तत्कालीन समाज में सोम एक अमूल्य वस्तु थी, जिसके चोरी होने का भय दर्शाया गया है।[6] तैत्तिरीय संहिता में कहा गया है कि सोम की रक्षा वस्त्र में बाँधकर की जाती है।[7]

पवित्र किए गए सोम में दुग्ध, दधि तथा अनाज मिश्रित किया जाता है। मुख्यरूप से दूध को मिश्रित किया जाता है। इसी कारणवश सोम को दुग्ध भी कहा गया है।[8] सोमरस निकालने पर विष्णु से प्रार्थना की गई है कि विष्णु सोम की रक्षा करे।[9] सोम को एक मन्त्र में अमात्य कहा गया है।[10] यजुर्वेद में देवताओं के द्वारा जिन पात्रों का प्रयोग सोमपान हेतु किया जाता था उनका वर्णन भी प्राप्त होता है। इन्द्र तथा वायु के लिए जिन पात्रों का प्रयोग किया जाता है उन्हें

---

1 आजिघ्र क्लशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।
पुनरुजां निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा
पयस्वती पुनर्मां विशताद्रयिः। वाज. सं. 8.42

2 देवी ह्येषा देवः सोमः। तै. सं. 6.1.7.7

3 सोमसखा पुनरेहि सह रसया। तै. सं. 1.2.4.2

4 अरुणया पिंगाक्ष्या क्रीणात्येतद्वै सोमस्य रुपम्। तै. सं. 6.1.67

5 स्वान भ्राजांधारे बम्भारे हस्त सुहस्त क्रशानवेते वः सोमक्रयणास्तान् रसध्वं मा वो दभन्। वा. सं. 4.27

6 मा त्वा परिपरी विदन्मा त्वा परिपन्थिनो विदन्मा त्वा वृका अघायवो मा गन्धर्वो विश्वावसु दघन्ह्येनो भुत्वा परा पत यजमानस्य नो गृहे। तै. सं. 1.2.9.1 वाज. सं. 4.34

7 वाससोपन ह्यति सर्वदेवत्यं वै वासः सर्वाभिरेवैवं देवताभिः समर्चयति। तै. सं. 6.1.97

8 पयो वै सोमः तै. सं. 3.1.10.2.

9 विष्णुवुरुक्रमेष ते सोमस्तं रक्षस्व तं ते दुश्चक्षा माऽवख्यन्। तै. सं. 3.2.10.1

10 अमात्योऽसि। तै. सं. 1.2.5.1

'ऐन्द्रवायवग्रह' कहा जाता है।[1] मित्र तथा वरुण के पात्रों को मैत्रवरुणग्रह कहा जाता है।[2] अश्विन के लिए प्रयुक्त पात्रों को अश्विनग्रह कहा जाता है।[3] आदित्य के लिए आदित्यग्रह नामक पात्र का प्रयोग होता है[4], सविता देवता के लिए सवितृग्रह नामक पात्र का प्रयोग किया जाता है।[5] उपर्युक्त देवताओं की पत्नियों के लिए जिन पात्रों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें पत्निवृत कहा जाता है।[6]

यजुर्वेद के अनुसार अग्नि, वायु, अश्विनी को प्रातःकाल में सोम दिया जाता है।[7] माध्यन्दिन सवन में इन्द्र तथा मारुत को सोम प्रदान किया जाता है।[8] तृतीयसवन में आदित्य, सविता, विश्वदेव अग्नि देवों के साथ पत्नियों को भी सोम दिया जाता था।[9]

1.4 सामवेद में सोम स्वरूप :–

यद्यपि ऋग्वेद भारतीय साहित्य का मूलग्रन्थ है और उसमें विभिन्न देवताओं के स्तुतिपरक मन्त्र हैं परन्तु किस मन्त्र का कैसे सस्वर पाठ होना चाहिए, मन्त्रों की गति आरोह, अवरोह सामवेद के द्वारा ही ज्ञेय है। सामवेद दो भागों में विभक्त है– पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक। सामवेद की प्रायः समस्त ऋचाएँ ऋग्वेद से लीं गई हैं। इसका प्रमुख कारण यह भी है कि उद्‌गाता पुरोहित के लिए सामवेद का संकलन हुआ क्योंकि यही उद्‌गाता ऋग्वेद के संकलित मन्त्रों को सस्वर पाठों में

---

1 ऐन्द्रवायवाग्रा गृहा गृहयन्ते। तै. सं. 6.4.7.1

2 तै. सं. 6.4.8.3

3 ताभ्यामेतमाश्विनमगृहणवन्तः। तै. सं. 6.4.9.1

4 *वही*, 6.5.6

5 सवितृपात्रेण वैश्वदेवं कलशाद् गृहणाति। तै. सं. 6.5.7.2

6 पात्नीवतमाग्रयणाद् गृह्णाति। तै. सं. 6.5.8.1

7 (i) अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान्वैश्वानरो महिना विश्वशंभूः। 3.1.9.1
(ii) आ वायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार।
उपो ते अन्धो मघमयामि यस्य देवे दधिषे पूर्वपेयम्। *वही*, 1.4.4.1
(iii) प्रातर्युजौ वि मुच्येधामविश्वनावेह गच्छतम्। 1.4.7.1

8 विश्वेदेवा मरुत इन्द्रो अस्मानस्मिन्दितीये सवने न जह्युः। तै. सं. 3.1.9.2

9 उपांशु पात्रेण पात्नीवतमाग्रयणाद् गृह्णाति। वही, 6.5.8.1

उच्चारण करता है। बृहदारण्यकोपनिषद् में साम और ऋक् को पति–पत्नि रूप में वर्णित किया गया है।[1] इसके अतिरिक्त छान्दोग्योपनिषद में कहा गया है– 'ऋचि अध्यूढं साम' अर्थात् साम ऋक् पर ही आधारित है।

पूर्वार्चिक में छः प्रपाठक हैं। जिसमें प्रथम आग्नेयकाण्ड है तथा द्वितीय से चतुर्थ को ऐन्द्र पर्व कहा गया है। पञ्चम में सोम की स्तुति की गई है इसलिए पवमान पर्व कहा जाता है। इस पर्व के समस्त मन्त्र ऋग्वेद के नवम मण्डल से लिए गए हैं।

षष्ठ प्रपाठक में अरण्यगान ऋचाएँ है। उत्तरार्चिक नौ प्रपाठकों में विभक्त है। इसमें अधिकांश मन्त्र पूर्वार्चिक से ही उद्धृत हैं। सामवेद का भारतीय धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है– **"न सामयज्ञो भवति"**।

सामवेद में मन्त्रों को गान पद्धति से प्रयुक्त किया जाता है। सोमरस पीते समय भी मन्त्रों का गान किया जाता है। ऋग्वेद में वर्णित सोम के सदृश सामवेद में भी सोम का गुणगान किया गया है, किन्तु कुछ भागों में किञ्चिद् भिन्नता दिखाई देती है। 75 मन्त्र सामवेद के ही हैं किन्तु ऋग्वेद में यह नहीं मिलते हैं। इन मन्त्रों में सोम को पौधे, रस, भगवान का भोजन तथा इन्द्र का प्रिय पेय के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त सामवेद में सोम को गह्वरेष्ठ, चारु, मधु, मदिरा, मद आदि विशेषणों से आवेष्टित किया गया है।[2]

सोम भूख को शान्त करने वाला तत्व है, इसलिए इसे व्यास, महाव्यास कहा

---

1 सामाहस्मि ऋक् त्वम्, द्यौरहं पृथिवीत्वम।
ताविह सम्भवाव प्रजामाजनयावहै। (बृहदारण्यकोपनिषद्) 6.4.20

2 (i) आ नो वयो वयः शयं महान्तं गृह्वरेष्ठां महान्तं पूर्विणेष्ठाम्।
उग्रं वचो अपावधीः। साम. पूर्वा. 4.1.2

(ii) इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः।
मधोः पपान उप नो गिरः भृगु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः। साम. 3.7.2

(iii) पिबा सुतस्य मतिर्नमधोश्चकानश्चारुर्मदाय। *वही,* 5.7.1

(iv) पिबन्तो मदिरं मधु तत्र भवांसि कृण्वते। साम. 4.1.5

जाता है। एक मन्त्र में भूख शान्ति के लिए सोम से प्रार्थना की गई है।[1] सोम को वाज कहा गया है, खाद्य होने के कारण सोम को पुरुस्पृह का विशेषण दिया गया है, सभी इसका सेवन करना चाहते हैं।[2] सोम को सुत तथा बूंदों को सुताशव कहा गया है। सोम के पौधे तथा रस को अंशु कहा जाता है। सोमलता से जो सोमरस निकाल लिया जाता है उसे सुतास कहते है तथा जो नहीं निकाला जाता उसे सोत्वा कहा गया है। निकाले गए रस को इन्द्र के लिए अर्पित किया जाता है।[3]

सामवेद में वर्णन मिलता है कि सोम शक्तिवर्धक द्रव्य है, इन्द्र सोमपान करके महत्तर कार्य करता है। उसने सोम के मद (बल) में वृत्र तथा दानवों का संहार किया।[4]

इन्द्र सोमपान के लिए सर्वदा उद्यत रहते हैं। सोमपान से इन्द्र कभी तृप्त नहीं होते हैं।[5] जो मनुष्य इन्द्र को सोमपान कराता है, इन्द्र उनके मित्र होते हैं।[6] सामवेद में एक स्थान पर सोम को भगवान के सदृश बताया गया है। सोम तथा पूषा का जन्म साथ–साथ बताया गया है।[7]

सोम तथा चन्द्रमा के विषय में सामवेद में अधिक नहीं कहा गया। सोम का जो स्वरूप ऋग्वेद में पढ़ चुके है वही वर्णन सामवेद में भी प्राप्त होता है। यदि किञ्चित् भिन्नता दृष्टिगोचर होती है तो वह कर्मकाण्ड विषयक ही है।

---

1 आनो वयः शयं महान्तं गह्वरेष्ठां महान्तं पूर्विणेष्ठाम्।
उग्रं वचो अपावधीः। साम. पूर्वा. 4.1.2

2 यदिन्द्र शासो अवृतं च्यावया सदसस्परि।
अस्माकमंशुं पुरुस्पृहं वसव्ये अधि वर्हपः। सा. पू. 3.7.6

3 इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वा। साम. पूर्वा. 2.10.9

4 इन्द्रस्तुराषाष्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न।
बिभेद बलं भृगुर्न ससाहे शत्रून्मदे सोमस्य।। साम. 5.7.3

5 क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्।
स नो वसून्या भरात्। पूर्वा. 2.8.6

6 इन्द्र उक्थेभिर्मदिष्ठो वाजानां च वाजपतिः।
हरिवान्त्सुतानां सखा। साम. पूर्वा. 2.12.4

7 सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता। साम. 2.4.10

1.5 अथर्ववेद में सोम स्वरूप :–

ऋग्, यजु, सामवेद के साथ ही अथर्ववेद में भी सोम का स्वरूप प्राप्त होता है। अथर्ववेद के मन्त्रों का पञ्चामांश ऋग्वेद से उद्धृत है या फिर दोनों के स्रोत समान हैं। अथर्ववेद में सोम के लिए अंशु या अंशुमान् शब्द प्रयुक्त हुआ है।[1] सोम की उत्पत्ति हिमालय पर्वत पर मानी गई है।[2] सोम को चन्द्रमा के रूप में भी स्वीकार किया गया है। सोम से प्रार्थना की गई है कि वह ब्राह्मणों को संज्ञान प्रदान करे जिससे ब्राह्मणगण यथार्थ को समझ सकें।[3] अथर्ववेद में सोम के वर्ण के के विषय में एक मन्त्र ही प्राप्त होता है, जिसमें उसे बभ्रु वर्ण का बताया गया है।[4] है।[4] सोम का अधिक वर्णन वनस्पति के रूप में हुआ है, सोम सभी औषधियों में सर्वोत्कृष्ट औषधि है।[5] सम्भवतः सोम, दिव्य औषधि थी क्योंकि मनुष्य सोम पीसकर पीसकर ही समझते थे कि उन्होंने सोमपान कर लिया, परन्तु जिस सोम को ब्राह्मण तथा देवता जानते थे उसका सेवन सामान्य मनुष्य नहीं कर सकता था।[6] ऋग्वेद की भान्ति अथर्ववेद भी सोम को वनस्पतियों का स्वामी राजा स्वीकार करता है।[7] औषधियों का स्वामी तथा आर्द्र होने के कारण सोम पय प्रदाता, सौम्य तथा रसात्मक है। यज्ञ में प्रमुख स्थान प्राप्त होने के कारण सोम से यजमान प्रार्थना करता है कि आप मुझे अकीर्ति, पाप, शत्रु बल से रक्षित करें।[8]

सोमपान के लिए तीन सवनों का विधान किया गया है। प्रातःसवन में सोम

---

1 (i) सोमस्येव जातवेदो अशुराप्यायतामयम्।
अग्ने विरप्शिनम् मेध्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु। अथर्व. 5.29.13
(ii) उदेनं भगो अग्रमोदुदेन सोमो अंशुमान्। अथर्व. 8.12

2 उदङ्जातौ हिमवतः स प्राच्यां नीयसे जनम्। अथर्व. 5.4.8

3 सोम राजन्त्संज्ञान भावपैभ्यः सुबाह्मणा यतमे त्वोपसीदान्। 11.1.26

4 दक्षा सोमेन बभ्रुणा अथर्व. 5.7.6

5 यथा सोमो औषधीनामुत्तमो हविषां वृतः। अथर्व. 6.15.3

6 सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिंषन्त्योषधिम्। अथर्व. 14.1.3

7 सोमो वीरुधामधिपति स मावतु। अथर्व. 5.24.7.10

8 अदारसृद् भवतु देव सोमास्मिन् यज्ञे मानो विद्दभिमानो अशस्तिर्मानो विवद वृजिना द्वेष्या या। 1. 20.1 (अथर्व.)

अश्विनकुमार को प्रिय तथा माध्यन्दिन सवन में इन्द्र और अग्नि को प्रिय तत्पश्चात् तृतीय सवन में सोम ऋभु देवताओं को प्रिय था।[1] सोमपान में देवताओं में इन्द्र अग्रणी हैं, तथा मनुष्यजाति में ब्राह्मण को प्रथम श्रेणी में रखा गया है।[2] यज्ञानुष्ठान यज्ञानुष्ठान के समय पवित्रीकृत सोम तण्डुल घृत तथा जल[3] वे साथ मिश्रित करके करके उपयोग में लाया जाता था।[4]

सोम को अनेक रूपों वाला कहा गया है। वह शुक्ल प्रतिपदा को एक कलावच्छिन्न रहता है। इस दिन युद्ध–भूमि में जाना शुभ होता है। अतः युद्धपति कहा जाता है।[5] सोम सत्य की रक्षा करने में उद्यत रहता है और असत्य को नष्ट करता है। यह राक्षस तथा असत्य बोलने वाले वृजिन (पापी) को मारता है।[6]

सोम जल के अन्दर समस्त औषधियाँ समाविष्ट होती हैं जो रोगों का निवारण भी करती हैं।[7] सोम अपने उपासको को अहंस् (पाप) से बचाता है। यजमान की रक्षा करता है। जो सत्यभाषी मनुष्य को अपमानित करता है, सोम उसे वज्र से प्रहार कर चकनाचूर कर देता है।[8] सोम असुरों का पराभव करता है और श्रेष्ठ मनुष्यों को शक्ति प्रदान करता है। जिस प्रकार औषधियों में हरिद्रा, देवताओं में वरुण श्रेष्ठ है, उसी प्रकार यागों में सोम और भग सर्वोत्कृष्ट है।[9] अथर्ववेद में एक स्थान पर वर्णन मिलता है कि सोम के बाल काटने (केशवपन) के

---

1 यथा सोमः प्रातः सवने अश्विनोर्भवति प्रियः।
यथा सोमो द्वितीये सवने इन्द्राग्न्योर्भवति प्रियः।
यथा सोमस्तृतीये सवन ऋभूनां भवति प्रियः।।

2 ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो......... स सोमं प्रथमः पपौ स चकाररसं विषम्। अथर्व. 4.6.1

3 सोमो युनक्तु बहुधा पयांस्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा। 5.26.10

4 ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्याशंवस्तण्डुला यज्ञिया इमे। अथर्व. 9.1.18

5 सोमस्यांशो युधांपतेऽनूनो नाम वा असि। अथर्व. 7.86.3

6 (i) तयो यत् सत्यं यतरद् ऋजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् 8.4.12
(ii) न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् 8.4.13

7 अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वा भेषजा। अथर्व. 1.6.2

8 योनः सोम सुशंसितो दुःशसं आदिदेशति– वज्रेणास्य मुखे जहि स संमिष्टो अपायति। अथर्व. 6.6.2

9 श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम्।
सोमो भग इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा

लिए सविता क्षुर लेकर आया, वायु जल लेकर, आदित्य, रुद्र वसुओं ने बालों को गीला किया।[1]

सोम किस दिशा के अधिपति हैं, इस विषय पर कई मन्त्रों में अलग–अलग ढंग से बताया गया है। एक मन्त्र में सोम पश्चिम दिशा के स्वामी हैं, पश्चिम दिशा श्रेष्ठ है।[2] इसके अतिरिक्त सोम उदीची के अधिपति हैं।[3] यदि सम्पूर्ण मन्त्रों का विश्लेषण, परीक्षण किया जाए तो सोम उदीची दिशा के स्वामी ही अधिक संगत प्रतीत होते हैं। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि प्रतीची दिशा के स्वामी वरुण हैं। अथर्ववेद के कई मन्त्रों में सोम को उत्तर दिशा का स्वामी ही बताया गया है।[4] सोम द्यौ में भी विराजमान है। सोम से ही आदित्य बलशाली होता है तथा पृथ्वी महत्वशाली, नक्षत्रों को भी सोम सुखकर बनाता है।[5]

सोमदेवता से राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रार्थना की गयी है। जैसे शत्रुओं का संहार करने में सोम हमें समर्थ करे।[6] मृत्यु से रक्षा के लिए सोम से भी भी प्रार्थना की जाती है।[7]

सोम से प्रार्थना की जाती है कि वह समस्त प्रजा की तथा हमारे शरीर की रक्षा करे। हम शत्रू का आश्रय कभी न लेवें अर्थात् पराधीन न होवें।[8] सोम अपने लोगों की शत्रुगण से रक्षा करता है तथा उन्हें तक्ष्मा ज्वर से भी बचाता है।[9]

---

1. आयमगन्सविता शुरेणोष्ठोन वाय उदकेनेहि–आदित्या रुद्रावसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः अथर्व. 6.68.1–3
2. प्रतीची दिशामियमिदं वरं यस्या सोमो अधिपा मृदिता च। अथर्व. 12.3.9
3. उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये। अथर्ववेद 12.3.58
4. (i) सोमो या विश्वैदेवैरुदीच्या दिशः पातु। अथर्व. 18.3.28
   (ii) उत्तरात त्वा सोमः सं ददातै। अथर्व. 12.3.24
   (iii) उदीची दिक सोमाऽधिपति.......... अथर्व. 3.27.4
5. सोमोदित्यां बलिनः सोमेन पृथिवी मही।
   अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः। 14.1.2
6. ध्रुवोऽच्युत प्रमृणीहि शत्रून्छत्रूयतोऽधरान् पादयस्व 6.88.3
7. सोमो तया वरुणो अश्विना यमः पूजाऽस्मान् परिपातुमृत्योः 19.20.1
8. मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्भारधाम द्विषते सोम राजन। अथर्व 5.3.7
9. 5.21.11, 5.22.1

जिस प्रकार सम्पूर्ण शरीर में सिर सर्वोपरि तथा श्रेष्ठ होता है उसी प्रकार सोम यज्ञ में सर्वप्रमुख तथा श्रेष्ठ होता है।[1] सोम तितउ में पवित्र होता हुआ अनेक अनेक धाराओं में गिरता है, जिस तरह मनुष्य अपनी प्रिय नारी से अनेक मार्गों को खोजता हुआ जा मिलता है। उसी प्रकार सोम द्रोण में जाकर एकत्रित हो जाता है।[2]

सोम के तीन विशेषण भी प्राप्त होते हैं– गवाशिर, यवाशिर, दध्याशिर सोम को गो के दुग्ध के साथ मिश्रित किया जाता है।[3] यव (जौ) के साथ सोम को मिलाया जाता है उसे यवाशिर कहा जाता है।[4] दधि में मिश्रित होने से दध्याशिर भी कहा जाता है।

ऋग्वेद में सोम वल्ली के विषय में विशद जानकारी प्राप्त होती है। ऋग्वेद के मन्त्रकार उस स्थान के बहुत समीप थे जहाँ सोम उत्पन्न होता था। वे क्रतुयागों में उसका प्रयोग करते थे। अथर्ववेद के अधिकांश मन्त्र जिस प्रदेश में लिखे गए वह सोमोत्पादक स्थल से दूर था। दूसरे अथर्ववेदीय कर्मकाण्ड और ऋग्वेदीय कर्मकाण्ड में मौलिक अन्तर है। अथर्ववेदीय कर्मकाण्ड प्रमुखतः अग्नि, आप और मणिबन्धन पर आधारित है जिसमें सोम का स्थान अत्यन्त गौण है। इसीलिए अथर्ववेद के ऋग्वेदेतर मन्त्रों में यदि सोम का स्मरण भी किया गया है तो केवल परम्परा पालन के लिए। अथर्ववेदीय याज्ञिकों का कोई काम सोम के बिना नहीं हो सकता, उसके पास सोम के कई प्रतिनिधि या प्रतीक विद्यमान हैं।[5]

ऋग्वेद का नवम मण्डल सोम की स्तुति से परिपूर्ण है। अन्य सूक्त भी किञ्चित् रूप में सोम वर्णन करते हैं। अथर्ववेद में सोम का उल्लेख ऋग्वेद जितना व्यापक नहीं है। सोम का वर्णन लता तथा देवता के रूप में किया गया

---

1 शिरो यज्ञस्याहं वेद सोमं चास्यां विचक्षणम् 10.10.3

2 मर्य इव योषाः समर्षसे सोमः क्लेश शतयामना पथा 18.5.60

3 उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिर। 20.24.1

4 इममिन्द गवाशिर यवाशिर च न पिवः। 20, 24, 7

5 वैदिक देवता दर्शन, पृ.सं. 349

है। पृथ्वीस्थानीय लता और आकाश स्थानीय चन्द्रमा के रूप में, इन दोनों में समानता भी मिलती है, चन्द्रमा की वृद्धि तथा ह्रास के साथ–साथ पार्थिव लता का बढ़ना तथा घटना। जिस प्रकार लता रूप में वह रस युक्त है, उसी प्रकार चन्द्रमा में वही सौम्य तथा जल का मिश्रण है।

सोम को इन्द्र का सखा तथा धनैश्वर्यों का स्वामी कहा गया है।[1] इन्द्र तथा सोम की एक साथ स्तुति भी की गई है कि वे जागते रहें तथा शत्रुओं पर दृष्टि रखें और हमारी रक्षा करें।[2] पितरों को सोमप्रिय कहा गया है।[3] सोम का पितृमान और पितरों का सोमवान के रूप में उल्लेख मिलता है।[4]

कन्या का प्रथम पति सोम, दूसरा गन्धर्व तीसरा अग्नि और चौथा मनुष्य होता है। सोम कन्या को ग्रहण करके गन्धर्व को तथा गन्धर्व अग्नि को प्रदान करता है, अग्नि मनुष्य को देता है।[5] नारी को सौभाग्य प्रदान करने वाले सोम राजा ही कहे गए हैं।[6]

सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों में सोम को शुभ माना जाता है। प्रातः स्मरणीय देवों में सोम का नाम भी अन्यतम है। व्यापारी व्यापार शुरू करने से पहले लाभ कमाने के लिए सोम का आह्वान करता है।[7]

1.6 ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम स्वरूप :–

संहिताओं के पश्चात् सोम का ब्राह्मण ग्रन्थों में भी उल्लेख मिलता है। वेदों के सदृश ब्राह्मण ग्रन्थों में भी सोम की उत्पत्ति पर्वत पर मानी गयी है।[8] शतपथ

---

1 सोमः पतौ रयीणां सखेन्द्रस्य दिवे दिवे 20, 137, 6
2 प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम्। रक्षोभ्यो............ 8, 4.25
3 अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापमार्द्दत्वपकामस्य कर्त्ता। अथर्व. 2.12.5
4 (i) सोमाय पितृमते स्वधा नमः 18, 4, 72
(ii) पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः 18.4.73
5 सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोददग्नये रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् 14, 1, 3–4
6 सोमो हि राजा सुभगां कृणोति अथर्व. 2.36.3
7 (i) प्रातः सोममुत रुद्रं हवामहे 3.16.1
(ii) येन धनेन प्रणमं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः।
तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः। अथर्ववेद 3.15.6
8 गिरिषु हि सोमः। शत. ब्रा. 3.3.47

ब्राह्मण में सोम बभ्रु वर्ण का बताया गया है।[1] सोम की आहुति सभी देवताओं को दी जाती है, इसीलिए सोम को सर्वदेवता कहा गया है।[2] सोम को मधु कहा गया है, सम्भवतः इसका कारण यह रहा हो कि मधु में सोम के सदृश मिठास, पौष्टिक गुण पाए जाते हैं। सोम मधुमक्खियों का शहद है। शहद निर्मित करने वाली मक्खियाँ उसकी ऋत्विज हैं।[3] कौशितकी ब्राह्मण में सोम को यज्ञ का प्राण कहा गया है। सोम ही प्राण है।[4] सोम और अग्नि को देवों का मुख कहा जाता है।[5] यज्ञ में सोम का प्रयोग पवित्र कर्म माना गया है तथा सोम आहुति को परमाहुति के रूप में वर्णित किया गया है।[6] सोम वीर्य है।[7] सोमपान से बल तथा स्फूर्ति का समावेश होता है, इसी कारणवश सोम को वीर्य कहा गया है। सोम पितरों का देवता है[8] अर्थात् सोम पितृदेव वाला है। सोम को उत्तर दिशा के साथ–साथ दक्षिण दिशा से भी सम्बन्धित दर्शाया गया है।[9] अधिकांशतः सोम का वनस्पति के रूप में वर्णन मिलता है।[10] जिसका अभिषवण करके देवता पीते हैं। ऐतेरेय ब्राह्मण में तैंतीस देवताओं को सोमपा कहा गया है। इसमें आठ वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, प्रजापति, वषटकार को परिगणित किया गया है।[11] इससे स्पष्ट होता है कि सोम का पान दिव्यगुण युक्त तथा महनीय देवों के लिए होता है।

शतपथ ब्राह्मण में ब्राह्मणों को ही सोमपान का अधिकार प्राप्त है।[12] सोम को ब्राह्मण का अन्न बताया गया है। सोम को चन्द्रमा कहा गया है। इसे देवों का

---

1 सोमो वै बभ्रुः। *वही,* 7.2.4.26

2 *वही,* 1.6.3.21

3 *वही,* 3.4.3.14

4 अग्निषोमो वैदेवानां मुखम् गो. ब्रा. 1.20 (उत्तर भाग)

5 प्राणः सोमः शत. 7.3.1.2

6 एषा ह परमाहुतिर्यत्सोमाहुतिः। श. 12.8.2.12

7 श. ब्रा. 3.4.3.11, 3.6.3.17, 3.3.5.2, 3.9.2.26

8 श. 4.4.2.2, 2.4.2.12

9 श. 3.2.3.17

10 श. 5.4.3.16

11 त्रयस्त्रिशद् वै देवाः सोमपाः। अष्टौ वसवऽएकादशरुद्र द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च वषट्कारश्चैते देवाः सोमपाः।। ऐ. ब्रा. 2.18

12 ब्राह्मणानां स (सोमः) भक्ष, श. ब्रा. 12.7.2.2

अन्न भी कहा गया है।[1] तैतिरीय ब्राह्मण में सोम को पशु कहा गया है।[2] इसके अतिरिक्त अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम को प्रत्यक्ष पशु बताया है।[3] सम्भवतः सोम को पशु इसलिए कहा है कि सोम को यज्ञ में गाय के द्रव्यों के साथ मिश्रित कर प्रयोग में लाया जाता है। इसीलिए सोम को त्रिपृष्ठ (दध्याशिर्, गवाशिर्, यवाशिर्) कहा है। सोम को पानी कहा है[4], कहीं पर सोम का रहने का स्थल जल बताया गया है।[5]

सोम को शतपथ ब्राह्मण में विष्णु तथा प्रजापति कहा गया है।[6] सोम को सभी देवताओं से जोड़ा जाता है, क्योंकि सोम सभी देवों के लिए अर्पित किया जाता है, इसलिए सोम ही सर्वदेवता है।[7] सूर्य अग्नि तथा चन्द्रमा सोम है। दिन अग्नि का होता है, रात सोम की। वृद्धि को प्राप्त आधा मास अग्नि का है, घटता हुआ सोम का बताया है।[8] अग्नि का स्वभाव उष्ण, दाहक होता है, सोम शीतल तथा शान्ति प्रदान करने वाला। इनके संयोग से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है। इसी कारण से जगत् को अग्निषोमात्मक कहा है। अग्नि को शुष्कता से युक्त तथा सोम को आर्द्रता युक्त माना जाता है। सोम पवित्र होता है।[9] अग्नि को भी पवमान पवमान कहा जाता है, अग्नि भी सोम के सदृश ऊर्जा अन्न उत्पन्न करता है। वेदों में सोम को वनस्पति का राजा कहा है, शतपथ ब्राह्मण में सोम को वनस्पति कहा गया है।[10] सोम को श्री (समृद्धि) के रूप में भी वर्णित किया गया है।[11]

---

[1] (i) श. 2.4.4.15, (ii) अन्नं सोम ता. ब्रा. 6.6.1, कौ. ब्रा. 9.6

[2] पशवः हि सोमो राजा। तै. ब्रा. 1.4.76

[3] सोम एवैष प्रत्यक्षं यत्पशु। कौ. ब्रा. 12.6

[4] सौम्या ह्यापः। ऐ. ब्रा. 1.7

[5] अपां ह्येषगर्भः देव सोमेष ते लोक इत्यापो ह्येतस्य लोकः। कौ. ब्रा. 8.9

[6] (i) सोमो वै प्रजापतिः। श. ब्रा. 5.1.37, 57.5.26
(ii) यो वै विष्णुः सोमः सः। श. ब्रा. 3.3.4.21, 3.6.3.19

[7] अथ ह सोम उवाच। मामेव वः सर्वेभ्यो जुह्वतु तद् वोऽहं मययामणामीति तस्मात् सोमः सर्वेभ्यो देवेभ्यो जुह्वति तस्माद् आहुः सोमः सर्वा देवता इति। श. ब्रा. 1.6.3.21

[8] श. ब्रा. 1.6.3.24

[9] श. ब्रा. 4.2.2.12, 2.2.3.22

[10] अथ सोमाय वनस्पतये। श. ब्रा. 5.3.3.4

[11] श्री वै सोमः। श. ब्रा. 4.1.3.9

ताण्डय ब्राह्मण में कहा गया है कि सोम अन्य शाक पत्तियों के सदृश ही था, परन्तु बाद में तपस्या करके यश प्राप्त कर लिया।[1] सोम को अधिराज की संज्ञा भी दी गई है।[2] सोम को राजाओं का राजा[3] तथा विश्वसम्राट कहा गया है।[4] है।[4] शतपथ ब्राह्मण में सोम को विराट कहा गया है। विराट में दस अक्षर होते हैं। हैं। अतः सोम को दस वस्तुओं से खरीदा जाता है।[5] सोम को तीन बार निष्पीडित करते हैं, तीन बार इकट्ठा करके, चार बार निग्राभक्रिया की जाती है। विराट छन्द दस अक्षर का होता है। सोम विराट युक्त है।[6] यहाँ पर संख्या के आधार पर साम्य है।

सोम को प्रतीची दिशा का स्वामी कहा गया है, इसके द्वारा ही पश्चिम दिशा जानी जाती है।[7] शतपथ ब्राह्मण तथा कौषितकी ब्राह्मण सोम को दक्षिण दिशा से जोड़ते हैं। सोम को चन्द्रमा भी कहा गया है। अमावस्या की रात को यह न पूर्व में न पश्चिम में दिखाई देता है, तब चन्द्रमा इस लोक में आकर, अन्नादि तथा औषधियों में प्रविष्ट हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि चन्द्रमा ही सोमरूप में परिणत होकर औषधियों में समाहित होता है। ये औषधि वनस्पतियाँ ही अन्न का रूप होती हैं। इसलिए सोम को अन्न भी कहते हैं। यह देवों का अन्न है।[8] सोम ग्रह अन्न है।[9] सोम हवि है।[10] सोम उत्तम हवि है[11], यज्ञ में सभी देवों के के निमित्त इसकी आहुति दी जाती है।

---

1 यथा वा इमा अन्या ओषधय एव सोमासीत् स तपोऽतप्यत स एतत् सामापश्यत्तेन राज्यमधिपत्यमगच्छत् यशो भवत्। ता. ब्रा. 11.3.9

2 सोमो औषधीनामाधिराजः गो. उत्तर भाग 1.17

3 सोमो राजा राजपतिः तै. ब्रा. 2.5.7.3

4 प्रच्यवस्व भुवनस्पत्त इति भुवानां ह्येष (सोमः) पतिः। श. ब्रा. 3.3.4.14

5 श. ब्रा. 3.3.3.18

6 श. ब्रा. 3.9.4.19

7 प्रतीची दिक्। सोमो देवता तै. ब्रा. 3.11.5.2

8 श. ब्रा. 1.6.4.5

9 श. ब्रा. 4.6.5.5

10 श. ब्रा. 11.4.1.10

11 श. ब्रा. 12.8.2.12

दर्शपूर्णमास यज्ञ में हो आज्यभाग आहुतियाँ अग्नि तथा सोम को दी जाती हैं। वे यज्ञ के दो नेत्र हैं। दोनों नेत्र अग्नि और सोम का रूप हैं। शुक्ल रूप अग्नि का तथा कृष्ण सोम का रूप है। देखने वाले की आँखे सूखी होती हैं, शुष्कता अग्नि का गुण है। शयन करने वाले मनुष्य की आँखे गीली होती हैं, अतः सोम आर्द्र गुण युक्त होता है।[1] सोम को वीर्यवर्धक, स्फूर्तिदायक आदि गुणों से समन्वित कहा गया है। इसी कारण से सोम को वाजपेय भी कहा जाता है।[2] इसके अतिरिक्त वाजपेय यज्ञ में सोम की आहुति दी जाती है। ताण्डय ब्राह्मण में कहा गया है कि देवताओं ने हविर्यज्ञों, चातुर्मास्य, निरुढबन्ध, सौत्रामणी, पिण्डपितृयज्ञादि पशुयागों से पृथ्वी लोक तथा अन्तरिक्ष लोक पर विजय प्राप्त की।[3]

ब्राह्मणग्रन्थों में सोम का अमृत रूप में भी वर्णन मिलता है।[4] शतपथ ब्राह्मण में इसे रस[5] और पयस् कहा गया है। कौषितकी ब्राह्मण में दधिरूप में वर्णन मिलता है।[6] सोम को सौत्रामणी कहा गया है।[7] सौत्रामणी सोमयाग ही है।[8] औषधियों का रस सुत सोम तथा अन्न का रस आसुत कहा जाता है। शतपथ ब्राह्मण में सुत और आसुत दोनों सोम के रूप हैं।[9] सोम आर्द्र कर्मकाण्ड तथा अग्नि शुष्क कर्मकाण्ड को दर्शाता है।[10] कौषितकी ब्राह्मण में उल्लेख मिलता है कि

---

1 श. ब्रा. 1.6.3.41

2 सोमो वै वाजपेयः। यो वै सोमं वाजपेयं वेद।
वाज्यैनैवं पीत्वा भवति। तै. ब्रा. 1.3.2.3–4

3 हविर्यज्ञैः वै देवा इमं लोकमभ्यजयनन्तरिक्षं पशूमद्भिः सोमैरमुम्। तै. ब्रा. 17.13.18

4 तद्यत्तदमृतं सोमः सः। श. ब्रा. 9.5.1.8

5 रसः सोमः। श. ब्रा. 7.3.1.3

6 सोमो वै दधि। कौ. 9.1.25

7 सोमो वै सौत्रामणी। श. ब्रा. 12.7.2.12

8 श. ब्रा. 12.8.2.1

9 श. ब्रा. 12.8.2.13

10 (i) यद्वा आर्द्रं यज्ञस्य तत्सौम्यम् श. ब्रा. 3.2.3.10
(ii) यद् वै शुष्कं यज्ञस्य तदाग्नेयम्। श. ब्रा. 3.2.3.9

सविता ने राजा सोम को सूर्या को प्रदान किया।[1] ऋग्वेद के दशम मण्डल में भी सोम और सूर्या के विवाह के संकेत मिलते हैं।

ब्राह्मणग्रन्थों में सोम को चन्द्रमा, अन्न, प्राण, यज्ञ, प्रजापति, विराट्, रस, यश, श्री इत्यादि रूपों में निरुपित किया गया है। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में सोम और चन्द्रमा का एकीभाव स्वीकार किया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थ इस धारणा को और अधिक पुष्ट करते हैं। जैसे अमावस्या आने पर चन्द्रमा का घटना तथा सोम का क्षय होना एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथों में विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रतिपाद्य विषय कर्मकाण्ड है और कर्मकाण्ड में सोम का प्रयोग होता है। इसी कारण ब्राह्मणग्रन्थों में सोम का महत्त्व होना स्वाभाविक है।

1.7 उपनिषदों में सोम स्वरूप :–

संहिताओं में सोम का स्वरूप विस्तृत रूप में मिलता है। संहिताओं तथा ब्राह्मणग्रन्थों के अतिरिक्त उपनिषदों में भी सोम का महात्म्य दृष्टिगोचर होता है। उपनिषदों में सोम को चन्द्रमा[2] तथा सब कुछ मैं ही हूँ[3] ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। है। मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि सोम से मेघ उत्पन्न होता है।[4] एक स्थल पर कहा गया है कि चन्द्रमा (सोम) तथा सूर्य अपनी किरणों से सम्पूर्ण सृष्टि की वस्तुओं को प्रकाशित करते हैं।[5] सोम की प्रमुखता के कारण मरुद्‌गण उसके उपजीवी हैं। देवगण न खाते हैं, न पीते हैं, वे केवल इस अमृत को देखकर ही तृप्त हो जाते हैं।[6]

---

1 अथ यत्र ह तत्सविता सूर्या प्रायच्छत्सोमाय राज्ञे। कौ. ब्रा. 18.1

2 छा. उप. 5.1.4

3 विज्ञानोऽस्मि विशेषोऽस्मि सोमोऽस्मि सकलोऽस्यहम् मै. उप. 3.3

4 सोमात् पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम्। मु. उप. 2.1.5

5 लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः। मु. उप. 2.1.6

6 अथ यच्चतुर्थममृतं तन्मरुत उपजीवन्ति सोमेन मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति। छा. उप. 3.9.1

छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि सोम के सर्वोत्तम होने पर मरुद्गण इस अमृत को देखकर तृप्त होते हैं। भोग का अवसर जानकर उत्साहित तथा भोग का अवसर न जानकर उदासीन होते हैं।[1] चन्द्रमा को ब्राह्मणों का राजा सोम कहा गया है। वह देवताओं का अन्न है। उस चन्द्रमा रूप अन्न का इन्द्रादि देवता भक्षण करते हैं।[2] सोम की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि इस घुलोकरूप अग्नि में देवगण श्रद्धा (जल) का हवन करते हैं, उस आहुति से सोम राजा की उत्पत्ति होती है।[3] एक स्थल पर कहा गया है कि देवगण राजा सोम का हवन करते है, उस आहुति से वृष्टि होती है।[4]

सोम को सभी कार्यों में कुशल तथा प्रजापति कहा गया है।[5] इस प्रसङ्ग में में सोम का आध्यात्मिक स्वरूप भी दृष्टिगोचर होता है। इसमें राजा अजातशत्रु तथा बालक तनय का संवाद प्राप्त होता है। यहाँ गार्ग्य प्रश्नकर्त्ता है कि यह राजा सोम पुरुष कहाँ चेतनाहीन होकर सो रहा है? उत्तर में कहा गया है– हृदयकमल सम्बन्धि हिता नाम की अनेकों नाड़ियाँ हैं वे हृदयकमल से निकलकर सम्पूर्ण शरीर में फैली हुई है। वे नाड़ियाँ विभिन्न प्रकार से परिपूर्ण हैं। उनमें श्वेत, अरुण, कृष्ण तथा पीत सभी वर्ण समाहित हैं, सुप्तावस्था में सोम नाड़ियों में लीन रहता है।[6] सोम की प्रधानता अग्न्याधानादि कर्म में बताई गई है। जहाँ अग्नि का मन्थन होता है वहाँ सोम की अधिकता होती है।[7]

सोम को उत्तर दिशा में माना गया है। सोम शब्द से सोमलता तथा सोमदेवता का निर्देश मिलता है। सोम को दीक्षा में प्रतिष्ठित बताया गया है।

---

1 स य एतदेवममृतं वेद मरुतामेवैको भूत्वा सोमेनैव मुखेनैतत् एवामृतं दृष्ट्वा तृष्यति। छा. उप. 3.9.3

2 सोमो राजा तद् देवानामन्नं तं देवा भक्षयन्ति। छा. उप. 5.10.4

3 तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति तस्या आहुतेः सोमो राजा संभवति। छा. उप. 5.5.2

4 देवाः सोम राजानं जुह्वति तस्या आहुतेर्वर्षं सम्भवति। छा. उप. 5.5.2

5 सोमोराजाऽसि विचक्षणः, पंचममुखोऽसि प्रजापति। कौ. उप. 2.9.4

6 सोमराजन्निति स उ तूष्णीमेव शिश्ये। तत उ हैनं यष्टया विचिक्षेप। स तत् एव समुत्तस्थौ। कौ. उप. 4.18

7 अग्निर्यत्राभिमथ्यते वायुर्यत्राधिरुध्यते।
सोमो यत्रााातिरिच्यते तत्र संजायते मनः। श्वेता. उप. 2.6

दीक्षित यजमान ही सोम को खरीदने में समर्थ होता है। उस सोम से यज्ञ करके उत्तर दिशा में अधिष्ठित सोमदेवता की स्तुति करता है।[1] सोम को पवित्र करने वाला तत्त्व स्वीकार किया गया है।[2] यज्ञ में सोम के लिए आहुति दी जाती है।[3] बृहदाराण्यकोपनिषद् में कहा गया है कि देवगण वृष्टि के लिए सोम से यजन करते हैं।[4] सोमपान के विषय में कहा गया है कि ऋत्विग्गण सोम राजा को आप्यायस्व अपक्षीयस्व ऐसा कहकर चमस में भरकर पान करते हैं।[5] सोम को अन्न तथा अग्नि को अन्नाद कहा गया है।[6]

संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के सदृश उपनिषदों में सोम का अधिक विवेचन नहीं मिलता है। परन्तु यत् किञ्चिदपि प्राप्त होता है, वह संहिताओं और ब्राह्मण ग्रन्थों से भिन्न नहीं है। उपनिषदों में सोम को लता, देवता तथा रस तीनों रुपों में स्वीकार किया गया है। इसके साथ ही सोमक्रय का भी संकेत मिलता है। जिनका वर्णन पञ्चम अध्याय में किया गया है।

---

1 किन्देवतोऽस्यामुदीच्यां दिश्यसीति सोमदेवत इति सः सोमः कस्मिन् प्रतिष्ठित इति दीक्षायामिति। बृहद. उप. 3.9.23

2 तद्यत्राद आह सोमः पवत इति। जै. उप. ब्रा. 3.6.6.3

3 सोमाय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे सं स्रवमवनयति। बृहद. उप. 6.3.3

4 देवा सोमं राजानं जुह्वति तस्या आहुत्यै वृष्टिः सम्भवति। बृहद. उप. 6.2.10

5 देवा यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेत्येवमेना तत्र भक्षयन्ति। बृहद. उप. 6.2.16

6 सोम एवान्नमग्निरन्नादः। बृहद. उप. 6.2.18

द्वितीय अध्याय

उपलब्ध आंग्ल साहित्य में अयाहुआस्का का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय
उपलब्ध आंग्ल साहित्य में अयाहुआस्का का सामान्य परिचय

साहित्य समाज का दर्पण होता है। राष्ट्र की चारित्रिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ दर्पणरूपी साहित्य में प्रतिबिम्बित होती हैं। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता तथा संस्कृति को जानने के लिए साहित्य की महती भूमिका होती है। साहित्य राष्ट्र का आधार स्तम्भ होता है। भारतीय साहित्य में अयाहुआस्का नामक बेल या काढ़ा दृष्टिगोचर नहीं होता है। भारतवर्ष में अयाहुआस्का पर आधारित कोई शोधग्रन्थ भी प्राप्त नहीं होता है। भारतीय संस्कृति में अन्वेषण करने पर सोमलता नामक एक औषधि प्राप्त होती है, जिसका माहात्म्य भारतवर्ष के आधार स्रोत तथा प्रामाणिक ग्रन्थ वेदों में वर्णित है। सोम एक लता (बेल) तथा लता से निर्मित एक दिव्य पेय है। जिसका सम्पूर्ण स्वरूप वैदिक साहित्य में उपलब्ध होता है। इसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में विशेष रूप से किया जाता है।

आधुनिक पश्चिमी साहित्य में अयाहुआस्का का वर्णन अवश्य प्राप्त होता है, परन्तु कोई प्रामाणिक तथा परम्परागत आधार स्तम्भ नहीं मिलता है। कुछ अवशेष प्राप्त होते हैं। जिनके आधार पर अयाहुआस्का का काल निर्धारित होता है। पश्चिमी समाज में कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। उन्हें प्रामाणिक तथ्य माना जाता है। आधुनिक समय में अयाहुआस्का से सम्बन्धित साहित्य डिजिटल सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तहत प्राप्त होता है। इंटरनेट, मीडिया के माध्यम से ज्ञान का उत्पादन तथा प्रसार होता है। कनाडा के कुछ विद्वानों ने मीडिया को अयाहुआस्का से सम्बन्धित सामग्री प्रेषित की, जो मात्र अंग्रेजी तथा फ्रेंच भाषा में विद्यमान है। पुस्तकों पत्रिकाओं, रेडियों, सिनेमा, मास मीडिया के द्वारा अयाहुआस्का का ज्ञान संचित हो सकता है। कनाडा की साहित्यिक पत्रिका में विशेषरूप से एक लेख प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक **"आत्मा के साथ पौधे"** हैं। यह लेख 2006 में

पोसनर (Posner) ने प्रकाशित करवाया। यह लेख अयाहुआस्का से निर्मित काढे को पीने पर व्यक्तिगत अनुभव दर्शाता है।[1]

सन् 2007 में रेडियो के माध्यम से एक विचार प्रसारित किया गया, जिसका शीर्षक **"वनस्पति देवी की खोज"** था।[2] इसमें अयाहूआस्का और इसके भूमण्डलीकरण के विषय में बताया गया हैं। **'डेनिज जे'** नामक लेखक अयाहुआस्का के औषध विज्ञान वनस्पति विज्ञान तथा रसायन शास्त्र का अध्ययन करते हैं।[3] दक्षिण अमेरिका से बाहर के क्षेत्रों में अयाहुआस्का अपने गुणों के कारण लोगों को प्रभावित करता है। विभिन्न क्षेत्रों में यह दिव्य पेय महत्वपूर्ण माना जाता है। सम्भवतः इसी कारण से पश्चिम देशों में अयाहुआस्का का महत्त्व शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोपरि है। स्पेनिश, पुर्तगाली, डच, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं में अनेक पुस्तकें तथा लेख प्रकाशित होते हैं।[4] कनाडा का एक केवल नेटवर्क चैनल धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के लिए समर्पित है। इनके अतिरिक्त इन्टरनेट पर पीएच.डी. थीसिस (Ph.D Thesis) Dissertation उपलब्ध है। जिनमें मनुष्यों तथा पशुओं पर Psychoactive, harmala alkaloids, DMT घटक की जाँच के अध्ययन की समीक्षा की प्राप्त होती है। आंग्ल साहित्य में अयाहुआस्का को प्राकृतिक, स्वास्थ्य चिकित्सा सामाजिक व वैज्ञानिक आदि कई विषयों में विभाजित किया जाता है। अयाहुआस्का के मनोवैज्ञानिक पक्ष की भी समीक्षा की जाती है। इसके अनन्तर आध्यात्मिकता का विवरण मिलता है।[5]

अयाहुआस्का का शरीरविज्ञान और मनोवैज्ञानिक अनुसंधान अधिकांशतः UDV या सैंटो ब्राजील चर्चो के सदस्यों पर किया जाता है।[6] अयाहुआस्का UDV चर्च में प्रथम बार कैसे शामिल होता है? नियमित रूप से अनुष्ठान में कैसे प्रयोग

---

1 Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

2 यह कनाडा प्रसारण निगम के द्वारा प्रसारित कार्यक्रम है।

3 Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, Ed. Dennis. J

4 Ayahuasca : Enthaogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

5 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

6 The Ritual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae

होता है? चर्च में इसका विकास कैसे करते हैं, इस ज्ञान के लिए कुछ तथ्य सामने आते है। इन UDV सदस्यों के जीवन की कहानियों से ज्ञात होता है कि पुरातन काल में इस समुदाय के लोग मूर्ख (अज्ञानी) तथा निकृष्ट व्यवहार करते थे। इस चर्च के लोगों में अनुशासनहीनता का व्यापक समावेश है। 73% लोग मदिरा पर निर्भर रहते हैं। इसके अतिरिक्त 53% लोग तम्बाकू तथा धूम्रपान का सेवन करते हैं। UDV सदस्यों के जीवन का वर्णन असभ्य, आक्रामक, विद्रोही, गैर जिम्मेदार, असफल इत्यादि दोषों से परिपूर्ण माना जाता है। अयाहुआस्का के प्रयोग से इन लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। UDV के लोगों में यह क्रान्तिकारी परिवर्तन माना जाता है। UDV सदस्यों द्वारा धार्मिक अनुष्ठान में नियमित प्रयोग करने से इनके जीवन में सुधार, एकाग्रता, कर्मनिष्ठता, ईमानदारी, सकारात्मक विचारधारा का समावेश होता है। इसके अनन्तर अन्वेषण करने पर ज्ञात होता है कि इस क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए 'काढा' ही जिम्मेदार है।[1]

अयाहुआस्का एक लता है। यह अमेजन के स्वदेशी जनजातियों के द्वारा प्रयोग में लायी जाती है। अयाहुआस्का प्राचीन समय से अन्य औषधियों के साथ मिश्रित करके उपयोग में लाई जाती है। अयाहुआस्का को काढा कहा जाता है। इसको उबालकर तैयार किया जाता है।[2] वस्तुतः Banis teriopsis caapi स्वयं एक शक्तिशाली औषध है। जनजातियाँ इस औषधि के मिश्रण से ही अयाहूआस्का को तैयार करती हैं। औषधि प्रजातियों में Rubiaceae एक औषधि– समूह (परिवार) है। जिसमें से चक्रुना (Chacruna) को औषधीय गुणों के कारण ग्रहण किया जाता है।[3] अधिकांशतः अमेजनवासी अयाहुआस्का को वनस्पति (पौधे) के रूप में स्वीकार करते हैं। अयाहुआस्का एक शक्तिप्रद पेय माना जाता है। जिसके पान करने से मनुष्य में ऊर्जा का संचार होता है। यह सुखप्रद पेय है।

अयाहुआस्का से सम्बन्धित साहित्य का अन्वेषण करने से ज्ञात होता है कि

---

1 Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tubber

2 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

3 Ayahuasca : An Ethnoparmacologic History, Ed. Dennis. J

सम्भवतः अमेजन के निवासियों को कई पौधों का Psychoanalysis (मनोविश्लेषणात्मक) ज्ञान नहीं है। वे औषधीय रूप में ही इसका प्रयोग करते हैं। अयाहुआस्का का प्रयोग नेत्र ज्योति, एड्स, माइग्रेन इत्यादि रोगों की निवृति के लिए किया जाता है।[1]

अयाहुआस्का के पीने से शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होता है। यह पेय पीने के आधा से छः घण्टे तक की अवधि में असरदायी होता है। अत्यधिक प्रभावशाली दो–चार घण्टे के मध्य–अवधि में होता है। यह हृदयाघात, उच्च रक्तचाप, थकावट, भय, उदर पीड़ा आदि रोगों के लिए प्रभावशाली औषधि है। इसका प्रयोग अत्यन्त सावधानी से किया जाता है। इसके पीने के अनन्तर वमन तथा डायरिया (पेचिश) आदि विकार उत्पन्न होते हैं। वमन होने से शरीर की शुद्धि होती है। इसके अतिरिक्त शरीर में उपस्थित कृमि व परजीवियों को भी नष्ट कर देता है।[2]

वहाँ के लोग इस पेय का प्रयोग बहुत ही संयम के साथ करते हैं। इस पेय के दौरान स्थानीय लोग भोजन में तीखे मिर्च–मसालों, नमक व वसादि का प्रयोग नहीं करते हैं। अयाहुआस्का पीने के पश्चात् संभोग भी नहीं करते हैं। वहाँ के लोगों की मान्यता के अनुसार इसके प्रभाव से दिव्य श्रवण तथा दिव्य दर्शन होता हैं।[3] जिसमें निश्चेतना, भय, मोह, लोभ, अभिनिवेश अविद्यमान रहते हैं।

आधुनिक इतिहास के अनुसार अयाहुआस्का का समय 19वीं शताब्दी के मध्य स्वीकार किया जाता है।[4] मूल रूप से इतिहास के माध्यम से अयाहूआस्का अमेजन बेसिन के जंगलों में ही पाया जाता है। सर्वप्रथम अमेजन स्थित जनजातियों ने ही इसे ज्ञात किया। इन जातियों में उरेरिना नामक जनजाति का

---

1 Ayahuasca.com > spirit and Healing > Shamanism > on the origins of Ayahuasca

2 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

3 Ayahuasca Visions : The Religious Iconography of a Peruvian Shamans, Luis Luna Eduardo and Pablo Amaringa

4 Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, Ed. Dennis. J

उल्लेख प्राप्त होता है। कुछ प्रामाणिक तथ्य भी प्राप्त होते हैं जिनका उल्लेख चतुर्थ अध्याय में विद्यमान है।

अयाहुआस्का की खोज कैसे हुई? यह प्रश्न अधुनापि विचारणीय है। प्रागैतिहास में कुछ बिन्दु प्राप्त होते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि यह आकस्मिक संयोजन से निर्मित पेय है। कोई नहीं जानता था, न कोई जिम्मेदार कि अयाहुआस्का का निर्माण हो जाएगा। इसके विषय में कुछ किंवदन्तियाँ भी प्रचलित हैं। इस प्रसङ्ग में राजा सुलैमान को प्रथम वैज्ञानिक घोषित करते हैं। जिसने यात्रा के दौरान अयाहुआस्का की खोज की। इसको Brasilian (ब्रासिलियन) समधर्मी सम्प्रदाय के साथ जोड़ते हैं। यह कथन प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर ही अवलम्बित है।[1] अमेजन में ही अयाहुआस्का की मूल जड़े मानी जाती हैं। तत्पश्चात् विभिन्न देशों में अयाहुआस्का का प्रसार हुआ।

अयाहुआस्का का ब्राजील के सैंटो Daime धार्मिक संगठनों में Psychoactive (मनःचेतना) संस्कार के रूप में प्रयोग किया जाता है। चर्चों में उपयोग करने से मनोरोग मूल्यांकन, व्यक्तित्व परीक्षण और पान कर्ताओं का neurphysiological स्थिति का ज्ञान होता है। अयाहुआस्का पीने वाले मनुष्यों में नकारात्मक प्रवृत्ति नहीं पायी जाती है। अयाहुआस्का का अत्यधिक प्रयोग धार्मिक स्थलों पर किया जाता है।[2] अयाहुआस्का का अत्यधिक प्रभाव शारीरिक तथा मानसिक प्रक्रिया पर होता है, इसीलिए अयाहुआस्का का चिकित्सा के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान है। तदनन्तर वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने इसका प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया है। अयाहुआस्का धार्मिक तथा आध्यात्मिक प्रयोजनों के लिए समाज में सम्मानित द्रव्य है। अमेजन के जंगलों में आध्यात्मिक अनुभूति के लिए वैज्ञानिकों तथा प्रवासियों का निरन्तर आवागमन चलता रहता है। ब्राजील ने उत्तरी अमेरिका और यूरोप में अयाहुआस्का का प्रसार करके इस द्रव्य को अमूल्य बना

---

1 Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, Ed. Dennis. J

2 Experiences of Encounters with Ayahuasca- “The line of the soul” Ed. Anette Kfellgren

दिया है। सर्वाधिक व्यापक स्वरूप दक्षिण अमेरिका में प्राप्त होता है। यहाँ के निवासियों के अनुसार अयाहुआस्का राहत प्रदान करने वाली तथा नशे की आदत को त्याग कराने में समर्थ औषधि है। अतीत तथा वर्तमान में अमेजन के निवासी अयाहुआस्का को पीने के साथ–साथ चिकित्सा, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रयोजन के लिए उपयोग करते हैं।[1]

2.1 अयाहुआस्का परम्परा में परिवर्तन :–

शैमेनिज़्म (Shamanism) सम्प्रदाय के लोगों द्वारा इस पवित्र पौधे का पारम्परिक धार्मिक समूहों में प्रयोग किया जाता है। प्राचीन काल से अमेजन निवासी अयाहुआस्का पेय का प्रयोग करते हैं, परन्तु आधुनिक समय में गैर अमेजन लोगों का रुझान अयाहुआस्का के प्रति बढ़ा है। अयाहुआस्का के गुणों के कारण यह लोकप्रिय तथा स्पृहणीय है। अमेजन के मूल निवासियों को इस पौधे के विषय में वैज्ञानिक ज्ञान अत्यधिक नहीं है। शोध तथा अध्ययन के क्षेत्र में वैज्ञानिकों, चिकित्सकों तथा गैर अमेजनवासियों की उत्कण्ठा अत्यधिक प्रतीत होती है। अमेजन निवासी जनजातियाँ औषधरूप तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में इसका प्रयोग करते हैं, परंतु गैर अमेजनवासी लोगों की दृष्टि में अयाहुआस्का का महत्व कुछ भिन्न माना जाता है। ये मनुष्य अयाहुआस्का को आय का महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं। इसी कारण से अमेजनवासियों ने प्रवासियों को प्रयोग करने के लिए निषेध किया।[2]

गैर स्वेदशी अयाहुआस्का का प्रयोग न करें, इसकी घोषणा Yuragaco संघ की डॉक्टर डेला द्वारा की गई। यह निषेध की घोषणा अनुच्छेद–4 में निहित है। इसका प्रमुख कारण गैर–निवासियों द्वारा आय के स्रोत के लिए प्रयोग करना माना जाता है। अमेजनवासियों ने कहा कि जो मनुष्य Yage (अयाहुआस्का) का प्रयोग मानवता के हितों से प्रतिबन्धित करके, निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु प्रयोग करें। यह

---

1 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy

2 Ayahuasca : Shamanism Shared Across Cultures, Ed. Luis Eduardo Luna

हम अमेजन निवासियों को कदापि स्वीकार नहीं है। मानव विज्ञानी, वनस्पति विज्ञानी, व्यापार करने वाले तथा अन्य वैज्ञानिकों को अधिकार नहीं है कि हमारे पवित्र पौधों को अन्य कार्यों में प्रयोग करें। अयाहुआस्का हमारा पैतृक ज्ञान तथा बौद्धिक सम्पदा है इसीलिए गैर–निवासियों पर निषेध का प्रावधान करते हैं।[1] प्रस्तुत बयान अमेरिकन Loren (लोरेन) तथा अन्य मनुष्यों के द्वारा इक्वेडोर में स्वदेशी समुदाय के मध्य से एकत्रित किया गया है। इसके साथ ही अयाहुआस्का के कानूनी अधिकार प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरु मानी जाती है।

स्वेदशी (मूल निवासी) तथा गैर स्वदेशी चिकित्सों के मध्य और Shamanic धार्मिक तथा गैर–धार्मिक अनुष्ठान में अयाहुआस्का का प्रयोग एक जटिल समस्या बन गयी। 1930 के दशक में समधर्मी धार्मिक संगठनों द्वारा अयाहुआस्का का प्रयोग संस्कार के रूप में किया जाता है। इन धार्मिक संगठनों की शाखाएँ वर्तमान काल में ब्राजील के प्रत्येक प्रमुख शहर में विद्यमान हैं। अन्य देशों में भी अयाहुआस्का का प्रयोग होता हैं परन्तु आधुनिक समय में अयाहुआस्का को लेकर वैज्ञानिक अत्यधिक गंभीर तथा कार्यरत दृष्टिगोचर होते हैं।

आधुनिक यूरोप और उत्तरी अमेरिका में अयाहुआस्का को गैर पारम्परिक पौधों के साथ मिश्रित करके औषधी तैयार की जा रही हैं। अयाहुआस्का बेल के विकल्प में सीरिया रुए संयन्त्र के बीज को इस्तेमाल कर रहे हैं। Chakruna (चक्रुना) के स्थान पर अन्य किसी पौधे का प्रयोग किया जा रहा हैं। आस्ट्रेलियावासी कई देशी पौधे जो DMT युक्त हैं उन पौधों का इस्तेमाल करते हैं।[2] तथ्यों के विश्लेषण के बाद पाया गया कि यदि इन वनस्पतियों में से एक भी मात्रा अधिक होती है तो काढा विषाक्त हो जाता है। इससे अंधापन, प्रलाप, अर्धमूर्च्छा (कोमा) इत्यादि शारीरिक विकार बढ़ते हैं। अयाहुआस्का विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न रूपों में प्राप्त होता है।

---

1 Ayahuasca : Shamanism Shared Across Cultures, Ed. Luis Eduardo Luna

2 (i) Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper
(ii) www.ayahuasca.com

साहित्यकार का दृष्टिकोण पृथक् है तथा व्याख्याकार इसमें आश्चर्यजनक प्रकृति उत्पन्न करता है। कभी तो पौधे के गुणों तथा लाभों का न्यून मात्रा में, कभी आश्चर्यचकित करने वाले तत्त्व के रूप में वर्णन मिलता है।

प्राचीन काल की वस्तुओं में कालचक्र के साथ–साथ परिवर्तन भी सम्भव है। परिवर्तनशीलता प्रत्येक वस्तु का धर्म माना जाता है। भारतीय साहित्य में सोम एक अमृत पेय माना जाता है, परन्तु आधुनिक शोधकर्ता तथा वैज्ञानिक सोम को सारकोस्टेमाएसिडम, कार्डिफोलिया, अयनिता मस्कैरिया, गिलोय इत्यादि नामों में परिवर्तित करते हैं।[1]

2.2 अयाहुआस्का कानूनी तौर से वैध या अवैध :–

अयाहुआस्का का उपयोग एक वैश्विक विवाद का मुद्दा बना। अयाहुआस्का का प्रयोग वैध है या नहीं? संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय देशों के लिए अयाहुआस्का धार्मिक संस्कारों में प्रयोग होने के कारण विस्तार को प्राप्त है। यही मुख्य कारण है कि अयाहुआस्का वैध माना जाता है। इस अन्तर्राष्ट्रिय दृष्टिकोण ने पौधे के उपयोग की वैधता के विषय में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। पारम्परिक धार्मिक संगठनों द्वारा इसका उपयोग एक व्यापक विचारधारा के तहत समाविष्ट है।

लगभग 1930 Daime (डेमे) धार्मिक संगठन के काल में अयाहुआस्का के उपयोग का मुद्दा प्रारम्भ माना जाता है। विरोध करने का मुख्य कारण जादू–टोने के लिए अयाहुआस्का का प्रयोग माना जाता है, इसके अतिरिक्त अवैध औषधियों में भी इसका प्रयोग किया गया।[2] इन्हीं कारणों को समक्ष रखते हुए निषेध का प्रावधान हो सकता है।

ब्राजील के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा 1965 में अयाहुआस्का का उपयोग करने के लिए बढ़ावा दिया गया। इसका प्रमुख कारण माना जाता है अयाहुआस्का का

---

1 आइडेन्टिफिकेशन ऑफ सोम पुरातत्व, नं.–12, सं. भगवान सिंह

2 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

Psychotive प्रभाव तथा शहरी सामाजिक वर्गों द्वारा उपयोग में लाना। अयाहुआस्का के उपयोग का निषेध छः मास तक किया गया। तत्पश्चात् धार्मिक समूहों द्वारा इसकी उपयोग परम्परा पर विचार करके अनुमति प्रदान की गई। अयाहुआस्का के उपयोग के विषय में सुप्रीम कोर्ट द्वारा वनस्पति के रूप में स्वीकृति प्रदान कर दी। अमेरिकी क्षेत्रों में धार्मिक अनुष्ठानों में अयाहुआस्का पेय के रूप में स्वीकार किया जाता है। उसी प्रकार आस्ट्रेलियाई, इटली, हॉलैण्ड और स्पेन देशों में भी इसका महत्त्व वृद्धि को प्राप्त कर रहा है।[1]

वर्तमान समय में अयाहुआस्का का वैज्ञानिक अध्ययन हो रहा है। मनोरोग, नृविज्ञान, कला के रूप में, विज्ञान के क्षेत्र में इसका प्रयोग करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि में यह एक अद्भुत तथा मंनोरंजक पेय है। इसका प्रभाव Psychosocial है।

अयाहुआस्का को निर्मित करते समय एक DMT युक्त पौधे का प्रयोग करते हैं। कानूनी नियम के अनुसार दूसरा प्रयोग अवैध माना जाता है। क्योंकि DMT मादक गुणों से युक्त पौधा है। अयाहुआस्का को चाय के रूप में प्रयोग करने के लिए कानूनी अधिकार की आवश्यकता दृष्टिगत होती है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने 1 नवम्बर, 2005 में निर्णय सुना तदनन्तर 21 फरवरी, 2006 में UDU समारोह में चाय का प्रयोग करने की अनुमति प्रदान की। इसके बाद Asland ओरेगन आधारित सैंटो Daime चर्च में चाय का आयात होने से कानूनी कार्यवाही की गई। अमेरिका के जिला न्यायालय के न्यायधीश Panner (पाननर) ने सैंटो Daime के पक्ष में निर्णय दिया। धार्मिक स्वतन्त्रता अधिनियम के तहत इस फैसले को संरक्षण प्रदान किया गया।

फ्रांस में भी 2005 में न्याय का उपयोग करने के पक्ष में निर्णय प्राप्त हुआ।[2] इससे स्पष्ट होता है कि अयाहुआस्का के पारम्परिक ज्ञान के बौद्धिक संरक्षण के लिए लोग जागरूक हैं।

---

1 The Ritual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae

2 www.ayahuasca.com

2.3 अयाहुआस्का का वैश्वीकरण :–

पिछले कुछ दशकों में अयाहुआस्का का शैक्षणिक प्रक्रियाओं तथा लेखकों द्वारा साहित्य के क्षेत्र में योगदान बढ़ा है। इसीलिए अयाहुआस्का का अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर विस्तार मिलता है। 21वीं सदी में कई राज्यों जैसे कनाडा आदि में अयाहुआस्का को लेकर कानूनी मुद्दे सामने आए। अमेजन से अतिरिक्त स्थानों पर भी अयाहुआस्का का प्रयोग किया जाने लगा। अयाहुआस्का के विषय में लोगों की मौलिक दृष्टि विश्वदृष्टि में परिवर्तित हो गई जिससे व्यक्तिगत विकास, उपचार के तरीके, जीवनशैली में सकारात्मकता का समावेश सहज रूप से हो गया। अयाहुआस्का के उपयोग का तरीका व्यापक तथा तीव्र गति से विस्तृत हो रहा है। समकालीन अमेजनवासी Shamanic चिकित्सा पद्धतियों में व्यावहारिकता का समावेश करते हैं। परम्परागत रूप में शैमेनिज़्म अयाहुआस्का का प्रयोग आधुनिक समय में प्रौद्योगिकी, कला, संगीत, राजनीति और आध्यात्मिक क्षेत्र में करते हैं।[1]

दक्षिण और उत्तरी अमेरिकी सदस्यों ने अमेजन निवासियों की सहमति से अयाहुआस्का के लिए औपनिवेशिक वार्तालाप किया है। अयाहुआस्का का वैश्वीकरण करने में साहित्य महत्वपूर्ण सहयोग कर रहा है। दिन–प्रतिदिन अयाहुआस्का वनस्पति पर अनुसंधान होना भी वैश्वीकरण का कारण है। चिकित्सा के क्षेत्र में अयाहुआस्का को विभिन्न दवाईयों के साथ संयोग करके उपयोग में लाया जाता है। पारिस्थितिक परिणामों के कारण जंगली अयाहुआस्का को काटने की माँग भी वैश्विक वृद्धि का कारण माना जा रहा है।

Winkelman का मानना है कि अयाहुआस्का पीने से व्यक्तिगत वृद्धि, आत्म जागरूकता, आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि शारीरिक मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। इसी कारण से पर्यटकों के मध्य इसका महत्व बढ़ा है। अयाहुआस्का ब्राजील चर्चों के

---

1 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

अन्तर्राष्ट्रिय विकास तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में धर्म स्वतन्त्रता के लिए कानूनी मुद्दों में प्रमुख रहा है। जिसमें अयाहुआस्का की औषधि रूप में जाँच की जाती हैं। अयाहुआस्का का आधुनिक विश्व पूंजीवाद के रूप में खपत और उत्पादन करते हैं।

मानवविज्ञानी लूना और अमारिनगो (Amaringo) 1991 "अयाहुआस्का दृष्टि" नामक पुस्तक में अयाहुआस्का सांस्कृतिक उपयोग के साथ–साथ व्यावहारिक भी बताते हैं। ब्रह्माण्ड विज्ञान के विषय में विस्तार से वर्णन करते हैं। अयाहुआस्का पीने की परम्परा को समृद्धि का स्रोत मानते हैं। पेरु अमेजन की सांस्कृतिक गतिविधियों का 'अयाहुआस्का दर्शन' में स्पष्ट वर्णन हैं।[1]

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट इसको वनस्पति के रूप में स्वीकार करता है। अमेरिकी क्षेत्रों में धार्मिक अनुष्ठानों के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। आस्ट्रेलिया, इटली, हॉलैण्ड और स्पेन देश भी इसको इसी रूप में स्वीकार करते हैं। अयाहुआस्का वैश्विक रूप में कानूनी मुद्दे के रूप में अधिक स्पष्ट हुआ है।[2]

क्योंकि इस कारण से न जानने वाले देश भी अयाहुआस्का को जानने लगे। वस्तुतः अयाहुआस्का के वैश्वीकरण में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि अयाहुआस्का पर प्रकाशित शैक्षिक साहित्य अपेक्षाकृत अल्प है, परन्तु इसके साइकेडेलिक अध्ययन से आगामी वर्षों में नवीन खोज होने की सम्भावनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। 2010 अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन में शोधकत्ताओं द्वारा यही निष्कर्ष निकला कि अयाहुआस्का आधुनिक समय में अनेक सम्भावनाओं को संजोए हुए है।

---

1. Ayahuasca Visions : The Religious Iconography of a Peruvian Shaman, Ed. Luis Luna Eduardo and Pablo Amaringo
2. Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

तृतीय अध्याय

ऋग्वेद तथा आयुर्वेद में सोम का स्वरूप तथा विशेषताएँ

तृतीय अध्याय
ऋग्वेद तथा आयुर्वेद में सोम का स्वरूप तथा विशेषताएँ

3.1 ऋग्वेद में सोम का स्वरूप एवं विशेषताएँ :–

ऋग्वेद के नवम मण्डल के 144 सूक्तों में सोम का वर्णन मुख्य रूप से वनस्पति के रूप में प्राप्त होता है। इसके साथ ही देवता, चन्द्रमा, ज्ञान, आत्मा तथा परमात्मा के रूप में भी इसका परिचय मिलता है।

वैयाकरणज्ञों ने भी सोम को अनेक अर्थों में स्पष्ट किया है। यास्क सोम को अनेकार्थक मानते हैं। पाश्चात्य विद्वान् सोम का स्वरूप भिन्न मानते हैं। कोई सोम को सुरा, रस, मादक द्रव्य कहता है तथा कोई गन्ने का रस, आँवले का रस। स्वामी दयानन्द सोम को ऐश्वर्य प्रदान करने वाला तथा औषधी आदि अर्थों में स्वीकार करते हैं। अरविन्द सोम को आध्यात्मिक आनन्द कहते हैं। हिल्ब्राण्ट के अनुसार सोम चन्द्रमा है। वे सम्पूर्ण नवम मण्डल में चन्द्रमा की ही स्तुति स्वीकार करते हैं।

चरकसंहिता में सोम को चन्द्रमा की कलाओं के सदृश बढ़ने व घटने वाली वनस्पति कहा गया है।[1] छान्दोग्योपनिषद् में चन्द्रमा को सोम कहा गया है।[2]

वस्तुतः यही कारण रहा होगा कि सोम चन्द्रमा के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। सोम का वर्णन लता तथा इससे निःसृत रस के रूप में है। इसके लिए कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग मिलता है तद्यथा– अंशु, अन्धस्, द्रप्स, पवमान तथा इन्दु इत्यादि। इसके अतिरिक्त पीयूष[3], दुग्ध[4] तथा मधु रस[5] भी कहा गया है। सोमलता

---

1 च. सं. 1.4.6
2 छा. उप. 5.10.4
3 ऋ. 3.48.4
4 ऋ. 9.107.12
5 ऋ. 5.43.4

के पेष्य अंश को अंशु कहते हैं।[1] डण्ठल से अलग सोमलता को अन्धस् कहते है। सोम को एक जगह मौञ्जव कहा गया है। पर्वत पर उत्पन्न होने के कारण सोम को पर्वतावृत तथा गिरिष्ठ कहा गया है। पर्वतों को सोमपृष्ठ कहा गया है। द्रव्यरूप होने से सोम को जलों का स्वामी कहा गया है।[2] किन्हीं मन्त्र भागों में जल सोम की बहन है।[3] सोमवृष्टिप्रद है, जो स्वर्ग से ही वृष्टि करता है। दुहे हुए सोम को वृष्टि का बोधक कहा गया है।[4]

सोमयाग में बभ्रु और अरुणवर्ण की गाएँ शुभ मानी जाती हैं। इसलिए गाय का बभ्रु तथा लोहित होना आवश्यक है। सोम भी इन्हीं वर्णों से युक्त होता है।[5] सोम तीव्रगति वाला होता है।[6] सोम के प्रवाह को अश्व की भाँति तीव्र बताया गया है। सोम की उपमा वन की ओर उड़ने वाले पक्षियों से की गई है।[7] सोम के अत्यधिक सेवन से मनुष्य ओजस्वी हो जाता है तथा असाधारण वीर कार्य करने में समर्थ हो जाता है। इसी कारणवश इसे अमृतत्व प्रदान करने वाला दिव्य पेय कहा गया है। देवगण सोमपान के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं।[8] सोमपान से आनन्दानुभूति होती है।[9] सोम को अमर कहा गया है।[10]

ऋग्वेद में बताया गया है कि सोम भूमि तथा द्युलोक में लता रूप में मिलता है।[11] पर्जन्य द्वारा सोम आकाश से पृथ्वी पर आता है। अनेक मन्त्रों में पर्वत से सोम को लाने का उल्लेख मिलता है।[12]

---

1 प्रत्यायस्व...... ऋ. 9.67.28

2 पति सिन्धूनाम् 9.15.5

3 स्वसारः आपः 9.82.3

4 वृष्टिं दिवः परिश्रवः 9.74.3

5 अरुणया पिङ्गाक्ष्या क्रीणात्येतद्वै सोमस्य रुपम्। तै. सं. 6.1.67

6 एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। ऋ. 1.4.7

7 नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतोऽनुष्बन्धं पवते सोमइन्द्रते।
आप्राः क्रतून्त्समजैरध्वरे मतीर्वेन हुषच्चभ्वो रासदद्धरिः। ऋ. 9.74.5

8 दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः। ऋ. 9.85.2

9 इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्राय स्पृहन्ति यन्ति प्रमादमतन्द्राः ऋ. 8.2.18

10 यो न इन्दुः पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्यो मर्त्यां आविवेशं ऋ. 8.48.12

11 ऋ. 9.94.3

12 ऋ. 9.95.4, 9.25.10

ऋग्वेद के नवम मण्डल में वर्णन प्राप्त होता है कि सोम अन्धकार को नष्ट करता है।[1] सोम एक श्रेष्ठ कर्म करने वाला विचक्षण तथा कवि है। सोम दिन में स्वर्ण तथा रात्रि में बभ्रु वर्ण का दृष्टिगोचर होता है।[2] सोम को बभ्रु, हरित वर्ण से युक्त बताया गया है। इस प्रकार सोम अरुण वनस्पति भी है।[3] सोमलता में अरुण वर्ण दूध युक्त अंकुर होता है, इसे अंशु भी कहा गया है।[4] हरित वर्ण वाले अंशु को पीसा जाता है।[5]

सोमयाग में बभ्रु तथा अरुण रंग की गाय शुभ मानी जाती हैं। इसलिए गाय का वर्ण लोहित तथा बभ्रु होना आवश्यक माना गया है क्योंकि सोम का वर्ण भी लोहित और बभ्रु होता है।[6] सोम तीव्रगति वाला है।[7] सोम के प्रवाह को अश्व की तरह तीव्र बताया गया है। सोम की उपमा वन की ओर उड़ने वाले पक्षियों से भी की गई है।[8]

सोमपान से मनुष्य ऊर्जस्वी होता है। वह असाधारण वीर कार्य करने लगता है। सोम की शक्ति अन्य पेय पदार्थों से बढ़कर है। इसी कारण से इसे अमृतत्व प्रदान करने वाला दिव्य पेय भी कहा जाता है। देवता सोमपान के लिए उत्सुक रहते हैं।[9] इसको पीने से देवगण आनन्द का अनुभव करते हैं।[10] सोम को अमर कहा गया है।[11]

---

1 पुमान् सोम नः तमांसि योध्या। ऋ. 9.9.7

2 दिवा हरिर्ददृशे नवतभृजः। ऋ. 9.97.9

3 वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सपते सूभर्वा वृषभाः प्रेमराविषु ऋ. 10.94.3

4 अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय सितीनाम् ऋ. 7.98.1

5 परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे। ऋ. 9.92.1

6 (i) अरुणया पिङ्गाक्ष्या क्रीणात्येतद्वै सोमस्य रुपम्। तै. सं. 6.1.67
(ii) सा या बभ्रु पिङ्गाक्षी। सा सोमक्रयण्यथ सा रोहिणी सा वार्त्रघ्नी। श. ब्रा. 3.3.1.14

7 एमाशुमासवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। ऋ. 1.47

8 नृबाहुभ्यां चोदितो धारया...... ऋ. 9.72.5

9 दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः। ऋ. 9.85.2

10 इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्राय स्पृहन्तियन्ति प्रमादमतन्द्राः 8.2.18

11 (i) यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामनृतस्य।
(ii) यो न इन्दु पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्योमर्त्या आविवेश ऋ. 8.48.12

जिस प्रकार पिता पुत्र के लिए सुखकर तथा हितकारी होता है, ठीक उसी प्रकार सोम हितकर तथा दीर्घायु प्रदान करता है।[1] सोम को रयि तथा देवताओं का धन कहा गया है।[2] सोम प्राणियों की शत्रुओं से रक्षा करता है।[3] सोम स्वर्ग का उत्तम अमृत (पीयूष) है।[4] औषधियों में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण सोम का जन्म वनस्पतियों के राजा के रूप में मिलता है।[5] वनस्पति के रूप में सोम रस का अपार स्रोत है। सोम ने सारे वीरुधों को उत्पन्न किया।[6]

सोम ऊर्जावान् तथा बलप्रद है। ऋग्वेद में सोम का अनेक कार्यों को सम्पादित करने वाले कर्त्ता के रूप में उल्लेख मिलता है। यह शत्रु–समूह का संहार करता हुआ अपना तेज प्रकट करता है।[7]

सोम ने पक्षियों द्वारा आहरण की हुई गायों को मुक्त किया।[8] सोम समस्त प्रजा का अनुशासनकर्त्ता है।[9] द्युलोक में स्थित सोम से ही सूर्य प्रकाशित होता है।[10] औषधियों में गर्भ को धारण कराने वाला होता है।[11] सोम को अन्न के रूप में भी कई स्थलों पर दर्शाया गया है।[12] मधु शब्द का प्रयोग प्रायशः मीठा पेय, पयस् तथा घृत के लिए ही नहीं अपितु सोम रस के लिए भी प्रयुक्त किया गया है।[13]

---

1 (i) पितेव सोम सूनवे सुशेव। 8.49.4
(ii) सोम राजन्प्रण आयूंषि तारीः। ऋ. 8, 48, 7

2 स वै देवानां वसु। श. ब्रा. 1.6.4.5

3 त्वं नः सोम विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव। ऋ. 10, 25, 7

4 दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। ऋ. 9.51.2

5 सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पति। ऋ. 9.114.2

6 त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनस्त्वं गाः। ऋ. 1.91.22

7 ऋ. 9.49.5

8 ऋ. 9.87.8

9 ऋ. 9.89.6

10 ऋ. 9.85.6

11 ऋ. 9.77.4

12 (i) इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितमः। ऋ. 8.4.12
(ii) एष वै सोमो राजा देवानामन्नं यच्चन्द्रमा। श. ब्रा. 1.6.45

13 (i) इन्द्राय गाव आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु। ऋ. 8.69.6
(ii) ऋ. 4.27.5

सोम के लिए अमृत शब्द का प्रयोग अनेकधा किया गया है।[1]

आलंकारिक शब्दों में सोम को पीयूष[2], दूध[3], लता की ऊर्मि[4] तथा मधु रस भी कहा गया है।[5] इन्दु शब्द भी सोम के लिए प्रयुक्त हुआ है। सोम मधुमत् है।[6] मधुमत् का अभिप्राय मीठे होने से है परन्तु सोम के लिए प्रयुक्त होने पर यह मधु मिश्रित सोम का बोधक बन गया है। सोम और मधु का मिश्रित रूप संकेत कई मन्त्रों में उपलब्ध होता है।[7]

ऋग्वेद के अनुसार सोम का सेवन दिन में तीन बार किया जाता है। इन्द्र सोमपान प्रातः सवन[8] में और माध्यंदिन सवन में करता है।[9] तृतीय सवन में ऋभु सोमपान करते हैं।[10] वास्तव में सोम पार्थिव लता होने के साथ–साथ दिव्य भी है।[11] सोम को स्वर्ग का शिशु कहा है।[12] एक स्थल पर बताया गया है कि सोम को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतारा गया है।[13] सोम स्वर्ग का अधिपति कहा गया है। यह स्वर्ग में

---

1 (i) नू चिन्नु वायोरमृतं विदस्येत्। ऋ. 6.37.3
(ii) ऋ. 5.2.3
(iii) वा. सं. 6.34
(iv) श. ब्रा. 9.5.1.8
(v) वा. सं. 19.72

2 (i) दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। ऋ. 95.1.2
(ii) ऋ. 3.48.2

3 अंशो पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ऋ. 9.10.7.12

4 इन्द्रायेन्दो पवमानो मनीष्यं शोरुर्मिमीरय गा इषव्यन। ऋ. 9.96.8

5 मध्वो रसं सुगभस्ति र्गिरिष्ठाम्। ऋ. 5.43.4

6 रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम् ऋ. 9.97.14

7 (i) पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्योऽव्यो वारे परिधाव मधु प्रियम्। ऋ. 9.86.48
(ii) ऋ. 9.17.8
(iii) ऋ. 9.97.11
(iv) ऋ. 9.109.19
(v) ऋ. 9.109.20

8 इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातः सावस्तव हि पूर्व पीतिः। ऋ. 10, 112.1

9 इन्द्र सोम सोमपते पिबेमं माध्यनदिनं सवनं चारु यत्ते। ऋ. 3.32.3

10 ते नूनमस्मे ऋभवो वसूनि तृतीये अस्मिन्त्सवने दधात्। ऋ. 4.33.11

11 ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र। ऋ. 10, 116.3

12 एषस्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशु। ऋ. 9.38.5

13 उच्चा ते जातमन्धसो दिविषद् भूम्या ददे। ऋ. 9.61.10

ही व्याप्त रहता है।[1] एक मन्त्र में सोम को सूर्यजा कहा है।[2]

कर्मकाण्ड में सोम का अत्यधिक महत्व है। ब्राह्मण ग्रन्थों में अग्नि के साथ सोम को जगत् का प्रमुख अंग बताया गया है। अग्नीषोमात्मकं जगत्। जगत् के आधार के रूप में सोम को अन्न[3] तथा कारणभूत जल मानते हैं। ऋग्वेद में सोम का जल से सम्बन्ध दिखाते हुए कहा गया कि सोम जल का नायक है और वृष्टि पर शासन करता है।[4] सोम ही जल का उत्पन्न कर्त्ता तथा वृष्टि करने वाला है।[5] अन्य देवों के समान सोम में भी क्षिप्रता और प्रकाश का गुण विद्यमान है। इसी कारण वैदिक देवताओं की विशेषताओं में भेद करना असम्भव प्रतीत होता है। क्षिप्रता के कारण सोम को अश्व कहा गया है।[6] यहाँ स्पष्ट ही सोम नदियों में बहने वाला अश्व है जिसका अभिप्राय जल है। सोम को अन्धकार नष्ट करने वाला महान् उज्ज्वल ज्योति बताया गया है।[7]

इन्द्र जैसे प्रमुख शक्तिशाली देवताओं को भी सोम की सहायता की अपेक्षा रहती है। सोम ही इन्द्र को वृत्र वध करने के लिए शक्ति प्रदान करता है।[8] इसी कारक से सोम को इन्द्र की आत्मा कहा गया है।[9] सोम तथा इन्द्र का रथ भी एक ही बताया गया है।[10]

सोम में उत्साह और स्फूर्ति बढ़ाने की अपूर्व क्षमता होती है।[11] सोम बुद्धिवर्धक[12], आयु बढ़ाने वाला[13], वीर्य[14], यौवन बढ़ाने वाला[15] तथा बल प्रदान करने

---

1 (i) दिवि हि सोमः। श. ब्रा. 3.4.3.13
(ii) दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः। ऋ. 9.85.9

2 हरि पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य। ऋ. 9.93.1

3 चावन्नम्। ऋ. 7.98.2

4 ईशेयो वृष्टेः........ अपां नेता ऋ. 9.74.3

5 कृण्वन्नपो वर्षयन् द्यामुतेमाम्। ऋ. 9.96.3

6 हरिं नदीषु वाजिनम्। ऋ. 9.63.17

7 बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत्। कृष्णा तमांसि जङ्घनत ऋ. 9.66.24

8 य इन्द्र वृत्रहन्तमः। य ओजोदातमो मदः। ऋ. 8.92.17

9 आत्मेन्द्रस्य भवसि। ऋ. 9, 85.3

10 इन्द्रेण सोम सरथ पुमानः ऋ. 9.87.9

11 ऋ. 1.14.4

12 ऋ. 9.97.2

13 प्रण आयुर्जीवसे सोम तारीः। ऋ. 8.48.4, 9.90.2

14 प्रजावद्रेत आभर ऋ. 9.60, 8.2.5

15 ऋ. 9.67.29

वाला है।[1] सोम समस्त मनुष्यों का कल्याण करने वाला तथा शत्रुविनाशक है।[2] ऋग्वेद में सोम को तीव्र स्वभाव[3] तथा तीखे स्वभाव वाला कहा गया है।[4] परन्तु सर्वाधिक सोम को मधुर रसवाला कहा गया है।[5] ऋग्वेद में सर्वाधिक महत्व सोम रस का मिलता है। लता से अधिक निकला हुआ रस श्रेष्ठ माना जाता है।[6] सोम रस पीत वर्ण का होता है, यह सूर्य की तरह चमकता है तथा स्वयं को किरण वस्त्रों से आवृत्त कर लेता है।[7] इसके शारीरिक गुणों को भास्वर कहा गया है।

सोम सूर्य की भाँति अपनी किरणों से पृथ्वी और स्वर्ग को परिवेष्टित करता है।[8] सोम ने सूर्य को प्रकाशित किया ऐसा वर्णन भी प्राप्त होता है।[9] जलों से सूर्य को उत्पन्न किया[10] तथा आकाश को प्रकाशित किया।[11] एक मन्त्र में कहा है कि हे सोम! तुम हमारे शरीर के रक्षक हो, क्योंकि आप शरीरों में निवास करते हो।[12] सोम अग्नि के सदृश तेजस्वी है तथा प्राणियों को समृद्ध करने में सक्षम है। यह कर्मशील, अन्यों के द्वारा अग्रहीत विश्वजित्, उद्भिद् याग को पूर्ण करने वाला, ऋषि तथा विप्र के सदृश स्तुत्य एवं पूजनीय है।[13]

एक मन्त्र में कहा गया है हे गोजित्, अश्वजित् रमणीय धन जीतने वाले विश्वजित् सोम! हमें प्रजा के लिए कल्याणकारी रत्न प्रदान करो।[14] सोम समस्त

---

1 ऋ. 9.1.4, 8.3.8

2 ज्येष्ठ उग्राणामिन्दु ओजिष्ठः। ऋ. 9.66.19, 9.1.2

3 ऋ. 1.2.3.1, 8.2.10

4 ऋ. 8.87.2

5 ऋ. 9.1.1

6 ऋ. 1.16.6

7 विश्वस्प राजा पवते स्वर्दृश ऋतस्य धीति मृषिषाढ वीवशत्।
यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीना समष्ट काव्यः। ऋ. 9.76.4

8 स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण। ऋ. 9.41.5

9 एष सूर्यमरोचयत् पवमानो विचर्षणिः। ऋ. 9.28.5

10 जनयन् रोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम्। दृ 9.42.1

11 अधि द्यामस्थाद् वृषभो विचक्षणोऽरुरुचद्वि दिवो रोचना कविः। ऋ. 9.85.9

12 त्वं हि नस्तन्वः सोम गोपा गात्रे गत्रे निषसत्थो नृचक्षाः। ऋ. 8, 48.9

13 अयं क्रत्नुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित्सोमः ऋषिर्विप्रः काव्येन। 8.79.1

14 पवस्व गाजिदश्वजिद् विश्वजित् सोम ख्यजित्। प्रजावद्रत्नमाभरं ऋ. 9.59.1

प्रजा को दुष्टाचण से पृथक् करने वाला है।[1] सोम को ज्ञान–मार्ग का कवि कहा गया है।[2] सोम सबका राजा है, सब को सुखदर्शन कराने के लिए पवित्र करता है। ऋषियों में श्रेष्ठ इसीलिए ज्ञान का पान सदैव चाहता है, बुद्धियों का पिता और इसका ज्ञान अनभिभूत है।[3] वह सोम ऋषि है, विप्र है, प्रजा का नेता है, प्रबल दीप्तिमय है, धीर आदि गुणों से युक्त है, काव्य से मन को हरने वाला, वही इन वाणियों का जो बुद्धिस्थ गूढ रहस्य हैं, उसे जानता है।[4] एक मन्त्र में कहा गया है कि सोम जत्थों के बराबर बलशाली, अप्रतिम वीर, सहनशील, जेता, धन का यथायोग्य बांटने वाला, तीव्र शस्त्रधारी, अस्त्रों का शीघ्र प्रयोग करने वाला युद्ध क्षेत्र में जिसकी चोट कोई नहीं झेल सकता। ऐसा सोम हमें पवित्र कर।[5]

ऋग्वेद के नवम मण्डल के 133 सूक्त में 'पवमान सोम' का वर्णन किया गया है। सोम की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि सोम ज्ञान के मन्दिर में उत्पन्न हुआ है।[6] सोम उत्तम कर्म करने वाला विचक्षण और कवि है।[7] उपदेश करने वाले सोम संसार को पवित्र करता है।[8] सोम धन की वृद्धि तथा पवित्र करने वाला है।[9] सोम के विषय में कहा गया है कि सोम ने काव्यों की रचना की।[10] सोम को उत्तम वीर भी कहा गया है।[11] सोम वाणी का स्वामी है।[12] सोम को

---

1 त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर। ऋ. 9.59.3

2 पवमान ऋतः कविः। ऋ. 9.62.30

3 विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृश ऋतस्य धीतिमृषिषाडवीवशत् पिता मतीनामसमष्ट काव्य 9.76.4

4 ऋषिविप्रः पुरएता जनानामृभुषीर उशना काव्येन।
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम्। ऋक्. 9.87.3

5 शूरगामः सर्ववीरः साह वाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा हमत्स्वषाढः साह्वान प्रतनासु शगूम्। ऋक्. 9.90.3

6 सोमाः ऋतस्य सादने सुता। ऋ. 9.12.1

7 विचक्षणः सुक्रतुः कविः सोम। ऋ. 9.12.4

8 गृणानाः सोमाः पवन्ते। ऋ. 9.13.3

9 ते देवासः नः सहस्त्रिणं रयि पवन्तान्। ऋ. 9.13.5

10 सोमा असृजम विश्वानि काव्या। ऋ. 9.23.1

11 सोमः सुवीरः ऋ. 19.23.5

12 वाचः पतिम् सोमम्। ऋ. 9.26.4

सर्वविद्या निष्णात तथा मनस्पति कहा गया है।[1] सोम को स्वावलम्बी दर्शाया गया है तथा धन उत्पन्न करने वाला कहा गया है।[2]

एक मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे सोम जिसका कोई उद्धार नहीं करता तुम उत्साहवश उनका भी परिष्कार करने में तत्पर रहते हो। तुम प्रजा की कामनाएँ पूरी करने वाले तथा समस्त प्रजा पर दिव्य दृष्टि रखने वाले हो।[3] सोम एक कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व वाला तथा अपनी कर्मपरायणता से इन्द्र को भी सदैव बढ़ाता रहता है।[4] यह सोम सूर्य के समान विश्व प्रकाशक है। यह ज्ञान के मार्ग में दौड़ता है अथवा सूर्य के सदृश प्रकाशित रहता है।[5] यह सोम सूर्य के सदृश समस्त भुवनों के ऊपर अपनी पवित्र किरणों से पवित्र करता हुआ विद्यमान है।[6] सोम कभी न हारने वाला विजेता है, इस प्रकार का सोम हमें पवित्र करे।[7] सोम अपनी स्तुति करने वाले मनुष्यों को पाप से बचाता है।[8]

सोम के निकटतम देवता इन्द्र हैं। इन्द्र को वृत्रवध–कारिणी शक्ति पाने के लिए सोमपान की अपेक्षा रहती है। फलतः इस पेय का नाम वज्र बताया गया है और सोमदेव को वृत्रहन की उपाधि मिली है। सोम दोनों लोकों को उत्पन्न करता है और विश्व को प्रभावित करता है। वैदिक देवताओं में से केवल सोम को ही दुष्टों का हन्ता बताया गया है।[9] वह दानवों को नष्ट कर देता है। यजुर्वेद में वर्णन मिलता है कि सोमिन् ब्राह्मण अपने शत्रुओं को दृष्टि मात्र से भस्म कर सकते हैं।[10] इन्द्र के माध्यम से सोम का वायु के साथ सम्बन्ध मिलता है। सोम एक लता है। यह औषधियों की मूर्धन्य है, फलतः सोम औषधियों के राजा हैं। वे देवताओं, मानवों एवं समग्र पृथिवी के अधिपति हैं।

---

1 विश्वित् मनसस्पतिः ऋ. 9.28.1

2 स्वाध्यः सोमासः अक्रमः चेतनं रयि कृण्वन्तिः। 9.31.1

3 परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः वृष्टिं दिवः परिस्रवः। ऋ. 9.39.9

4 एते सोमासः इन्द्रं वर्धन्ति कर्म्मभिः। ऋ. 9.46.6

5 अयं सूर्य्य इवोपदृगयं सरांसि धावति। ऋ. 9.54.2

6 अयं विश्वानि तिष्ठति पुनातो भुवनोपरि। सामो देवो न सूर्य्यः। ऋ. 9.54.3

7 यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्स स पवस्व सहस्रजित्। ऋ. 9.55.4

8 नृनस्तोतृन् पाह्यंहसः। ऋ. 9.56.4

9 ऋ. 9.28.6

10 मै. सं. 4.8.2

3.2 आयुर्वेद में सोम का स्वरूप :–

आयुर्वेद की सुश्रुतसंहिता में सोम का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। सोम का जरा तथा मृत्युका विनाश करने वाला कहा गया है।[1] यहाँ पर सोम के 24 भेद बताए गए हैं। चरक तथा सुश्रुत में लिखा है कि सोम औषधियों का राजा है और उसके पञ्चदश पत्ते होते हैं। जो चन्द्रमा की भाँति घटते तथा बढ़ते रहते है।[2] पूर्णिमा के दिन यह लता पञ्चदश पत्तों से युक्त होती है तथा अमावस्या के दिन निष्पर्णा हो जाती है।[3] सुश्रुतसंहिता के चिकित्सा स्थान में सोम रसायन विषयक एक पूरा (29)वाँ अध्याय है। जिसमें सोमलता का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

सुश्रुत संहिता के अध्याय 29 में ही सोम के उत्पत्ति स्थलों का भी उल्लेख प्राप्त होता है। यथा– हिमालय, अर्बुद (अरावली) सह्याद्रि, महेन्द्र पर्वत, मलय, श्रीपर्वत, देवगिरि, देवसह, पारियात्र, विन्ध्य देवसुन्द तालाब, वितस्तता (झेलम) नदी के उत्तर के बड़े–बड़े भाग क्षुद्रक झील (कश्मीर झील), सिन्धु नदी आदि।[4] सुश्रुतसंहिता में सोमलता को दिव्य औषधी के रूप में वर्णित किया। सोम लता को केवल धार्मिक तथा ज्ञानी मनुष्य ही जान सकते हैं। अधार्मिक तथा कृतघ्न मनुष्यों

---

[1] जरामृत्युविनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते। चिकित्सास्थानम् 29

[2] सोमो नामौषधिराजः पञ्चदशपर्वा सोम इव हीर्यते वर्धते वा च। च. सं. चिकिस्था. अ.–1

[3] तथा सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पञ्च च।
तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च।।
एकैकं जायते पत्रं सोमस्यादृग्हस्ततः।
शुक्लस्य पौर्णमास्यान्तु भवेत् पञ्चदशच्छदः।।
शीर्य्यर्ते पत्रमेकैकं दिवसे–दिवसे पुनः।
कृष्णपक्षक्षयेश्चापि लता भवति केवला।

[4] हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रेमलये तथा।
श्रीपर्वते देवगिरौ गिरौ देवसहे तथा।।
पञ्च तेषामथो मध्ये सिन्धुनामा महानदः।
हठवत्प्लवते तत्र चन्द्रमाः सोमसत्तमः।।
तस्योद्देशेषु चाप्यास्ति मुञ्जवानशुंमानपि।।
काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्नाच्छुद्रकमानसम्।। सुश्रुतसंहिता 29, अध्याय

के लिए सोमलता अज्ञेय तथा अदर्शनीय है।[1] विशाल पत्तों वाले जिस सोम के पिता मेघ हैं, वह भूमि की नाभि में, पत्थर पर निवास करते हैं।[2]

सुश्रुतसंहिता में सोम के चौबीस भेद बताए गए हैं।[3] वस्तुतः सोम एक ही है परन्तु स्थान, रूप, रंग के कारण भिन्नता पाई जाती है। इन चौबीस सोमों के गुण तथा सेवन विधि समान है। सोम पान करने से मन पवित्र हो जाता है।[4] सोम को पीने की इच्छा से युक्त मनुष्य अनेक साधनों को एकत्रित करता था। सोमपान करने के बाद वमनादि से दोषों का बहिष्कार करता था। सभी कार्य तिथि तथा मुहुर्त के अनुसार दिए जाते थे। सोम अभिषवण की प्रक्रिया में अशुंमान सोम को शान्तिपाठ, स्वस्तिवाचन करके सोमकन्द को सोने की सुई से काटते थे। तदनन्तर स्वर्ण यागों में ही सोम रस को निकालते थे।[5]

सोम पान करने के लिए व्यक्ति सात्विक आहार–विहार करते थे। यम नियमों का पालन करना भी आवश्यक होता था। इसके साथ ही श्रेष्ठ (सज्जन) मनुष्यों के साथ ही उठना, बैठना तथा विचार करते थे। इससे स्पष्ट होता है कि विचारों की श्रेष्ठता, वाणी संयम, सत्संगति पर विशेष ध्यान देते थे।[6]

सोमपान करने से शरीर में परिवर्तन की प्रक्रिया पच्चीस दिन तक होती है। जिसका क्रमशः वर्णन किया जा रहा है–

प्रथम दिन व्यक्ति सोमपान करता है जिसकी विधि को उपरोक्त कहा जा चुका है। दूसरे दिन वमन में रक्त तथा कृमि बाहर निकलते हैं। तीसरे दिन

---

1 न तान् पश्यन्त्यधर्मिष्ठा, कृतघ्नाश्चापि मानवाः। 31–32 अध्याय

2 पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनों नाभापृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे। ऋक्. 9.82.3

3 अंशुमान् मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः।
दूर्वासोमा.........यश्चोडुपतिरुच्यते।। 29/5–8

4 रसायनं पीतवांस्तु निवाते तन्मनाः शुचिः। 29.11

5 कृत मंगल स्वस्तिवाचनः सोमकन्दं सुवर्णसूच्या विदार्य पयो गृहीयात्
सौवर्णे (सजते) पात्रे वा। सु. स. चिकि. स्था. 29

6 यमनियमाभ्यामात्मानं संयोज्य वाग्यतोऽभ्यन्तरतः सुहृदिमरुपास्यमानो विहरेत्। सु. स. चिकि. स्था. 29

कृमिमिश्रित मल आता है। चतुर्थ दिन शरीर में शोथ (सूजन) उत्पन्न होती है। फिर सभी शरीर के अंगों से कृमि निकलते हैं। पाँचवें तथा छठे दिन भी यही प्रक्रिया चलती रहती है। सातवे दिन मांस रहित शरीर हो जाता है। मनुष्य में केवल त्वचा और हड्डियाँ ही शेष रह जाती हैं। इस प्रक्रिया के दौरान मनुष्य सोम के प्रभाव से ही जीवित रहता है।[1] सातवे दिन शयन से पूर्व दुग्ध का सेवन कराया जाता था तथा स्नान भी दूध से ही किया जाता था। शरीर पर चन्दन, तिल, मुलैठी का लेप करने का वर्णन मिलता है।[2]

सोम रस पीने का परिमाण भी सुश्रुत में मिलता है। केवल मात्र एक अंजलि मात्र रस को ग्रहण करना चाहिए तथा सोमरस को शीघ्रता से पीने का विधान मिलता है। धीरे–धीरे पीना उचित नहीं।[3] सोम पीने के तदनन्तर मनुष्य को शयन का निषेध किया गया है सोम पीकर वह अत्यधिक वायु रहित स्थान पर, शुचिता के साथ निवास करे, बैठे, खड़ा रहे और भ्रमण करे परंतु लेटे (सोए) नहीं।[4] रात्रि में यदि शयन करना चाहे तो मित्रजनों से घिरा हुआ सोए।

सोम के जीर्ण होने पर वमन होता है। वमन में मनुष्य को रक्त तथा कृमि निकलते हैं। इस समय सोमपायी को ठण्डा दूध देने का विधान मिलता है।[5] अष्टम दिन शरीर में मास वृद्धि होती है। त्वचा फट जाती है, दाँत, नाखून और रोम खत्म (गिर) हो जाते हैं। नवे तथा दसवें दिन शरीर पर अणु तैल से मालिश की जाती है। खैर की छाल कषाय से स्नान करने का विधान प्राप्त होता है। ऐसा करने पर त्वचा में स्थिरता आती है। ग्यारहवें तथा बारहवें दिन भी उपरोक्त विधि का प्रयोग किया जाता था। तेरहवें दिन से सोलहवें दिन तक खैर की छाल के कषाय से ही स्नान कराया जाता है। सतरहवें और अठारहवें दिन में दन्त निकलते हैं। जिनके विषय में कहा गया है कि दान्त नोकदार स्निग्ध, स्थिर, वज्रवैडूर्य स्फटिक के

---

1 सोमपरिग्रहादेवोच्छ्वसिति। सु. स. चिकि. स्था. 29

2 तिलमधुकचन्दनानुलिप्तदेहं पयः पाययेत्। सु. स. चिकि. स्था. 29

3 पात्रेऽञ्जलिमात्रं, ततः सकृदेवोपयुञ्जीत नास्वादयन्। सु.चि. 29

4 रसायनं पीतवांस्तु निवाते तन्मनाः शुचिः।
आसीत् तिष्ठेत् क्रामेच्च न कथंचन संविशेत्।। सु. चिकि. 11, अ. 29

5 तस्य जीर्णे सोमे छर्दिरुपद्यते, ततः शोणिताम्तां कृमि व्याभिक्षं
छर्दितवते सायं श्रृतशीत क्षीरं वितरेत्।

सदृश, खट्टे आदि को सहन करने में सक्षम होते है।[1] उन्नीसवें दिन से पच्चीसवें दिन तक शाली चावलों को दूध में पकाकर दोनों समय सेवन करें। इसके अनन्तर ही रक्तवर्ण के नाखून निकल आते हैं।[2]

इसके पश्चात् केश उग जाते हैं जो स्निग्ध, स्थिर, सूक्ष्म होते हैं त्वचा का वर्ण नीलकमल, अलसी के पुष्प सदृश तथा वेद्रूर्य के सदृश होता है। इस प्रकार से सोमपान करने वाला मनुष्य नूतन शरीरधारी हो जाता है। सोमपान करके बुद्धिमान प्राणी नवीन शरीर को दस हजार वर्ष तक धारण किए रहता है। अग्नि, जल, शस्त्र और अस्त्र के द्वारा भी आयु को नष्ट नहीं कर सकता है। मनुष्य में सोम पीने से उत्कृष्ट हाथियों का बल समाहित हो जाता है।[3]

सुश्रुत सोमपान करने का अधिकारी ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को स्वीकार करता है।[4] सोमपान करने वाला व्यक्ति देवताओं के अष्टविध ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है।[5]

अभिषवण विधि करते समय जो चौबीस प्रकार के सोम बताए गये हैं उनमें से प्रथम (अंशुमान) सोम को सुवर्ण पात्र में निचोडते है तथा चान्द्रमस सोम को चाँदी के पात्र में अभिषवण करने का वर्णन मिलता है। शेष सोमों को तांबे के पात्र में मिट्टी के पात्र में तथा लोहित मृग के चर्म से बने पात्र में निचोड़ते हैं।

वस्तुतः सोम दिव्य औषधि थी जिसको अधर्मात्मा, कृतघ्न, औषध से द्वेष करने वाला द्वेषी देख भी नहीं सकता था।[6]

---

1 सप्तदशाष्टादशयोदिवसयोर्दशना जायन्ते शिखरिणः स्निग्धवर्णवैद्रूर्यस्फटिकसमाः स्थिराः सहिष्णवः। सु. चि. स्था. 29

2 तदा प्रभृति चानपैः शालितण्डुलैः क्षीर यवागूमुपसेवेत यावत् पञ्चविंशतिरितिः ततोऽस्मै दद्याच्छाल्योदनं मृदूभयकालं पयसा, ततोऽस्या नखा जायन्ते।

3 (i) ओषधीनां पति सोममुपयुज्य विचक्षणः।
दशवर्षसहस्त्राणि नवां धारयते तनुम्।। सु. स. चि. स्था. 29, अध्याय
(ii) नाग्नि न तोयं न विषं न शस्त्रं नास्त्रमेव च।
तस्यालमायुः क्षपणे समर्थानि भवन्ति हि। सु. स. चि. 29
(iii) कुञ्जराणां सहस्त्रस्य बलं समधिगच्छति। सु. स. चि. 29 अध्याय

4 (i) विशेषस्तु बललीप्रतान क्षुपकादयः सोमा ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्यर्भक्षपितव्याः।
(ii) शूद्रवर्जैत्रिसि वर्णैः सोमा उपयोक्तव्याः। सु. स. चि. अ. 29

5 अष्टगुणमैश्वर्यमवाप्येशानं देवमनुप्रविशति। सु. स. चि. अ. 29

6 न तान् पश्यन्त्यधर्मिष्ठाः कृतघ्नाश्चापि मानवाः।
भेषणद्वेषिणश्चापि ब्राह्मणद्वेषिणस्तथा। सु. स. चि. 29 अध्याय

सोम पीने से कामदेव के समान रूप, चन्द्रमा के सदृश कान्तिवान हो जाता है। वेद, वेदांगों का ज्ञान तत्त्वरूप में हो जाता है।[1]

3.3 सोम तथा आयुर्वैदिक सोम में भिन्नता :-

ऋग्वेदादि ग्रन्थों के अतिरिक्त आयुर्वेद के प्रामाणिक ग्रन्थों चरक सुश्रुतादि में भी सोम वर्णन प्राप्त होता है परन्तु ऋग्वेद के सोम और आयुर्वेद के सोम में बहुत भिन्नता प्राप्त होती है। चरक तथा सुश्रुत में उल्लेख मिलता है कि सोम पादप में 15 पत्र होते हैं। जो कि शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन एक–एक पत्ता निकलकर पूर्णमासी के दिन 15 पत्ते हो जाते हैं तथा कृष्णपक्ष में एक–एक पर्ण कम होता चला जाता है। अमावस्या के दिन लता निष्पर्णा हो जाती है। जिनका क्रम चन्द्रमा की भाँति घटता तथा बढ़ता है।[2] सम्भवतः यह भी एक प्रमुख कारण हो, जिससे सोम को चन्द्रमा कहा गया है।

3.3.1 रस अभिषवण में भिन्नता :-

ऋग्वेदादि ग्रन्थों में सोम नामक लता को कूटकर रस निकालने की विधियों का वर्णन प्राप्त होता है। सोम रस पत्थरों तथा मुसल व उलूखल से कूट कर निकाला जाता है।[3] ग्रावा ऊपर की ओर पतला तथा नीचे की ओर से मोटा होता है। सोम को कूटने से पहले चर्म पर भी रखने का विधान था।[4]

---

1 (i) कदर्प इव रुपेण कान्त्या चन्द्र इवापरः।
(ii) साङ्गोपाङ्गाश्च निखिलान् वेदान् विन्दति तत्वतः।

2 सोमो नामौषधिराजः पञ्चदशपर्णा सोम इव हीयते वर्धते च। च. सं. चिकि. स्था. अ. 1
तथा सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि पञ्चदश च।
तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च।। 20
एकैक जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा।
शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत् पञ्चदशच्छदः। 21
शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः।
कृष्णपक्षपक्षेचापि लता भवति केवला।। 22

3 यत्र ग्रावा प्रयुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे।
उलूखल सुतानामवेद्विन्द्र जलगुलः। ऋ. 1.28.1

4 अंशु दुहन्तो अध्यासते गवि। ऋक्. 10, 94, 9

सुश्रुत संहिता में सोम रस निकालने के लिए सोने की सुई[1] से सोमकन्द का विदारण किया जाता है जबकि वेद सोम को कन्दमय स्वीकार ही नहीं करता है।

3.3.2 स्वरूप भेद :–

ऋग्वेदादि ग्रन्थों में कहीं ऐसा वर्णन नहीं मिलता कि सोम लता अमावस्या के दिन निष्पर्णा तथा पूर्णमासी को पञ्चदश पत्रों से युक्त होती है। या फिर चन्द्रमा के घटने–बढ़ने से सोमलता घटती या बढ़ती है। वेद सोम को नीचे की शाखा वाला, सहस्रशाखा युक्त मानता है।[2]

आयुर्वेद में चन्द्रमा के साथ सोम के पत्ते घटते तथा बढ़ते हैं, इसलिए आयुर्वेद सोम को चन्द्रमा के रूप में भी मानता है।[3]

3.3.3 सोम प्रकार :–

ऋग्वेदादि में सोम के एक प्रकार का ही वर्णन मिलता है। जो सुरभि–सुगन्धि से युक्त है इसके अतिरिक्त सुश्रुत सोम के स्थान, नाम, आकार और वीर्य की भिन्नता से चौबीस प्रकार का वर्णित करता है।[4] अंशुमान, मुंजवान्, चन्द्रमा, रजतप्रभ, दूर्वासोम, कनीयान्, श्वेताक्ष, कनकप्रभ, प्रतापवान, तालवृन्त, करवीर, अंशवान्, स्वयंप्रभ, महासोम, गरुडाहृत, गायत्र त्रैष्टुभ, पाङ्क्त, जागत, शाम्बर, अग्निष्टोम, रैवत, गायत्र्या, त्रिपदा और उडुपति। ये चौबीस सोम सुश्रुत में बताए गए हैं।[5] सुश्रुत सोम को आज्यगन्ध युक्त भी बताता है।[6]

3.3.4 सोमपान के बाद की स्थिति :–

वैदिक साहित्य में वर्णन मिलता है कि अधिक सोम पीने से (छर्दि) वमन होता है।[7] इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि सोम पीने के लिए सामर्थ्ययुक्त शरीर होना चाहिए जो सोम जैसे दिव्य पदार्थ को भली–भाँति सहन

---

1 सोमकन्दं सुवर्णसूच्या विदार्य्य पयो गृह्णीयात्। सु. स. चि. स्था. अ. 29

2 नैचाशाखः ऋ. 3, 53,14 सहस्रवल्शः ऋ. 9.5.10

3 तथा सर्वेषामेव सोमागं पत्राणि दश पञ्च च
तानि शुक्ले.......... लता भवति केवला।। 20–22 च. सं. चिकि. स्था. अ. 29

4 सोम स्थान नामाकृतिवीर्य विशेषैर्चतुर्विशंति धा भिद्यते। सु. स. चिकि. स्था. अ. 29–4

5 अंशुमान.........यश्चोडुपतिरुच्यते। चिकि. स्था. 5–81

6 अंशुमान आज्यगन्धस्तु। सु. सं. चिकि. 23

7 मैत्रायणी संहिता 2.2.13

कर सके।

सुश्रुत संहिता में लिखा है कि सोम रस के जीर्ण होने पर सोमपायी को छर्दि होती है। उस छर्दि में कृमिमिश्रित रक्त निकलता है।[1] चतुर्थ दिन सोम पान करने वाले को शोथ होता है[2], तदनन्तर शरीर से कृमि निकलते हैं।[3] सातवें दिन मनुष्य निर्मांस हो जाता है। इसके बाद, दन्त, नख, केश, त्वचा समाप्त हो जाते है। फिर दशवें दिन के बाद त्वचा, केश, नख, दांत सभी आ जाते है।[4] तत्पश्चात् सोमपान करने वाला नए शरीर वाला हो जाता है। वेद में सोम का सर्वाधिक वर्णन मिलता है परन्तु सुश्रुत वर्णित वार्ता कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती है। आधुनिक समय में सोम को श्वास रोग दूर करने वाली औषधि के रूप में कहा जा रहा है। इस प्रकार उपरोक्त कारणों के आधार पर कहा जा सकता है कि वैदिक सोम सुश्रुतादि में वर्णित सोम से भिन्न है।

वैदिक देवताओं में सोम का महत्वपूर्ण स्थान है। अनेक देवताओं के साथ भी सोम की स्तुति की गई है। सोम अमरता प्रदान कराने वाला दिव्य पेय है। इसीलिए इसको अमृत कहा गया है। इन्द्रादि देवता अमरत्व प्राप्त करने के लिए ही सोमपान करते थे। सोम इन्द्र का घनिष्ठ मित्र है, जो इन्द्र की शक्ति बढ़ाता है। सोमपान करके ही इन्द्र वृत्र का वध करने में सक्षम होता है। इन्द्र के अतिरिक्त अन्य देवताओं का भी सोम घनिष्ठ मित्र है। मरुत उसके अन्तरंग मित्र हैं।

सोम से सम्बन्धित जितनी भी कल्पनाएँ अतिशयोक्तियाँ प्राप्त होती हैं। वे सोमसवन, या पवित्रीकरण जैसी सामान्य क्रियाओं के चहुँ ओर ही घूमती दृष्टिगोचर होती हैं। जब सोम अभिषवन के समय पत्थर से बहती धारा की तुलना लहरों से ग्रहण की जाती है। इसको प्रत्यक्ष रूप से मधु की लहर भी कहा जाता

---

1 जीर्णे सोमे छर्दिरुपपद्यते।
ततः शोणिताक्तं कृमिव्यामिश्रं छर्दितवते। सु. सं. चि. 29 अध्याय

2 श्वयथुरुपपद्यते

3 ततः सर्वांगेभ्यः कृमयो निष्क्रामन्ति।

4 निर्मातं त्वगस्थिभूतः।

है। जब दश अंगुलियों के माध्यम से रस निकालते हैं तो कहा गया है कि दस युवतियाँ सोम को उत्पन्न करती हैं। पाषाण को दस लगामों से नियन्त्रित अश्व भी कहा जाता है।

सोम की उत्पत्ति के विषय में भी अनेक आलंकारिक वर्णन हैं। उसे मूंजवान पर्वत पर उत्पन्न होने के कारण मौंजवत कहा गया है। सोम पार्थिव पौधा होते हुए भी दिव्य है। स्वर्ग से सोम को श्येन लेकर आता है।

3.4 आध्यात्मिक सोम :–

आध्यात्मिक दृष्टि से सोम शब्द परमेश्वर का वाचक है।[1] शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि सोम ही प्रजापति है।[2] अरविन्द घोष ने आध्यात्मिक पक्ष में सोम का अर्थ आध्यात्मिक आनन्द किया है। प्रत्येक मनुष्य उस दिव्यानन्द को सहन नहीं कर पाता। अतः जिसका शरीर परिपक्व है और जो प्राणी यजनकर्त्ता है वह ही सोम को धारण करने में सक्षम हो पाता है।[3] स्वामी दयानन्द सोम का अर्थ उत्पन्न जगत्, स्तुत्यमाण सुख, रस एवं औषधि आदि रूपों में वर्णित करते हैं।[4]

ऋग्वेद में सोम शब्द ब्रह्मानन्द वाचक के रूप में उद्धृत हुआ है उस ब्रह्मज्ञानरूपी रस को जानकर ही मनुष्य अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।[5]

अथर्ववेद में उल्लेख मिलता है कि यह मनुष्य शरीर देवों की नगरी है। जिसमें आठ चक्र तथा नौ द्वार हैं। इसमें सुवर्ण का कोश तथा ज्योतिर्मय स्वर्ग है।[6] यह ज्योतिर्मय कोश मस्तिष्क है और वह मस्तिष्क सोमरस से परिपूर्ण कलश

---

1. सोमः परमेश्वरः। यजुर्भाष्य 4.20
2. सोमो हि प्रजापतिः। माध्य. श. 5.1.5.26
3. अतप्ततनूर्मतदामो अश्नुते शृतास इत वहन्तस्तत्समाशत। ऋ. 9.83.1
4. सूयते उत्पद्यते यस्तं रसम् ऋ. 1.32.3
5. अपाम सोमममृता अभूम। आगन्म ज्योतिरविदाम देवान्। ऋ. 8.48.3
6. अष्टाचक्रा नवद्वार देवानां पूरयोध्या।
   तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः। अथर्व. 10.2.31

है।[1] यह सोम ही सम्पूर्ण शरीर को शक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान करता है। ऋग्वेद के अनुसार यह सोम स्वर्ग से अन्तरिक्ष में और अन्तरिक्ष से पृथ्वी पर आता है।[2] इसका अभिप्राय यह है कि सोमरस मस्तिष्करूपी द्युलोक में संचित है। वह शरीर के मध्यभाग को पवित्र करता हुआ मेरुदण्डरूपी पृथ्वी को पवित्र करता है। शरीर का शिरोभाग द्युलोक है। गर्दन का ऊपरीभाग अन्तरिक्ष है और मेरुदण्ड या केन्द्रीय नाडीजाल पृथ्वी है। सोम को रेत की संज्ञा दी गई है।[3]

वैदिक दृष्टि से सारे शरीर में फैली हुई नस नाडियाँ सोमलता हैं और इनसे उत्पन्न रस सोमरस है। यह सोम मानव शरीर का शुक्र, वीर्य तथा रेतस् है। वीर्य के संरक्षण से सोमरस बनता है। इससे मनुष्य का शरीर देदीप्यमान रहता है। यह सम्पूर्ण शरीर को एक अलौकिक आभा एवं ऊर्जा प्रदान करता है। इस सोमरस के सूख जाने से मनुष्य की इन्द्रियाँ निश्तेज हो जाती हैं। सोम सत्यप्रिय व्यक्ति में रहता है।[4] उस व्यक्ति को यह मृदुता, सरसता, सरलता प्रदान करता है, धीरे–धीरे सोम उसे ऋतम्भरा प्रज्ञा प्रदान करता है। सोम मधुर वाणी में निवास करता है जो प्रियवाणी बोलता है उसे सोम आत्मिक प्रसन्नता प्रदान करता है।[5]

सोम को मस्तिष्क का राजा कहा गया है।[6] यह मस्तिष्करूपी गुफा में संचित रहता है। विद्वान् मनुष्य ही सोम की उत्पत्ति, परिपाक एवं अन्य रहस्यों को जान पाते हैं और उसका उपयोग करते हैं।[7] अज्ञानी मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण इसे नष्ट कर देते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप वे कष्ट दुःख भोगते हैं।[8] एक मन्त्र में कहा गया है कि सप्त सिन्धु सोम के ही अनुशासन को स्वीकार करते

---

1 सोमेन पूर्णं कलशं बिभर्षि। अथर्व. 9.4.6

2 पवमानो दिवस्परि अन्तरिक्षादसृक्षत।
पृथिव्या अधि सानवि। ऋ. 9.63.27

3 रेतो वै सोमः। कौ. श. ब्रा. तै. ब्रा. 1

4 सुता ऋतस्य सादने। इन्द्राय मधुमत्तमाः। ऋ. 9.12.1

5 सोमो गौरी अधिश्रितः। ऋ. 9.12.3

6 सोमो राजा मस्तिष्कः। अथर्व. 9.7.2

7 गुहा हितं सूरः पश्यति चक्षसा। ऋ. 9.10.9

8 अमि वेन अनूषत इयक्षन्ति प्रचेतसः।
मज्जन्ति अविचेतसः। ऋ. 9.64.20

हैं। ये सप्तसिन्धु ही सप्तप्राण धाराएँ हैं।[1] एक मन्त्र में सोम को पांचजन्य पुरोहित कहा गया है।[2] सोम अपरिमित वीर्य तथा रयि को शरीर में धारण कराता है। जिससे मनुष्य सुयशस्वी बने।[3] सोम को सिन्धुमातृक कहा गया है।[4] नदीरूप नाडियों से सोम का क्षरण होता है। सोम को सनातन रस कहा गया है।[5] इसी प्रकार सोम शरीर एवं आत्मा का बल है। इससे शरीर एवं आत्मा दोनों को शक्ति तथा स्फूर्ति मिलती है। सोम अनुभवगम्य तथा आनन्दानुभूति युक्त है, जिससे समाधि तथा ऋषि दृष्टि प्राप्त होती है। इससे मनुष्य जीवन का परमलक्ष्य मोक्ष प्राप्त हो जाता है जिसके बाद कुछ पाने की इच्छा नहीं रह जाती है।

3.5 आधिदैविक सोम :–

आधिदैविक पक्ष में सोम को देवता के रूप में वर्णित किया गया है। सोम समस्त कार्य करने वाला तथा सूर्य में तेज उत्पन्न करने वाला है।[6] समस्त चराचर सृष्टि के स्वामी सोम तुम्हारा तेज सर्वत्र विद्यमान है।[7] सोम देवता से ही पृथ्वी विस्तृत हुई[8] तथा आदित्य देव बलशाली होते हैं। सोम नक्षत्रों में विद्यमान हैं।[9] सोम ने जल द्वारा अग्नि को शान्त किया।[10] सोम ने समस्त सृष्टि का निर्माण किया। समस्त ओषधी, वृष्टि, जल, गौ तथा अन्तरिक्ष को विस्तृत कर प्रकाश द्वारा तम का हरण किया।[11] सोम सबके धारक हैं।[12] सोम का द्युलोक, पृथिवी, पर्वत, औषधी और जल में तेज व्याप्त है।[13] सोम केवल पार्थिव लता मात्र ही नहीं बल्कि

---

1 तमेते सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते। ऋ. 9.66.6

2 अग्निः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम।

3 आ पवस्व सहस्त्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय। ऋ. 9.63.1

4 सिन्धुमातरम् ऋ. 9.61.7

5 दुहानः पत्नमित्पयः ऋ. 9.42.4

6 महत् सोमोमहिषश्चकार। ऋ. 9.97.41

7 पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते। ऋ. 9.83.1

8 सोमेन पृथ्वी मही। ऋ. 10, 85.2

9 अथो नक्षत्राणाम् एषामुपस्थे ऋ. 10, 85.2

10 हिमेनाग्निंघ्रंसमवारयेथाम्। ऋ. 1.116.8

11 त्वमिमा ओषधीः सोमविश्वाः। ऋ. 1.91.22

12 धर्ता दिवः ऋ. 10.76.1

13 याते धामानि दिविया पृथिव्यायां पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु। ऋ. 1.91.4

एक महान अन्तरिक्ष स्थानीय देवता भी है। सोम स्वयं अमर है तथा अमरत्व प्रदान करता है।[1] देवता लोग सोमपान अमरत्व प्राप्त करने के लिए करते हैं।[2]

छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि सोमदेव के द्वारा वर्षा होती है। सोम की आहुति देने पर अन्न उत्पन्न होता है।[3]

सोम का देवता के रूप में महत्त्व अतुलनीय है। सोमदेव को किन्हीं मन्त्रों में सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता भी कहा गया है। समस्त चराचर सृष्टि का पालनकर्त्ता के रूप में भी सोम का वर्णन मिलता है। सोमदेव दिव्यगुण से युक्त है। वस्तुतः देवता का अर्थ देने वाला किया गया है। सोमदेव भी सृष्टिस्थ प्राणियों को जल, वृष्टि, अन्न, प्रजा, वीर्य प्रदान करता है। सोम का आधिदैविक पक्ष अत्यधिक विस्तृत है। वेदों में सोमदेवता के रूप में इसका अतिगूढ अर्थ दृष्टिगत होता है।

3.6 आधिभौतिक सोम :–

आधिभौतिक पक्ष में सोम को पार्थिव पौधे के रूप में स्वीकार किया गया है। वैदिक ऋषियों के मन में इसका स्वरूप पौधे (लता) के रूप में अधिक था। इसका एक कारण यह भी रहा कि सोम का अन्य देवताओं की तरह स्पष्ट रूप से मूर्तीकरण नहीं हो सका। सोमरस स्वास्थ्यवर्धक होता है, सम्भवतः इसी कारण औषधी (भैषज्यमयी शक्ति) के रूप में इसका उल्लेख अनेकानेक मन्त्रों में प्राप्त होता है। यह वाणी को ओजस्वी बनाता है।[4] सोमपान से दृष्टिहीन को दृष्टि तथा लंगडों को चलने की शक्ति प्राप्त होती है।[5] सोमरस को पुण्यकर्त्ता मनुष्य ही ग्रहण कर सकते हैं।[6] जिनका शरीर हृष्ट–पुष्ट है वही सोमपान कर पाता है।[7] सोमरस

---

[1] अपां सोमममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम् ऋ. 8.48.3

[2] त्वां देवासो अमृताय कं पपुः। ऋ. 9.106.8

[3] (i) देवाः सोमं राजानं जुह्वति। तस्याहुतेर्वर्षं सम्भवति। छा. उप. 5.5
(ii) तस्याहुतेरन्नं सम्भवति। छा. उप. 5.6

[4] अयं मे पीत उदियर्ति वाचम्। ऋ. 6.47.3

[5] भिषक्ति विश्वं यत्तुरम्। प्रेमन्धख्यत् निः श्रोणो भूत। ऋ. 7.89.2

[6] सुकृतमामधुनो भक्षमासत। ऋ. 9.83.4

[7] ऋ. 9.83.1

के निमित्त चालीस प्रकार के सोम पात्र स्थापित किए जाते हैं[1] तथा यज्ञ में इसका प्रयोग किया जाता है।

जिस समय वनस्पति–सोम का संपेषण किया जाता है, तब मनुष्य समझते हैं कि उन्होंने सोमपान कर लिया परंतु वास्तविक सोम को मात्र ब्रह्मवेत्ता ही जानते हैं, उसको कोई अयाज्ञिक मनुष्य पान नहीं कर सकता।[2] सोम लता से अतिरिक्त वैज्ञानिक के अनुसार सोम आधिभौतिक दृष्टि से इलैक्ट्रान या कार्पसलो की सचल, व्यापनशील, स्पन्दनशील अवस्था है। ऋग्वेद में भी सोम की उत्पत्ति सूर्य एवं विद्युत से मानी जाती है।[3] वस्तुतः सोम एक प्राणदायिनी औषध है, जो जल, वनस्पतियों और गोदुग्धादि से मिश्रित की जाती हैं। औषधीय तत्व से आलोकित होकर देवत्व के निकट पहुँच जाते हैं। सोम एक लता, औषधि, देवता, जल, रस, दिव्यशक्ति का स्रोत, आनन्द की अनुभूति कराने वाला तत्व है। इससे स्पष्ट होता है कि सोम का स्वरूप आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक रूप में भी प्राप्त होता है।

---

1 षट्त्रिंशाश्चतुरकल्पयन्तश्छन्दांसि। ऋ. 10.114.6

2 सोमं मन्यते पपिवान् यत्संपिंषन्त्योषधिम्।
सोमयं ब्रह्मणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन। ऋ. 10.85.3

3 ऋ. 9.91.4.22

चतुर्थ अध्याय

अयाहुआस्का का स्वरूप तथा विशेषताएँ

चतुर्थ अध्याय
अयाहुआस्का का स्वरूप तथा विशेषताएँ

4.1 अयाहुआस्का का स्वरूप :–

भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैदिक काल से सोम का औषधि, महौषधि के रूप में तथा यज्ञानुष्ठानों में रस रूप में प्रयोग होता है। ठीक उसी प्रकार लैटिन, अमेरिकी देशों (ब्राजील, पेरु, इक्वेडोर, बोलिविया कोलम्बिया) में अयाहुआस्का नामक पेय का प्रयोग भी धार्मिक स्थलों (चर्चों) पर होता रहा है। Ayahuasca शब्द अया तथा हुआस्का से मिलकर बना है, अया का अर्थ आत्मा तथा हुआस्का का अर्थ बेल या लता है, अर्थात् आत्मा की बेल या लता। **Ayahuasca is translated as "mother of all medicine or vine of the soul"** [1] अयाहुआस्का अमेजन बेसिन के निवासियों द्वारा उपयोग में लाया जानेवाला काढा (पेय) है। अयाहुआस्का को Vine (वाइन) भी कहा जाता है।

ब्राजीली, पुर्तगाली अयाहुआस्का को Yage, Yaje, Jagube, Pharmhuasca तथा Hoasca कहते है।[2] इसके अतिरिक्त सैंटो Santo Daime या केवल Daime भी कहते हैं।

चित्र 4.1 : अयाहुआस्का बेल (लता)

[1] Ayahuasca : The Visionary and Powers of the Vine of the Soul, p. 146

[2] Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, Ed. Dennis. J

अयाहुआस्का विभिन्न वनस्पतियों के मिश्रण से तैयार किया जाता है। इसको Banisteriopsis Cappi नामक वनस्पति को कूटकर अन्य पौधों के पत्तों के साथ उबालकर निर्मित किया जाता है। इन पत्तों में सर्वाधिक Rubiaceous जीनस साइकोट्रिया तथा साइकोट्रिया वैरिडिश (Psychotria viridis) नामक तत्व होता है। इसको चक्रुना (Chacruna) और चलीपोंगा (Chaliponga) पृथक्–पृथक् नामों से भी जाना जाता है। पी. Viridis पत्तियों में Alkolaids होता है जो मन की गति को प्रभावित करता है। Alkolaids औषधीय प्रभाव में एक सहायक तत्व होता है। पौधों में सक्रिय Alkolaids तथा Banisteriopsis Caapi की छाल व DMT-Dimethyltryptamine, साइकोट्रिया वैरिडिश युक्त पत्तों के मिश्रण से अयाहुआस्का तैयार किया जाता है।[1]

चित्र 4.2 : अयाहुआस्का लता से निर्मित्त काढा

अयाहुआस्का परम्परागत रूप से अमेजन नदी के बेसिन में रहने वाले लोगों द्वारा उत्पादित काढा है। जिसमें ऊर्जावर्धक, स्फूर्तिदायक तत्व निहित है। जो शारीरिक व मानसिक शक्ति प्रदान करता है। यह काढा प्राकृतिक चिकित्सा के साथ–साथ मनोदैहिक विकारों के उपचार में प्रभावी होता है।

"अयाहुआस्का" यह नामकरण इस पेय के लिए तथा इसको तैयार करने वाले सभी पौधों के लिए किया जाता है।

अयाहुआस्का विज्ञान की दृष्टि से वनस्पति के रूप में रासायनिक तत्व है।

---

1 (i) Ayahuasca : An Enthopharmacologic History, Ed. Dennis. J, 1998
(ii) Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

इसका अध्ययन Mestizo ethnomedicine में रासायनिक प्रकृति के रूप में किया जाता है। प्रयोगात्मक तरीकों का अध्ययन Neuropharmacology में किया जाता है।[1] इसमें मुख्य रूप से तन्त्रिका तन्त्र का शरीर विज्ञान और मनोरोग का समाधान किया जाता है।

अयाहुआस्का को निर्मित करने की विधि विस्तृत रूप में वर्णित की गई है। इस प्रक्रिया में बेल को सर्वप्रथम काटा जाता है, इसके पश्चात् जल से शुद्ध किया जाता है। इसका वर्ण बभ्रु तथा गेरु (लाल) बताया गया है।[2] अयाहुआस्का बनाते समय स्त्री तथा पुरुष वर्ग में कार्यों का विभाजन किया जाता है। कम श्रम से होने वाले कार्य यथा–पत्तियों को धोना, काटना इत्यादि कार्य स्त्रियों के लिए होते हैं। पुरुषों के द्वारा कठिन परिश्रम वाले कार्य सम्पन्न किए जाते हैं।

चित्र 4.3 : कार्य–विभाजन

अयाहुआस्का का निर्माण करते समय देश, काल, परिस्थिति का विशेष ध्यान रखा जाता है। अमेजन के जंगलों में एक पत्थर से निर्मित कप प्राप्त हुआ, जो इक्वेडोर (Ecuadoren) की पास्ताज (Pastaza) संस्कृति में पाया गया जिसका समय 500 ई.पू. से 50 ई.पू. निर्धारित किया गया। इससे यह इंगित होता है कि

---

1 An Enthopharmacologic History, Ed. Dennis. J

2 Ayahuasca : From Enthnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

अयाहुआस्का औषधि 2500 साल पहले से प्रयोग में लायी जाती है। अमेजन बेसिन के जंगलों में मुख्यरूप से Shamanism सम्प्रदाय के लोग अयाहुआस्का का प्रयोग करते हैं। जो धार्मिक व सामाजिक, उत्सवों आदि क्रियाकलापों में इसे पेय के रूप में उपयोग करते हैं।

इसके अतिरिक्त मूल प्रागैतिहासिक रूप से अयाहुआस्का अमेजन बेसिन के जंगलों में उत्पन्न हुआ परन्तु सर्वप्रथम अयाहुआस्का पश्चिमी Ethnographers के द्वारा जाना गया। वास्तविक रूप से इसका प्रमुख श्रेय अमेजन बेसिन के निवासी जनजातियों को ही प्राप्त है। इसके पुरातात्विक प्रमाण भी प्राप्त हुए। इक्वेडोर में मिट्टी के बर्तन, मानव मूर्तियाँ, ट्रे, ट्यूब इत्यादि इन वस्तुओं को देखकर इसका समय 1500 से 2000 ई.पू. निर्धारित किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ विशिष्ट साक्ष्य भी प्राप्त हुए जैसे वनस्पति पाउडर, नास, ट्रे, मोमा, तंबाकू और Hullucinogenic Anadenanthera प्रजातियों से प्राप्त नास, ये सब अयाहुआस्का के प्रयोग से सम्बन्धित हैं।[1] इससे अयाहुआस्का के प्रागैतिहासिक प्रमाण दृष्टिगत होते हैं। पूर्व कोलम्बियाई संस्कृति में इन सबका प्रयोग एक नशीले किस्म के पौधे के लिए किया जाता रहा है, या यों कहे कि इन पौधों को नशे के लिए उपयोग में लाया गया।

अयाहुआस्का में Hallucinogens तत्व होता है, यह दो पौधों के संयोजन से तैयार किया जाता है। Psychotria के पत्ते तथा DMT (Dimethyltryptamine) के मिश्रण के साथ Banisteriopsis को मिलाकर अद्वितीय पेय निर्मित किया जाता है।[2]

4.2 विशेषताएँ :–

अयाहुआस्का एक विशिष्ट (अमूल्य) पेय माना जाता है। अयाहुआस्का पीने में कटु होता है। जिसके पान से अलौकिक आनन्दानुभूति होती है। अयाहुआस्का, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक आनन्द के लिए विशेष रूप से उपयोग में लाया

---

[1] Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, Ed. Dennis. J

[2] Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

जाता है। इसमें औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसकी एक प्रमुख विशेषता है कि यह पवित्र काढा है जिसका उपयोग चर्चों के धार्मिक समूहों में किया जाता है अयाहुआस्का का आकर्षण का केन्द्र मुख्यतः पारलौकिता है। परमात्मा की प्राप्ति हेतु तथा विभिन्न रोगों के उपचार में इसका प्रयोग किया जाता है।

इसके अतिरिक्त अयाहुआस्का ने शहरी मध्यम वर्ग के अनुयायियों को आकर्षित किया। इन्हीं लोगों के द्वारा चिकित्सा अनुसन्धान तथा चर्चों में वैधानिक रूप से प्रयोग किया जाने लगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी अयाहुआस्का का प्रयोग होता है। इसके साथ सामाजिक जीवन में भी शान्ति का समावेश होता हैं इसके पान से शराब, तम्बाकू यौन दुराचार की प्रवृत्तियाँ समाप्त होती हैं।[1]

वर्तमान काल में अयाहुआस्का के लिए क्वेशुआ शब्द पेरू और इक्वोडोर देशों में प्रयोग किया जाता है। कोलम्बिया में बेल तथा पीने के लिए Tukano (तुकानो) Yage तथा Yaje का प्रयोग करते हैं।[2] अन्य देशी भाषाओं के सहित लुइस एडुआर्डो ने 42 शब्द अयाहुआस्का के लिए सूचीबद्ध किए हैं।[3]

4.2.1 औषध गुण :–

अयाहुआस्का औषध विज्ञान का महत्वपूर्ण कारक है। इसमें औषध गुण विद्यमान हैं। चिकित्सा क्षेत्र में अयाहुआस्का का प्रयोग औषधीय प्रयोजनों के लिए किया जाता है। दक्षिण अमेरिकी वैज्ञानिक अयाहुआस्का का प्रयोग नृविज्ञान, मनोरोग विज्ञान, तथा औषध विज्ञान के लिए करते हैं। अयाहुआस्का वनस्पति के रूप में प्राप्त होती है।[4] ब्राजील अमेजन में स्थित कई दक्षिण अमेरिकी लोग अयाहुआस्का का धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयोग करते हैं। चिकित्सकों ने अयाहुआस्का में Psychoactive पदार्थ की खोज की। Shamans[5] और इसके अनुयायियों ने इसके पान से मनशान्ति तथा शारीरिक सुरक्षा में लाभ प्राप्त किया।

---

1 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

2 Ayahuasca : Entheogenic and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

3 Ayahuasca Visions : The Religious Iconography of a Peruvian Shaman, Ed. Luis Luna Eduardo and Pablo Amaringo

4 Ayahuasca From Ethnobatany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

5 एक धार्मिक समूह जो इस पेय का प्रयोग परमात्मा के साक्षात्कार हेतु करता है।

अयाहुआस्का कई पौधों की प्रजातियों के मिश्रण से बनाया जाता है। विभिन्न रोगों की चिकित्सा हेतु इस पवित्र काढे का अनुष्ठान किया जाता है। अयाहुआस्का में रासायनिक यौगिक विद्यमान है परन्तु कुछ दक्षिण अमेरिकी वैज्ञानिकों ने इसका अध्ययन (शोध) Ethnobotany के रूप में किया। औषध विज्ञान तथा नृविज्ञान पर कार्य चलता रहता है। अयाहुआस्का पीने के अनन्तर ऊर्जा का अत्यधिक प्रवेश होता है। अयाहुआस्का एक अत्यन्त शक्तिशाली Hallucinogen औषध है। इस तत्व के प्रयोग से शारीरिक हानि नहीं होती है। अयाहुआस्का के प्रयोग से माइग्रेन, एड्स, कोनिक दर्द, कैंसर, अस्थमा, अवसाद, शराब की समस्यां (हैपेटाइटिस–सी) आदि रोगों की निवृति होती है।[1] अयाहुआस्का में Psychoactive viridis और Banisteriopsis Caapi दोनों लताएँ मिश्रित की जाती हैं। इन दोनों में समान गुण विद्यमान है। P. Viridis की तरह Banisteriopsis रेचक तथा शुद्धि करने वाला तत्व है। यह तत्व माइग्रेन की बिमारी में अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

अयाहुआस्का में जो Banisteriopsis Caapi है वह प्रतिरक्षा (प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि), परजीवियों का विरोध, सुधा वृद्धि, इत्यादि लाभ पहुँचाने में सहायक होती है। इसके अतिरिक्त भूलने (विस्मृत होने) की बिमारी में भी अयाहुआस्का का प्रयोग करते है। मनोरोगों के लिए नकारात्मक विचारों के ह्रास हेतु भी इसका इस्तेमाल करते है।[2] इसका प्रभाव शारीरिक–मानसिक स्थिति पर अत्यधिक पड़ता है। अतः अयाहुआस्का का चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है।

अयाहुआस्का लेने पर छः घण्टे तक शारीरिक असन्तुलन (हलचल) बना रहता है। इस अवधि के दौरान यह मानव चेतना को प्रभावित करता है। इससे सर्वाधिक ह्रदय प्रभावित होता है। ह्रदय की गति तथा रक्तचाप बढ़ता है। अयाहुआस्का में एक साइकेडेलिक तत्व पाया जाता है, जिसके कारण से दृष्टि

---

[1] Ayahuasca Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

[2] (i) Ayahuasca : Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari
(ii) Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, Ed. Dennis. J

तथा श्रवण शक्ति प्रभावित होती है। इसके साथ तीव्र वमन तथा दस्त के कारण शरीर की शुद्धि होती है।[1]

डेनिस लूना और टावर्स 1995 में अयाहुआस्का तथा उसके ethnaparmacological उपयोग में विभिन्न पौधों के मिश्रण विषय पर सारांश प्रस्तुत करते हैं। सन् 1970 से 1995 तक पच्चीस वर्ष की अवधि में इन्होंने अयाहुआस्का पौधे में विद्यमान Phytochemical ज्ञान के संकलन से जैविक सारांश प्रस्तुत किया। वैज्ञानिक अयाहुआस्का की चिकित्सा, वनस्पति और औषधीय पक्ष को सम्यक् रुपेण लोकचिकित्सा हेतु उपयोग करते हैं।[2] अयाहुआस्का काढा तैयार करने में पौधों के Ethnobotanical ज्ञान के अतिरिक्त पचास से अधिक विभिन्न प्रजातियों के पौधे उपयोग में लिए जाते हैं। ये पौधे तीस वनस्पति परिवारों से ग्रहण किए जाते हैं। सभी को मिश्रित करके अयाहुआस्का निर्मित करते हैं। इन समस्त पौधे में औषधीय शक्ति रहती है।[3]

अयाहुआस्का प्रभावशाली रोगों के इलाज के लिए पारम्परिक मूल्यवान चिकित्सीय क्षमता है। इसमें चिकित्सा के लिए पर्याप्त उपचार क्षमता विद्यमान है। अमेजन के निवासियों को इसकी औषधि के रूप में चिकित्सीय अनुप्रयोगों का ज्ञान है अयाहुआस्का को चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अयाहुआस्का औषधीय गुणों के कारण चिकित्सा पद्धतियों में सर्वव्यापक घटक के रूप में जाना जाता है।

4.2.2 मनोवैज्ञानिक प्रभाव :–

अयाहुआस्का मनस् चेतना को जागृत करने वाला तत्व है। इसके पान से आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। प्राचीनकाल से ही अयाहुआस्का का प्रयोग चर्चों या धार्मिक स्थलों पर मन–शान्ति के लिए ही प्रमुख रूप से किया

---

1 Experiences of Encounters with Ayahuasca- “The vine of the soul”, Ed. Anette Kjellgren

2 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

3 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

जाता है। अयाहुआस्का पीने वाला मनुष्य मननशील, शान्त, ईमानदार तथा मितव्ययी गुणों से युक्त होता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक (लौकिक) जीवन में उच्चस्थितियुक्त, प्रज्ञावान्, ऊर्जावान्, आशावान् (सकारात्मक विचार युक्त) एकाग्रता तथा सुदृढ़ स्मृति वाला होता है। अयाहुआस्का जीवनशैली में एक कान्तिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम होता है। इसके पीने से दुःख निवृत्ति तथा आन्तरिक प्रसन्नता स्वतः उत्पन्न होती है। शोधकर्ता वैज्ञानिक अयाहुआस्का को एक काढे के रूप में स्वीकार करते हैं, जो एक दिव्य पेय है।[1]

अमेरिकी सदस्यों ने मनोरोग मूल्यांकन कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें मन को प्रभावित करने वाले तत्व अयाहुआस्का में अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। ब्राजील के बाहर एक धार्मिक अनुष्ठान में प्रयोग करने पर सर्वाधिक आँकडे मनोवैज्ञानिक पक्ष में प्राप्त हुए। शोधकर्त्ताओं ने 32 विषयों पर विश्लेषण किया। जिसमें नशीली दवाओं के प्रयोग से मनोवैज्ञानिक शारीरिक आँकड़े एकत्रित किए। जिनमें से वैज्ञानिकों ने सैंटो डेमेन के सदस्यों ने सम्पूर्ण स्वास्थ्य मानसिक वृद्धि तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्राप्त किया।

Hoasca परियोजना के तहत 1993 में ब्राजील UDV चर्च के वयस्कों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव की जाँच की गई। तत्पश्चात् ब्राजील में अधिकांशतः अयाहुआस्का का अनुसन्धान वयस्को पर किया गया। UDV ने किशोर आबादी तथा नियन्त्रण के संज्ञानात्मक मूल्यांकन के परिणामों पर 2005 में एक रिपोर्ट निकाली, जिसमें ध्यान, एकाग्रता, बुद्धि, स्मृति, मनस्थिति शारीरिक प्रक्रिया का आंकलन मिलता है।[2] दक्षिण अमेरिका में अयाहुआस्का का प्रयोग मनोरोग विज्ञान, तन्त्रिका विज्ञान तथा वनस्पति के लिए लोकप्रिय है। पश्चिमी अनुसन्धानकर्ताओं ने मनोचिकित्सा के क्षेत्र में अयाहुआस्का का प्रयोग काढे के रूप में किया है।

---

1 Ayahuasca.com. Spiret and Healing > Shamanism, on the origins of Ayahuasca

2 (i) The Retual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae
(ii) Ayahuasca.com

अयाहुआस्का का मनोवैज्ञानिक प्रभाव आकर्षक गुणों से युक्त होता है। मनोवैज्ञानिक प्रभाव केवल प्रयोगात्मक वैज्ञानिक अनुसन्धान के माध्यम से ही सम्भव होता है। इस प्रयोगात्मक अनुसन्धान में सर्वाधिक ब्राजील चर्चों (UDV और सैंटो डेमेन) के सदस्यों को शामिल किया गया। प्रायोगिक समूह में जिन मनुष्यों पर प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है, वे सभी 26 वर्ष से 48 वर्ष की मध्य अवधि के मनुष्य माने जाते हैं। UDV के सदस्य 10 से 18 वर्ष की आयु वाले हैं। मानसिक विकारों के निदान के लिए अयाहुआस्का के प्रयोग का वर्णन मिलता है।[1] सम्भवतः इसका कारण यह भी रहा है कि ये लोग धार्मिक प्रवृत्ति के साथ–साथ शान्त प्रकृति के होते हैं। इनका चित्त सामान्य प्राणियों की अपेक्षा निर्मल होता है। किसी भी शुद्ध वस्तु पर प्रयोग का अधिक श्रेष्ठ परिणाम परिलक्षित होता है।

पश्चिमी देशों के अमेजन क्षेत्रवासी Shamans (शामान) के साथ मिलकर अयाहुआस्का चिकित्सा के द्वारा मानसिक इलाज करने में सक्षम है इस बात का दावा करते हैं कि अयाहुआस्का के धार्मिक अनुष्ठान से मानसिक तथा शारीरिक सुधार होता है। अयाहुआस्का अल्पकालीन स्मृति को सुदृढ़ बनाने में सक्षम होता है। इसके साथ–साथ यह स्नायविक क्षमता में वृद्धि करता है।[2]

शैनन (Shanon) कहते हैं कि परम्परागत प्राकृतिक विज्ञान को शैक्षणिक विषयों (औषध विज्ञान, जैव विज्ञान और नृविज्ञान) के माध्यम से अयाहुआस्का को पूर्णरूप से स्पष्ट नहीं कर सकते हैं। तर्क देते हैं कि संज्ञानात्मक मनोविज्ञान अयाहुआस्का के लिए सबसे उपयुक्त है। इसके माध्यम से ही ज्ञान का ज्ञात होता है। शैनन (Shanon) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान को मनुष्य के सम्बन्ध में अधिक प्रभावशाली मानते हैं। ध्यातव्य है कि अयाहुआस्का पीने पर सपने और अनुभव स्वदेशी तथा गैरस्वदेशी के सूक्ष्म रूप से समान होते हैं। शैनन का तर्क है कि

---

1 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

2 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

अयाहुआस्का मानव मन के परीक्षण के उपकरण है[1] तथा अयाहुआस्का अनुभवों का ज्ञान कराता है जो मनःचेतना के द्वारा ही सम्भव होता है। इसीलिए संज्ञानात्मक प्रक्रिया सार्वभौमिक है। इसी के माध्यम से सभी विषयों (मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान आदि) का प्रतिनिधित्व किया जाता है। शैनन ने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान पर दस वर्षों तक अनुसन्धान किया है। इस विवरण में अयाहुआस्का अनुभव और सैद्धान्तिक अनुसन्धान द्वारा कुछ मुद्दे उठाए कुछ तथ्यों में अनुभव की विविधता दृष्टिगोचर होती है। अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक वातावरण में प्रासङ्गिक विचारों की भिन्नता है। अनुभव की गति आदि टिप्पणियों को एकत्रित कर सैद्धान्तिक विवरण प्रस्तुत किया है। शैनन का मानना है कि अयाहुआस्का का नियमित सेवन करने से अनुभव की श्रृंखला दृष्टिगोचर होती है जो मन को प्रभावित करती है।[2] शैनन ने असहमत होते हुए कहा है कि क्या अयाहुआस्का असाधारण मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करता है? मानव मन तथा चेतना के विषय में क्या कर सकता हैं? Shanon (शैनन) ने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का अनुशासनात्मक परिपेक्ष्य में अयाहुआस्का के विषय में कार्य किया है।[3]

4.2.3 आध्यात्मिक प्रभाव :–

अमेजन निवासी अयाहुआस्का पेय को धार्मिक अनुष्ठानों में पीते हैं। धार्मिक स्थलों में उपयोग होने के कारण अयाहुआस्का आध्यात्मिक क्षेत्र में भी स्वीकार किया जाता है। अमेजन के क्षेत्र में आत्म शान्ति के लिए मनुष्यों का विशेष प्रयत्न रहता है। अयाहुआस्का पीने से अमेजनवासी अपना प्रवेश एक जादुई (अलौकिक) दुनिया में मानते हैं। अयाहुआस्का अनुभवों के द्वारा अध्यात्म में प्रवेश कराती है। अध्यात्म की प्रवृत्ति इसके पीने से ही सम्भव होती है। अयाहुआस्का पीने से श्रद्धा की स्थिति उत्पन्न होती है। इसको आत्मा की बेल भी कहा जाता है।[4]

---

1. Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper
2. *वही*
3. Shanon, B (2002) The Antipodes of the Mind Charting the Phenomenology of the Ayahuasca, Experience, Oxford University
4. Experiences of Encounters with Ayahuasca “The vine of the soul”, Ed. Anette Kjellgren

अयाहुआस्का काढा अमेजन क्षेत्र के स्वदेशी समुदायों और समकालीन धार्मिक संगठनों (चर्चो) के द्वारा उपयोग में लाया जाता है। इसके पीने के अनन्तर महत्वपूर्ण परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। अयाहुआस्का पीने से अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है। इसके पान से ईश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क का अनुभव होता है।

अमेजन निवासियों का कहना है कि इन पौधे में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान है और इसके औषधीय गुण भी अत्यधिक प्रभावशाली हैं। अयाहुआस्का के प्रयोग की मूल विधि को Shamanic भली–भाँति समझते हैं इस सम्प्रदाय के लोग अयाहुआस्का को अलौकिक दुनिया से सम्पर्क बनाने के लिए पीते हैं। ये Shamanstic अनुष्ठान के दौरान गहरी चेतना में लीन हो जाते हैं। इस सम्प्रदाय का मानना है कि अयाहुआस्का पीने वाले मनुष्य समाज के हित में कार्य करते हैं। रोगनिवृति तथा उपचार में इसका प्रयोग करते हैं।[1]

आध्यात्मिकता से जीवन उत्कृष्ट बनता है। इसके द्वारा परमात्मा के सम्पर्क के साथ–साथ आत्मशान्ति, शक्ति, ज्ञान, भक्ति प्राप्त होती है। ब्राजील के लोग धार्मिक अनुष्ठानों में आध्यात्म को विशेष स्थान देते हैं।[2]

वैज्ञानिक Anette Kjellgren बाह्य और आन्तरिक स्थिति में वास्तविकता की खोज करते हैं। इसमें Anette Kjallgren आन्तरिक अनुभूति को अहम मानते हैं। अतीत तथा भविष्य के ज्ञान को अधिग्रहण करने की क्षमता का वर्णन करते हैं। व्यक्तिगत विकास के लिए अध्यात्म की इच्छा को महत्वपूर्ण मानते हैं। अध्यात्म के द्वारा ही आत्म जागरूकता को तलाशते हैं। आध्यात्मिक शक्ति से ही रचनात्मकता का समावेश मानते हैं। इनके अनुसार अध्यात्म ही नरक से स्वर्ग तक ले जाने वाला सोपान है।[3] Anette Kjellgren लिखते हैं कि अयाहुआस्का पीने के अनन्तर आध्यात्मिक दुनिया में विविध प्राणियों की आत्माओं के साथ सामना करना पड़ता

---

1 Ayahuasc : Shamanism Shared Across Cultures, Ed. Luis Eduardo Luna

2 The Ritual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae

3 Experiences of Encounters with Ayahuasca “The vine of the soul”, Ed. Anette Kjellgren

है। पशुओं (साँप, बंदर, बाज इत्यादि) की आत्माओं के साथ सामना करना पड़ता है। Shamanic परम्परा में पशुओं की आत्माओं को देखा जाता है। इसलिए अनुभवकर्त्ता Shamanism में रूचि रखते हैं। Shamanic इस अनुभव को अन्य आत्माओं के साक्षात्कार द्वारा वर्गीकृत करते हैं–

(1) पशुओं के साथ आत्मा की मुठभेट।

(2) पेड़–पौधों की आत्माओं का सामना।

(3) मनुष्यों की आत्माओं का सामना।

(4) भगवान के साथ सीधे सम्पर्क।[1]

आध्यात्मिक अनुभव गहरी शान्ति, आनन्द तथा परमानन्द को प्रदान करता है।

उत्तरी यूरोप में अयाहुआस्का पीने के प्रभाव को लेकर सर्वेक्षण आयोजित किया गया। जिसमें शोधकत्ताओं ने 25 विषयों से एकत्रित आँकड़ो का विश्लेषण विधि द्वारा प्रयोग किया। जिनमें से छः विषय सभी प्रतिभागियों में समान रूप से प्राप्त हुए–

(1) अयाहुआस्का पीने से पहले प्रेरणा तथा लक्ष्य

(2) संकुचित भय की स्थिति

(3) अनुभव में अचानक परिवर्तन

(4) पारदर्शितायुक्त अनुभव

(5) प्रतिबिम्बात्मक अनुभव स्थिति

(6) व्यापक दृष्टि, दिशा निर्धारण की क्षमता[2]

---

1 Experiences of Encounters with Ayahuasca “The vine of the soul”, Ed. Anette Kjellgren

2 Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

वैज्ञानिक डावसन के अनुसार Daime चाय पीने का अनुभव आन्तरिक चेतना को प्रभावित करता है तथा मोक्ष का एहसास कराता है।[1]

ब्राजील से इतर क्षेत्रों में भी आध्यात्मिक अनुभव के लिए इस पेय का प्रयोग होता है। यह सांस्कृतिक परियोजना महत्वपूर्ण है। इससे इतर देशों की संस्कृति, सभ्यता, कला आदि विशेष परिस्थितियों का भी ज्ञान होता है।[2] Macrae का तर्क है कि ब्राजील चर्च अयाहुआस्का से ही संस्कारित होते हैं। ये लोग सामाजिक एकता को बचाने में सक्षम होते हैं। इसके साथ ही Psychoctive पदार्थ का प्रयोग समकालीन लोगों में आदर्श स्थापित करता है। ध्रुवीकरण डे (ब्राजील के लेखक) सैंटो Daime चर्च के एक पादरी का वर्णन करते हैं। अयाहुआस्का पीने से अनुभव के साथ–साथ मोहभंग का वर्णन करते हैं। शारीरिक और मानसिक चिकित्सा का गहरा अनुभव करते हैं। **ध्रुवीकरण डे** सैंटो डेमेन में अयाहुआस्का का अनुष्ठान करते हैं। इन्होंने सैंटो डेमेन के सिद्धान्त और दार्शनिकता को अपनी आत्मकथा में निरुपित किया।[3]

मानवविज्ञानी Luna (लूना) और Amaringo का भी आध्यात्मिक अनुभव की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान है। अयाहुआस्का को कभी–कभी मौत की बेल भी कहा जाता है। क्योंकि इसके पीने से पुराने विचार नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य को नया जीवन प्रदान करती है। इस आध्यात्मिक अनुभूति से जीवन सार्थक लगता है। इसके प्रभाव से अलौकिक तथा अवर्णनीय अनुभव होता है।[4] अयाहुआस्का के प्रभाव को अमेजन वासी आत्मिक अनुभूति स्वीकार करते हैं। इनकी दृष्टि में यह कोई माया नहीं अपितु एक अलौकिक दुनिया की झलक है। जहाँ आत्माओं का वास है। आत्मा परमानन्द का अनुभव करती है। अयाहुआस्का के पारम्परिक प्रयोग

---

1 Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

2 The Retual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrac

3 Ayahuasca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

4 Ayahuasca Visions : The Religious Iconography of a Peruvian Shaman, Ed. Luis Luna Eduardo and Pablo Amaringo

से अनुभवजन्य ज्ञान, दिव्यशक्ति, आध्यात्मिक अनुभूति होती है। अयाहुआस्का शक्तिप्रद पेय है इसके पीने से निम्न कार्य करने की क्षमता प्राप्त होती है–

(1) शत्रु समूह को विनष्ट करने की शक्ति

(2) अपने लक्ष्य को निर्बाध रूप में प्राप्त करना

(3) शिकार, युद्धादि, अन्य अभियान से पूर्व विशेष सुरक्षा के लिए

(4) जनजातीय धार्मिक विश्वास में सहयोग के लिए

(5) भविष्य की सुरक्षा तथा भविष्य जानने के लिए

(6) सुख प्राप्ति दुःखनिवृत्ति के लिए

(7) रोगों की निवृति के लिए

(8) परमेश्वर से सम्पर्क हेतु

इत्यादि कारणों के लिए अयाहुआस्का का पान करते हैं।[1] श्मिट मानवविज्ञानी अपने 15 महीनों के अन्वेषण कार्य में सैंटो डेमेन CEU समुदाय के सदस्यों की धार्मिक प्रथाओं का अध्ययन करते हैं। वह दैनिक दिनचर्या पर विशेष ध्यान देता है कि अयाहुआस्का पीने से पानकर्त्ता में क्या परिवर्तन होता है? वह पूर्ववत् सभी क्रियाएँ करता है या परिवर्तन होता है? यदि परिवर्तन होता है तो कितने प्रतिशत।

गैर ब्राजीलाई तथा ब्राजीली लोगों की गहरी आध्यात्मिक प्रवृति को तीर्थ यात्रा के रूप में वर्णित करता है। श्मिट नैतिक प्रवचन और प्रथाओं में स्थिरता प्रदान करने की कोशिश करता है। निष्कर्षतः नैतिकता पर ध्यान देना ही संस्कार है। जो धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष जीवन के सभी पहलुओं में मार्गदर्शन प्रदान करता है।[2]

---

1 Ayahuasca Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper

2 *वही*

इस प्रकार से अयाहुआस्का का आध्यात्मिक क्षेत्र भी महत्वपूर्ण है। इस पहलू के द्वारा मनुष्य जीवन में आत्मिक शान्ति प्राप्त करता है।

अयाहुआस्का मानव जाति का एक सहजीवी सहयोगी तत्व है। मानवविज्ञानी जेरेमी का तर्क है कि अयाहूआस्का की अनुभूति द्वारा अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है इसके साथ ही स्वाभाविक ज्ञान की प्राप्ति होती है। परन्तु आधुनिक समय में आणविक जीव विज्ञान के द्वारा अयाहुआस्का की भी वैज्ञानिक खोज हो रही है। इससे वैज्ञानिक विश्वदृष्टि का ज्ञान होता है। परंतु Shamans संस्कृति तथा संत के द्वारा इसको पान करके साहस के साथ अन्तः ज्ञान की जागृति के उदाहरण मिलते हैं। इस तरह के विचार दो धाराओं को प्रभावित करते हैं, वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक। वास्तव में आध्यात्मिकता से सम्पर्क अधिक रहता है क्योंकि वैज्ञानिक खोज तक वे वस्तुएँ प्राचीनकाल के समय जैसी यथावत् नहीं रहती हैं। चाहे वह सोम हो या अयाहुआस्का।

पंचम अध्याय

सोम तथा अयाहुआस्का का सांस्कृतिक अध्ययन

पंचम अध्याय
सोम तथा अयाहुआस्का का सांस्कृतिक अध्ययन

भारतीय संस्कृति में धर्म एवं अध्यात्म का अत्यन्त महत्व है। ज्ञान, कर्म, उपासना (भक्ति) ये तीन धर्म के तीन साधन माने जाते है। "वेदोऽखिलो धर्म मूलम्"[1] वेद ही धर्म का मूल माना जाता है। संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान–विज्ञान सभी वेदों में ही समाहित है। सभ्यता देश विशेष के अनुसार दूसरे देशों की सभ्यताओं से पृथक् हो सकती है, परन्तु संस्कृति तो सम्पूर्ण विश्व की समान ही होती है क्योंकि सभी प्राणियों का आन्तरिक विकास एक ही पद्धति से होता है। संस्कृति व्यक्ति, कुल, समाज, जाति तथा विश्वभर के समक्ष आदर्शों की प्रतिष्ठा करती है। ये आदर्श परम्परा में परिपालित तथा पोषित होकर आने वाली संतति को प्रेरणा देते रहते हैं। वस्तुतः संस्कृति मानवता का मेरुदण्ड है। इसी श्रृंखला में जहाँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों का उल्लेख किया जाता है वहाँ सांस्कृतिक पक्ष स्वतः ही अवतरित हो जाता है अर्थात् जहाँ उपर्युक्त चारों पक्षों पर विवेचन किया जाए वही सांस्कृतिक अध्ययन माना जाता है। सांस्कृतिक ज्ञान संस्कृति के उदात्त स्वरूप तथा वास्तविक मानव धर्म की चेतना को जागृत करता है। किसी भी देश, समाज, जाति और सम्पूर्ण आदर्शों, सामाजिक परम्पराओं, धार्मिक, आध्यात्मिक मन्तव्यों और जीवन के निर्वाह के लिए की गई चेष्टाओं का अन्तर्भाव संस्कृति में समाविष्ट हो जाता है।

5.1 सामाजिक उपयोगिता :–

प्राचीन समाज का निर्माण वर्णव्यवस्था और आश्रम व्यवस्था पर आधारित है। ऋषियों ने समाज का विभाजन चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में तथा चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम के रूप में किया

[1] मनु. 2.6

है। मानव जीवन को सम्पूर्ण रूप से व्यवस्थित करके आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए आश्रमों में विभाजित किया गया। वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।[1] वर्ण व्यवस्था के उद्भव के साथ ही चारों वर्णों के कर्त्तव्य कर्मों का विभाजन हुआ। ब्राह्मण को बुद्धि सम्बन्धी कार्य, क्षत्रिय को समाज की रक्षा सम्बन्धी कार्य, वैश्य को व्यापार, धनादि से समाज का पालन पोषण तथा शूद्र को समाज की सेवा करने का दायित्व प्राप्त हुआ। इसका तात्पर्य यह है कि यथायोग्य या सामर्थ्यानुसार कार्यों का विभाजन किया गया।

सामाजिक परिपेक्ष्य में प्राप्त साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि भौतिक जीवनोपयोगी साधनों को भी वर्णक्रम के अनुसार विभाजन किया गया। खाद्य पदार्थों में ब्राह्मण सोम का भक्षण करते थे। क्षत्रिय वनस्पतियों का रस वैश्य के लिए दही तथा शूद्रों के लिए जल का विधान मिलता है।[2] ब्राह्मण समाज में सर्वाधिक ज्ञानवान् तथा श्रेष्ठ माना जाता था। ब्राह्मण सोमपान इसीलिए भी करते थे कि सोम पीने से सभा में विजय प्राप्त करते थे।[3] सोम एक दिव्य पेय माना जाता है। इसके पीने से उत्साह और उमंग, स्फूर्ति का संचार होता है।[4] मनुष्य जाति में ब्राह्मण को सोमपान के लिए प्रथम श्रेणी में रखा जाता है।[5] समाज में अन्य वर्णों (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की अपेक्षा ब्राह्मण वर्ग अत्यधिक आदरणीय वर्ग माना जाता था।

इसका एक कारण कर्मकाण्ड माना जाता है क्योंकि ब्राह्मण वर्ण ही पुरोहित रूप में इस कार्य को सम्पन्न करता था। साधारण गृह्य यज्ञ पुरोहित के बिना भी सम्पन्न हो जाते थे, परन्तु श्रौत यज्ञों में पुरोहितों की सहायता अपरिहार्य मानी

---

1 ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यःकृतः।
उरु तदस्य यद्वैश्य पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।। ऋ. 10, 90

2 ऐ. ब्रा. 37.4

3 ऐ. ब्रा. 3.2

4 ऋ. 1.14.4

5 ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो.......स सोमं प्रथमः पपौ स चकार रसं विपम् अथर्व. 4.6.1

जाती है।[1] ब्राह्मण ऋत्विक् रूप में सोमपान करता था, इसीलिए इसे आपायी विशेषण से भी सम्बोधित किया गया है।[2] यजुर्वेद में वर्णन मिलता है कि सोमिन् ब्राह्मण अपने शत्रुओं को दृष्टिमात्र से भस्म कर देते है।[3] यज्ञों में सोम का प्रयोग किया जाता था। अतः पूर्णरुपेण ब्राह्मण के आधिपत्य में सोम रहता था। इन्हीं कारणों से ब्राह्मण का वर्चस्व भी रहा। सोम ब्राह्मणों का संज्ञान प्रदान कराता है जिससे ब्राह्मण सद्बुद्धि को प्राप्त करके यथार्थ ज्ञान को प्राप्त कर सके।[4] शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि ब्राह्मणों को ही सोमपान का अधिकार है।[5]

सोम स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद माना जाता है। सोम अन्धों की दृष्टि तथा बधिरों को श्रवण शक्ति प्रदान करता है। इसी कारणवश सोम को औषधि कहा गया। समाज में सोम का महत्वपूर्ण स्थान विद्यमान था।

5.2 आर्थिक उपयोगिता :—

ऋग्वेदीय काल में सुदृढ़ तथा समुन्नत अर्थव्यवस्था का वर्णन मिलता है। मनुष्य अनेक प्रकार के धन, स्वर्ण, चाँदी, गौ इत्यादि धन—धान्य की कामना करते थे।[6] कर्मकाण्डों का विधान भी आर्थिक सम्पन्नता का सूचक माना जाता है। यज्ञ समाप्ति पर दक्षिणा में गौ, स्वर्ण, चाँदी के आभूषण आदि बहुमूल्य वस्तुएँ दक्षिणा में दी जाती हैं। अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत कृषि, पशुपालन वाणिज्य तथा शिल्पकला का महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुओं का क्रय—विक्रय अर्थात् खरीदना बेचना ये दोनों कार्य ऐश्वर्य की वृद्धि करते है। सोम के विषय में वर्णन मिलता है कि यज्ञानुष्ठान के समय सोम खरीदा जाता था। सोम का क्रय तथा विक्रय करते समय विक्रेता सोम के बदले स्वर्ण, आभूषण, गौ इत्यादि मूल्यवान् वस्तुएँ मांगता था। यजमान

---

1 ऐ. ब्रा. 40.1

2 (i) अपायस्त्याग दानादिना धनादीनां त्यागकारी। ऐतरेय लोचनम्, पृ. 71
(ii) वैदिक इण्डेक्स भाग—2, पृ. 89

3 मै. सं. 4.8.2

4 सोम राजन्त्संज्ञानभावपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् 11.1.26

5 ब्राह्मणानां स (सोमः) भक्षः श. ब्रा. 12.7.22

6 अस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्.........वयं स्याम पतयो रयीणाम्। ऐ. ब्रा. 17.5

विक्रेता को स्वर्ण तथा गौ प्रदान करता था। सोम बहुमूल्य पदार्थ माना जाता था। इसके बदले में यजमान को गौ देनी पड़ती थी। अजा, अनडवान, उष्ट् आदि पशुओं में गाय का सर्वाधिक महत्व माना जाता है। गौ प्राप्त करने के लिए प्रार्थनाएँ की जाती थी।[1] सोम को गाएँ के दूध के साथ मिलाया जाता है इसलिए सोम को गवाशिर[2], यवाशिर[3] तथा दध्याशिर[4] कहते हैं। व्यापार के क्षेत्र में सोम को पूजनीय देव माना जाता है। सोम देवता के रूप में व्यापारीगण व्यापार शुरू करने से पहले लाभ प्राप्ति के लिए सोम देवता का आह्वान करते है। सोम को प्रातः स्मरणीय देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है।[5] सोमक्रय करते समय बभ्रु पिनांक्षी सोमक्रयणी गाय का वर्णन मिलता है।[6] यजमान गौ के बदले सोम खरीदता है। सोम का वर्ण तथा गाय को वर्ण समान माना जाता है।[7]

कौषितकी ब्राह्मण में चार वस्तुओं से सोम खरीदने का वर्णन मिलता है।[8] शतपथ ब्राह्मण में दस वस्तुओं के बदले में सोम खरीदा जाता है।[9] सोम खरीदते समय अध्वर्यु तथा सोम विक्रेता के मध्य सम्वाद होता था, उसका ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णन मिलता है–

अध्वर्यु सोमविक्रेता से – क्या राजा सोम बेचना चाहते हैं?

सोमविक्रेता – हाँ बेचना चाहता हूँ।

---

1 ऐ. ब्रा. 3.2.37.7

2 (i) सोममिन्द्रं गवाशिरम् ऋ. 3.42.1
(ii) इममिन्द्रं गवाशिरं यवाशिरं च न पिब। अथर्व. 20, 24.7

3 यवाशिरम् ऋ. 3.42.1

4 सोमासो दध्याशिरम् ऋ. 5.51.7

5 (i) प्रातः सोममुतं रुद्रं हवामहे, 3.16.1
(ii) येन धनेन प्रणमं चरामि, धनेन देवा धनमिच्छमानः।
तस्मिन् इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो। अथर्व. 3.15.6

6 सा या बभ्रु पिनासी गौः सा सोमक्रयणी। श. ब्रा. 3.3.1.14

7 (i) सोमो वै बभ्रुः। श. ब्रा. 7.2.4.26
(ii) स हि सौम्यो यद् बभ्रुः गौ। श. ब्रा. 5.2.5.12

8 तं वै चतुर्भिः क्रीणाति गवा चन्द्रेण वस्त्रेण छागया। कौ. ब्रा. 7.10

9 तं वै दशभि. क्रीणीयात्। श. ब्रा. 3.3.3.18

अध्वर्यु – मैं आपसे खरीदना चाहता हूँ।

सोमविक्रेता – ले लीजिए।

अध्वर्यु – कला से सोम को खरीदना चाहता हूँ।

सोम विक्रेता – भूयो वा अत सोमो राजार्हति।

अध्वर्यु – भूयो एवातः सोमो राजार्हति, महांस्त्वेव

गोर्महिमेत्यध्वर्यु गौ वै प्रतिधुक, तस्यै शृतं, तस्यै शर, तस्मैमस्तु, तस्या आतंचन, तस्यै नवनीतं, तस्यै घृतं तस्या आमिक्षा, तस्यै वाजिनमिति, शफ से खरीदना चाहता हूँ। इसी तरह प्रार्थना करता है।

सोमविक्रेता – भूयो अतः सोमो राजार्हति।

अध्वर्यु – मैं अर्द्ध से खरीदना चाहता हूँ।

सोमविक्रेता – भूयो वा अतः सोमो राजर्हति।

अध्वर्यु – पद से खरीदना चाहता हूँ।

सोमविक्रेता – भूयो वा अतः सोमो राजार्हति।

अध्वर्यु – मैं गौ से सोम खरीदना चाहता हूँ।

सोमविक्रेता – ठीक है, सोम बेचता हूँ यह बताओं और क्या–क्या दोगे?

अध्वर्यु – सोना, वस्त्र, बकरी, गौ, बैल युगल तथा तीन गाएँ तुझे देता हूँ।[1]

---

[1] (i) श. ब्रा. 3.3.31–4
(ii) का. श्रौ. सू. 7.8.1–14

इससे स्पष्ट होता है कि क्रमशः कला, शफ, पद, अर्द्ध तथा गौ से पाँच बार मोल किया जाता है इसके पश्चात् स्वर्ण, वस्त्र, बकरी, गौ, बैल की जोड़ी आदि वस्तुएँ सोमविक्रेता को सोम के मूल्य रूप में समर्पित की जाती है।[1]

सोम की आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका थी। सोमयाग के पश्चात् दक्षिणादि का दान तत्कालीन समुन्नत अर्थव्यवस्था का द्योतक है। सोम के क्रय–विक्रय से पृथक् अनेक वस्तुएँ हैं जो सोम से सम्बन्धित होने पर निर्मित की जाती थी। सोमलता को जिन तख्तों पर कूटा जाता है उसे अभिषवण फलक कहते हैं। ये तख्त काष्ठ से निर्मित होते थे।[2] जिनका निर्माण स्वयं उपयोगकर्ता करते थे जिस मिट्टी के घडे में सोम को धुलकर शुद्ध किया जाता है, उसे आधवनीय कहा जाता है।[3] सोमयाग में एक मिट्टी से निर्मित 'उदञ्चन' नामक पात्र का प्रयोग किया जाता है। इससे घडे से सोमरस को निकाला जाता है।[4]

सोम के लिए उलूखल, मूसल के प्रयोग का वर्णन मिलता है। इनका निर्माण स्वयं मनुष्य ही करते थे। उलूखल पलाश वृक्ष से तथा मूसल खदिर नामक वृक्ष से बनाए जाते थे। इनसे अतिरिक्त पत्थर के उलूखल मूसल का वर्णन मिलता है। सोमयाग में ग्रह–पात्र की आवश्यकता भी होती है, जिसका निर्माण काष्ठ से किया जाता है। ग्रह पात्र का प्रयोग द्रोण कलश को ढ़कने के लिए तथा घडों से सोम रस निकालने के लिए प्रयोग में लिया जाता है।[5] सोम को छानने के लिए दशापवित्र नामक वस्त्र का प्रयोग करते है।[6] इसका निर्माण सूत, ऊन तथा कुशा से किया जाता है। प्रत्येक घर में सूत कातने का कार्य होता था। वस्त्र निर्माण कला तत्कालीन संस्कृति और सभ्यता को दर्शाती है। सोम को द्रोण कलश में

---

1 श. ब्रा. 3.3.3.3–4

2 ऐ. ब्रा. 35.6

3 ऐ. ब्रा. 35.6, 35.9

4 ऐ. ब्रा. 35.6, 35.9

5 ऐ. ब्रा. 11.1, कौ. ब्रा. 16.1–2

6 ऐ. ब्रा. 35.6

रखा जाता था इसका निर्माण मिट्टी, लकड़ी तथा धातु से होता है।[1] सोम को शुद्ध करने पर पूतभृत घडे में रखा जाता था, यह मिट्टी से निर्मित होता है। सोम को लोहे से पीसने का वर्णन भी मिलता है।[2]

इन सभी वस्तुओं का निर्माण तत्कालीन समाज में मनुष्य अपने घरों में ही करते थे। इनके आयात निर्यात भी सम्भवतः किए जाते होगे। प्राचीन समय में आर्थिक स्थिति को स्थिर बनाने के लिए पशुपालन तथा कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि के अन्तर्गत सोम का क्षेत्र वनस्पति तथा औषध के रूप में दृष्टिगोचर होता है। सोम को वनस्पतियों का राजा कहा गया है।[3] वनस्पतियाँ मानव जगत् के प्राण माने जाते है।[4] यजुर्वेद में वनस्पतियों को जीव–जगत् को आनन्द, उल्लास, प्रसन्नता और प्रमोद देने वाला कहा गया है।[5] ऋग्वेद में वृक्ष तथा वनस्पतियों को काटने का निषेध मिलता है क्योंकि वनस्पतियों के द्वारा ही प्रदूषण नष्ट होता है।[6]

सोमलता का रस मधुर होता है। इस वनस्पति के द्वारा वैद्य लोग अनेक रोगों की चिकित्सा भी करते है। आयुर्वेद में अनेक रोगों की निवृत्ति हेतु सोम का वर्णन प्राप्त होता है।[7] तैत्तिरीय संहिता में कहा गया है कि प्राण, व्यान की शुद्धि के लिए सोम का प्रयोग किया जाता है। सोमपान से हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति मिलती है।[8] सोम के लिए गौ को उत्कृष्ट भक्षण बताया गया है।[9] सम्भवतः सोम के क्रय करते समय गाय का विशेष महत्व दृष्टिगोचर होता है। सोम जैसा

---

1 वैदिक इण्डेक्स, प्रथम भाग, पृ. 285 तथा 431
2 रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम् ऋ. 9.1.2
3 सोमो वीरुधाम् अधिपतिः अथर्व. 5.24.7
4 (i) प्राणो वनस्पतिः कौ. ब्रा. 12.7
(ii) प्राणो वै वनस्पतिः ऐ. ब्रा. 2.4, 2.10
5 (i) औषधयो मुदः। यजु. 18.38
(ii) औषधयो वै मुदः। 9.4.1.7
6 मा काकम्बीरम् उद्वृहो वनस्पतिम् अशस्तीर्वि हि नीनशः। ऋ. 6.48.17
7 सु. सं. 29वाँ अध्याय
8 (i) प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा। तै. सं. 1.2.6.1
(ii) हृदे त्वा मनसे त्वा। तै. सं. 1.3.13.1
9 गाव सोमस्य प्रथमस्य भक्षः

बहुमूल्य पेय गौ से खरीदा जाता था इसीलिए सोम के लिए गौ का महत्व भी स्वतः सिद्ध है। गौ को अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। गौ ऐश्वर्य, उत्तम बुद्धि, बलवीर्य, कान्ति प्रदान करने वाली होती है। गौ घृत, दुग्ध इत्यादि अन्नों से तृप्त करने वाली होती है।[1]

मृत्योपरान्त भी अपनी त्वचा से मानव की सेवा करती है। अनेक मन्त्रों में उल्लेख मिलता है कि गौ चर्म पर बैठकर सोमरस निकालते है।[2] वेदों में अनेक स्थलों पर व्यापार के स्वरूप का स्पष्ट विवरण मिलता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि हे मानव तू सैंकड़ों हाथों से संग्रह कर तथा हजार हाथों से दान कर।[3] जिसका तात्पर्य है कि आयात कम करें, निर्यात अधिक करें। वस्तुतः बुद्धिमान वहीं है जो आयात कम तथा निर्यात अधिक करता है तभी व्यापार फलीभूत होता है ऋग्वेद में सिन्धु नदी की आर्थिक समृद्धि का वर्णन प्राप्त होता है।[4] सिन्धु नदी अश्व, रथ, वस्त्र, आभूषण अन्नादि से परिपूर्ण होती है। इसी प्रकार समृद्धि के संकेत प्राप्त होते हैं।

5.3 राजनीतिक उपयोगिता :–

ऋग्वैदिक काल में जहाँ सांस्कृतिक विकास में विविध सामाजिक, आर्थिक संस्थाओं का प्रादुर्भाव हो रहा था वहीं राजनीतिक संगठन का वर्णन मिलता है।

वैदिक काल में समाज में व्याप्त बुराईयों एवं अपराधों के निवारण हेतु, दुष्टों को दण्ड देने के लिए न्याय व्यवस्था का निर्माण किया गया। मनु ने राजा के विषय में स्पष्ट कहा है कि जब संसार में अराजकता छायी हुई थी, तब परमेश्वर ने राजा की सृष्टि की।[5] किन्हीं मन्त्रों में सोम को राजा के रूप में वर्णित किया है। विश्वजित् सोम! हमे प्रजा के लिए रत्न प्रदान करें।[6] सोम प्रजा को दुष्टाचरण

---

1 गोमती घृतवती पयस्वती अथर्व. 3.12.2

2 अंशुं दुहन्तो अध्यास्ते गवि। ऋ. 10, 94.9

3 शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर। अथर्व. 3.24.5

4 ऋ. 10.75.8

5 अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्वतो विद्रुते भयात्। रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः। मनु. 7.3

6 विश्वजित् सोम, ऋ. 9.5.9

से पृथक् करने वाला है।[1] सोम शासक के रूप में नेतृत्व करने वाला है।[2] ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार देवासुर संग्राम में असुरों ने देवों को परास्त कर दिया। इस पर देवों ने विचार–विमर्श करने पर कहा कि राजा न होने के कारण हम असुरों से हार जाते हैं। इसलिए हमकों राजा का चयन करना चाहिए। उन्होंने सोम को अपना राजा बनाकर सब दिशाओं में विजय प्राप्त की।[3]

कौषीतकि ब्राह्मण में कहा गया है कि एक बार देवों को असुरों ने प्राची और उदीची दिशाओं के मध्य में रोक लिया। तब देवों ने इन दोनों दिशाओं में सोम का राजा बनाकर असुरों को भगा दिया।[4] वेदों में इन्द्र को सम्राट कहा गया है। अग्नि, सोम, वरुण, विष्णु, मित्र, अश्विनौ, पूषा आदि देवताओं पर सूक्ष्म दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि इन्द्र सम्राट है और सोम, अग्नि, वरुण, विष्णु आदि विभागाध्यक्ष तथा मन्त्री हैं। इन्द्र के लिए 14 बार सम्राट शब्द का प्रयोग मिलता है।[5] इन्द्र को अतिराज तथा अग्नि विष्णु, मरुत्, ऋभु आदि को 'इन्द्रवन्तः' इन्द्र के अधीन कार्य करने वाला कहा गया है। अग्नि का दूत रूप में वर्णन मिलता है।[6] सोम को न्याय विभाग का मन्त्री तथा न्यायधीश कहा गया है। सोम का विश्वचर्षणी विशेषण न्यायप्रियता को घोषित करता है। 'सत्यशुष्मः' तथा सत्यकर्मा विशेषणों से सोम सत्य का रक्षक कहा गया है।[7]

वेदों में स्पष्ट रूप से न्यायधीश, न्यायवित् शब्द प्राप्त नहीं होते हैं। महर्षि दयानन्द ने इन्द्र, सोम, आदित्य देवों की न्यायधीश के रूप में अर्थ योजना की

---

1 त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर। ऋ. 9.59.3

2 पुर एता जनानाम्। ऋ. 9.87.3

3 देवासुर वा एषु लोकेषु समयतन्त..........तांस्तेऽसुा अजयन्..........
ते देवा अब्रुवन्नराजतया वै नो जयन्ति। राजानं....................
सोमं राजानमकुर्वंस्ते सोमेन राजा सर्वादिशोऽजयन्। ऐ. ब्रा. 3.3

4 असुरा वा अस्यां दिशि...................सोमं राज्यायाभ्यषिञ्चन्त, ते सोमेन राज्ञैभ्यो लोकेभ्योऽसुराननुदन्त। कौ. ब्रा. 7.10

5 इन्द्र ज्येष्ठां उशतो यक्षि देवान्।

6 अग्ने यासि दूत्यम्

7 वैदिक अर्थव्यवस्था, डॉ. महावीर

है।[1] अथर्ववेद में भी सोम के लिए कहा गया है कि हे सौम्यगुण सम्पन्न सोम! आप राष्ट्र को स्थिर करें।[2] इसके अतिरिक्त कहा गया है कि सोमगुण युक्त न्यायकर्ता असत्य का नाश तथा सत्य को प्रतिष्ठित करें।[3] एक मन्त्र में सोम को शक्तिशाली योद्धा के रूप में निरुपित किया गया है। युद्धक्षेत्र में सोम के समक्ष कोई स्थिर नहीं रहता है।[4] सोम उत्तम वीर है जो प्रजा का रक्षण तथा पालन करता है।[5] ऋग्वेद में अजेय योद्धा के रूप में सोम का वर्णन मिलता है। सोम का व्यक्तित्व कई रूपों में दृष्टिगोचर होता है। सोम एक योद्धा है, राजा, कवि तथा न्यायधीश है। इसके अतिरिक्त राजनीति के क्षेत्र में इन्द्र का सम्राट के रूप में वर्णन मिलता है, उस प्रसङ्ग में सोमपान का विशेष माहात्म्य है। इन्द्र सोमपान करके ही शत्रुसमूह का संहार करते है। इन्द्र को वृत्रवधकारिणी शक्ति पाने के लिए सर्वदा सोमपान की अपेक्षा रहती है। इन्द्र सोम के घनिष्ठ मित्र भी कहे जाते हैं।[6] सोमपान करके इन्द्र युद्ध के लिए तत्पर रहते हैं।[7] इन्द्र के अतिरिक्त अन्य देवता भी सोमपान करते थे, परन्तु सोमपान के लिए इन्द्र अत्यधिक उत्सुक प्रतीत होते हैं। इन्द्र तथा सोम शब्द क्रमशः इदि परमैश्वर्य तथा षु प्रसवैश्वर्यर्ययोः धातुओं से निष्पन्न होता है। इस धात्वार्थ के बल पर ही ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम को पशु[8], दधि[9], अन्न[10], रस[11], औषध[12] आदि अनेक अर्थों में स्पष्ट किया गया है।

---

1 (i) इन्द्र नयेश विद्वन्। ऋ. 6.21.8 (दया. भा.)
(ii) सोमः सुखैश्वर्यकारको न्यायः। ऋ. 1.136.4 (दया. भा.)
(iii) आदित्यानाम् अखण्डित न्यायाधीशानाम्। यजु. 25.6 (दया. भा.)

2 परीमं सोममायुषे महे क्षत्राय धत्तन। अथर्व. 19.24.3

3 सोमोऽवति हन्त्यसत्। अथर्व. 8.1.12

4 ऋ. 9.90.3

5 सोमः सुवीरः 9.23.5

6 इन्द्र विन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनु राय ऋध्याः। ऋ. 8.48.2

7 हृत्सुपीतासोयुध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऋ. 8.2.12

8 पशवो हि सोमः। श. ब्रा. 12.7.2.2

9 सोमो वै दधि। कौ. ब्रा. 8.9

10 अन्नं सोमः। श. ब्रा. 3.3.4.24

11 रसः सोमः। श. ब्रा. 7.3.13

12 सौम्या ओषधयः। श. ब्रा. 12.1.1.12

ये सभी वस्तुएँ ऐश्वर्य प्रदान करती है। सोम को श्री भी कहते है।[1] इन्हीं तथ्यों को समक्ष रखते हुए ऋग्वेद में कहा गया है कि हे इन्द्र राजन्! तू ऋतु के अनुसार ऐश्वर्य (सोम) का पान कर ये ऐश्वर्य (इन्दवः) तुझे प्राप्त होवे, तुझे हर्षित करने वाले होवे तथा तुम्हारे राज्यकोश में रहें।[2] इस व्याख्या भाग में राजा ऋतु के अनुसार ऐश्वर्य पान करे से अभिप्राय है कि प्रत्येक ऋतुओं में नाना प्रकार वस्तुओं उत्पन्न होती हैं। उनका आयात निर्यात करके राजकोष में वृद्धि करें। एक अन्य मन्त्र में स्पष्ट किया गया है कि प्रजाओं को राज्य कर देने में उद्यत रहना चाहिए। इन्द्र राजा का ऐश्वर्य (सोम) प्राप्ति के लिए आह्वान करते है।[3]

सम्भवतः इन्द्र विद्वान् के लिए प्रयुक्त किया गया है। विद्वान् राजा प्रजाओं से कर प्राप्त करें। एक स्थल पर मिलता है कि जो राजा को कर रूप में ऐश्वर्य प्रदान करते हैं उन्हीं का मंगल तथा रक्षण राज्य द्वारा किया जाता है। जो मनुष्य राज्य को कर नहीं देता है राजा उसकी गौ, भूमि इत्यादि वस्तुओं को अधिकृत कर लेता है।[4] राजनीतिक परिवेश में सोम का राजा के रूप में भी वर्णन मिलता है। परन्तु भिन्न–भिन्न मन्त्रों में भिन्न–भिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होते है। युद्धादि के क्षेत्र में विजय होने के लिए सोमपान किया जाता रहा है। वस्तुतः सोम का वनस्पति के रूप में अधिक वर्णन मिलने से विद्वान लोग सोम को देवता के रूप में अधिक स्पष्ट नहीं कर पाए।

5.4 धार्मिक उपयोगिता :–

धर्म के क्षेत्र में सोम का विशिष्ट स्थान माना जाता है। वैदिक काल में यज्ञ संस्था धर्म का एक विशिष्ट अंग थी। विभिन्न देवों के उद्देश्य से सोमरस की आहुति यज्ञ में दी जाती हैं। ऋग्वैदिक काल में यज्ञ संस्था विशाल नहीं थी परंतु

---

1 श्री वै सोमः। श. ब्रा. 4.1.39

2 इन्द्र सोमं पिब ऋतुनाऽत्वा विशन्तिन्दवः। मत्सरासस्तदोकसः। ऋ. 1.15.1

3 मरुत्वन्तं हवामहे इन्द्रमा सोमपीतये। ऋ. 1.23.7

4 य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै क्रणोति। ऋ. 10, 160.3

काल के साथ–साथ यज्ञ प्रक्रिया भी दुरुह तथा जटिल हो गई। कर्मकाण्ड वेदों में अत्यधिक विस्तृत रूप से विद्यमान है। सोमलता को अभिषवण करके सोमयज्ञ किया जाता है। सोम अभिषवण पत्थरों के द्वारा किया जाता है। अभिषवण से पूर्व सोम को जल से धोया जाता है।[1] तदनन्तर पत्थर पर पीसकर सोमरस निकालते है।[2] सोम को फलक नामक पात्र में रखते है। सोमाभिषव दो प्रकार से किया जाता है। (1) महाभिषव तथा (2) क्षुल्लाभिषव।

5.5 महाभिषव :–

ताण्ड्य ब्राह्मण के अनुसार सोमशोधन करते समय सोम धारा को टूटने नहीं देना चाहिए, क्योंकि धारा के टूटने से यज्ञ विछिन्न हो जाता है।[3] महाभिषव प्रक्रिया में सोम को अध्वर्यु, प्रतिप्रस्थाता, नेष्टा, उन्नेता चार भागों में बाँटकर सोम पर प्रहार करके रस निकालते है। रस निकालते समय निग्राभ्या जल के छींटे मारते है।

निग्राभ्य जल से सोम को सींचकर तीन बार अभिषवण किया जाता है। प्रथम अभिषव में आठ बार, द्वितीय अभिषव में ग्यारह बार और तृतीय अभिषव में बारह बार सोम को कूटा जाता है। कामना भेद से संख्या भी भिन्न हो जाती है। अगर यजमान पशु की कामना करे तो अध्वर्यु प्रत्येक अभिषण में सोम को पाँच बार कूटे, यदि ब्रह्मवर्चस् क कामना करे तो अध्वर्यु को चाहिए कि वह प्रत्येक अभिषव में सोम आठ बार कूटे। इस अवसर पर एक महत्वपूर्ण कृत्य का उल्लेख किया गया है कि प्रत्येक प्रहारवर्ग[4] के साथ अध्वर्यु होता के चमस में से जल सोम अंशुओं पर डालकर दो ऋचाओं[5] के साथ निग्राभवाचन करे।[6]

---

1 सोता हि सोममद्रिभिरेमेनमप्सु धावत। ऋ. 8.1.17

2 हिन्वन्ति अद्रिभिः। ऋ. 9.32.2

3 अच्छिन्नं पावयन्ति यज्ञञ्चैव प्राणांश्च सन्तन्वन्ति सन्ततं पावयन्ति यज्ञस्य सन्तत्यै। ता. ब्रा. 6.6.19

4 अष्टप्रहारात्मक प्रथमवर्ग, एकादशप्रहारात्मक द्वितीयवर्ग तथा द्वादशप्रहारात्मक तृतीयवर्ग।

5 प्राणपागुदगधराक् सर्वतस्त्वा दिश आ धावन्तु। अम्ब निष्पर समरीर्विदाम्। त्वमंग प्रशंसिषा। देवः शविष्ठ मर्त्यम्। न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रबीमि ते वचः। वा. स. 6.37

6 ऋ. 1.84.19, तै. सं. 1.4.1

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अध्वर्यु तीन बार सोम पर प्रहार करता है तथा सोम एकत्रित करता है, तदनन्तर चार बार निग्राभ क्रिया करता है।[1]

अभिषव के सम्बन्ध में भारद्वाज ने विधान किया है कि सोम पर वसतीवरीका का जल छिड़का जाए। इस अवसर पर होता के चमस के जल को निग्राभ की संज्ञा दी गयी है। इसके पश्चात् सोम को तीन बार कूटकर सोम रस को एक काष्ठ पात्र में एकत्रित करते है तदनन्तर ऋत्विज उसको आधवनीय कलश में डाल देता है।

आपस्तम्बश्रौतसूत्र के अनुसार अंजलि में रस लेकर पात्र में एकत्र किया जाता है। जिसे उन्नेता शकट के दोनों बाँसों के बीच से ले जाकर आधवनीय कलश में रखता है। तीसरे अभिषवण के समय निचोडकर रस इकट्ठा करते है। अभिषवण चर्म पर दोनों ग्रावों को आमने–सामने रखकर अध्वर्यु उन ग्रावों में लगी हुई तलछट को पूँछकर बीच में एकत्र करता है, तब उद्गाता उन ग्रावा पर द्रोणकलश लाकर रखता है, जो पूर्वाभिमुख होता है। अब उसको दक्षिण हविर्द्धान शकट के धुरे के पास पहुँचा जाया जाता है, उस द्रोण कलश पर दशा पवित्र इस प्रकार बिछाया जाता है कि उसकी झालरे उत्तर की ओर हो जाती है। अब अध्वर्यु सोमरस पर मन्त्र पाठ[2] करता है। इस समय अध्वर्यु होता के चमस से दशा पवित्र पर निर्बाध धारा छोड़ता है, जो धारा सोम रस की होती है। यदि उसका कोई शत्रु (द्वेषी) हो तो उसका नाम लेकर बीच में धारा छोडता है। इस अवसर पर उन्नेता उदंचन के द्वारा आधवनीय कलश से सोम लेकर होता के चमस में डालता है।[3] इस प्रकार उक्त कृत्यों के द्वारा महाभिषव कृत्य सम्पन्न हो जाता है।[4]

---

1 त्रि सम्भरति चतुर्निग्राभमुपैति। 3.9.4.19

2 पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येणि विश्वतः।
अतप्तवनूर्न तदामो अश्नुते श्रतास इहहन्तत्समाशत। तै. आ. 1.11.1

3 भा. श्रौ. सू. 13.12–1–13

4 अग्निष्टोम यज्ञ पद्धति विमर्श, नारायण दत्तशर्मा पृ. सं. 312

5.6 क्षुल्लकाभिषव :–

इस पद्धति के अन्तर्गत केवल अध्वर्यु सोम को जल के साथ कूटता है।[1] सोम का अभिषवण करने वाला समस्त ऋणों से मुक्त हो जाता है, मुख्यतः देव–ऋण से। सोम अत्यधिक विशिष्ट तथा खर्चीला होने के कारण सामान्य आर्थिक स्थिति वाला व्यक्ति इसका पान नहीं कर सकता है।[2] इस प्रक्रिया में आठ बार सोम कूटा जाता है। किन्तु मन्त्र एक बार ही पढ़ा जाता है, सात बार सोम अमन्त्रक ही कूटा जाता है।

वस्तुतः महाभिषव और क्षुल्लाकाभिषव दोनों में समानता ही है। सोम कूटने की समस्त क्रियाएँ समान है, भेद मात्र इतना है कि क्षुल्लकाभिषव का कर्त्ता अध्वर्यु है तथा इसमें तीन बार तीन मन्त्रों के माध्यम से उपांशु ग्रह ग्रहण किया जाता है।[3] प्रथम क्रम में आठ बार सोम को कूटते है[4] फिर दूसरी बार में ग्यारह बार सोम कूटकर मन्त्र से[5] तदनन्तर तीसरी बार सोम को बारह बार कूटने पर प्रतिप्रस्थाता उपांशुग्रह ग्रहण करता है।[6] इस समय निग्राभ्यासंज्ञक जल का प्रयोग किया जाता है। जो एक विशिष्ट मन्त्रपूत जल होता है।

सोम अभिषवण के द्वारा भी तत्कालीन समाज में धर्म के प्रति श्रद्धा का संकेत मिलता है। मनुष्य स्वयं ही धार्मिक अनुष्ठानों के लिए द्रव्य, वस्तुएँ, यज्ञशाला आदि का निर्माण करते थे। सोमरस से यज्ञों का अनुष्ठान किया जाता था इन यज्ञों में सोमयाग का महत्वपूर्ण स्थान है।

---

1 सोमवल्लयाः जलेन कुट्टनमभिषवणमुच्यते, श्रौ. प. नि., पृ. सं. 270

2 न नूनं ब्रह्मणा मृणं प्राशनामस्ति सुन्वताम् न सोमो अप्रतापये। *वही,* 8.32.16

3 उपयामगृहीतोऽसि वाचस्पतये पवस्व वृष्ठो अशुभ्यां गभस्तिपूतः। वाज. सं. 7.1, तै. सं. 1.42

4 उपयामगृहीतोऽसि देवा देवेभ्यः पवस्व येषां भागोऽसि वा. सं. 7.1, तै. सं. 1.42

5 उपयामगृहीतोऽसि मधुमतीर्नइषस्कृधि। वां. सं. 7.2

6 (i) का. श्रौ. सू. 9.4.21
(ii) श. ब्रा. 4.1.1.8.13
(iii) भा. श्रौ. 13.10.13

5.7 सोमयाग :–

यज्ञ तत्व वैदिक वाङ्मय का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है। इसके तीन अर्थ है– देवपूजा, संगतिकरण, दान। जिसमें देवताओं का पूजन सत्कार आज्ञापालन किया जाए वह देवपूजा कहलाती है। विद्वानों का सत्संग संगतिकरण तथा दक्षिणा दान है। कात्यायन के अनुसार यज्ञ का अर्थ अग्नि आदि देवताओं के लिए सोम, व्रीहि द्रव्यों का त्याग यज्ञ है।[1] समग्र सामाजिक जीवन तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का आधरभूत केन्द्र यज्ञ ही परिलक्षित होता है। यज्ञ संस्था का समझे बिना वैदिक धर्म, दर्शन, संस्कृति तथा साहित्य के स्वरूप का विश्लेषण यथायोग्य नहीं किया जा सकता है। सोमलता का क्रय कर उसके अभिषवनपूर्वक विभिन्न देवों के निमित्त आहुति प्रदान करना सोमयाग कहलाता है।[2] प्रमुख रूप से यज्ञ के पाँच प्रकार होते हैं– अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, पशुयाग और सोमयाग। गौतमधर्म सूत्र में सातपाकयज्ञ संस्था, सात हविर्यज्ञसंस्था तथा सात–सोमसंस्था इस प्रकार पाकयज्ञ, हवियज्ञ, सोमयज्ञ तीन प्रकार के यज्ञों का वर्णन किया गया है। इन यज्ञसंस्थाओं में प्रत्येक संस्था के सात–सात भेद बनाए गए है। सभी सोमयागों को काम्य यज्ञ भी कहते हैं। इस यज्ञ में सोम मुख्य हवनीय द्रव्य होता है। इसी कारण से इस यज्ञ को सोमयज्ञ कहते हैं।

कालावधि के आधार पर सोम यज्ञों के तीन भेद माने जाते हैं– एकाहयज्ञ, अहीनयज्ञ तथा सत्रयज्ञ। सोमयज्ञसंस्था में 16 ऋत्विजों का वर्णन प्राप्त है।[3] इसमे होता, मैत्रावरुण, अच्छावाक्, ग्रावस्तुत, अध्वर्यु, प्रतिप्रस्थाता, नेष्टा, उन्नेता, ब्रह्मा, ब्राह्मणाच्छंशी, आग्नींध्र, पोता, उद्गाता, प्रस्तोता, प्रतिहर्ता और सुब्रह्मण्य में 16 ऋत्विज तथा 17वाँ यजमान होता है। सोमयज्ञ संस्था में अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी वाजपेय, अतिरात्र और आप्तोर्याम यज्ञ परिगणित होते है।

---

1 यज्ञं व्याख्यास्यामः। द्रव्यं देवता त्यागः। का. श्रौ. सू. 1.2.1–2

2 ता. ब्रा. की भूमिका (द्वितीय भाग), पृ. सं. 8

3 आश्व. श्रौ. सू. 4.16

अग्निष्टोम यज्ञ :– अग्निष्टोम यज्ञ सम्पूर्ण सोम यज्ञों की प्रकृति है। उक्थ्यादि छः सोम यज्ञ विकृति यज्ञ माने जाते हैं।[1] इस यज्ञ के नामकरण के विषय पर कहा गया है कि अग्नि की स्तुति होने के कारण इसका नाम अग्निष्टोम रखा गया।[2] इस यज्ञ में सर्वप्रथम पुरोहितों का वरण करते हैं। जिनकी संख्या सोलह होती है। इसके दीक्षणीय इष्टि तथा प्रायणीय इष्टि का कृत्य किया जाता है। इसके बाद आज्य की चार आहुतियाँ अग्नि, सोम और सविता देवों के लिए अर्पित की जाती है। प्रायणीय इष्टि के अनन्तर सोमक्रय का कृत्य किया जाता है।[3] सोम रस निकालने का कार्य भी यज्ञ के दौरान ही किया जाता है। इस यज्ञ में तैंतीस सोमपा और असोमपा देवता कहे जाते है। सोम से सोमपा तथा पशु से असोमपा देवता प्रसन्न होते है।[4] इस यज्ञ के अन्त में अवभृथ नामक स्नान की क्रिया होती है।[5] इसमें पति पत्नि स्नान करके वरुण को पुरोडाश समर्पित कहते है।

उक्थ्य यज्ञ :– अग्निष्टोम यज्ञ के बाद उक्थ्य यज्ञ का वर्णन प्राप्त होता है। इस यज्ञ का विकृति यज्ञों के अन्तर्गत उल्लेख मिलता है।[6] उक्थ्य यज्ञ में अग्निष्टोम के स्तोत्रों के अतिरिक्त तीन उक्थ्य स्तोत्र तथा उक्थ्य शस्त्र पाए जाते है। सोमरस निकालते समय उक्थ्य स्तोत्र पढ़े जाते है।[7] इस यज्ञ में सोमरस की आहुतियाँ प्रदान की जाती है।

षोडशी यज्ञ :– षोडशी यज्ञ में स्तोत्रों तथा शस्त्रों की संख्या सोलह होती है। इस यज्ञ में उक्थ्य के पन्द्रह स्तोत्रो तथा शस्त्र से पृथक् एक अन्य स्तोत्र का गायन होता है इसलिए इसे षोडशी यज्ञ कहा जाता है।[8]

---

1 अग्निष्टोम प्रकृति कृत्स्नस्यापि अनुष्ठेयस्य। ऐत. ब्रा. 1.1 सा. भा.

2 ऐ. ब्रा. 14.5

3 (i) ऐ. ब्रा. 3.1–3
(ii) कौ. ब्रा. 7–10

4 सोमेन सोमपान प्रणाति पशुनाऽसोमपान। ऐ. ब्रा. 2.8

5 कौ. ब्रा. 18.9

6 आश्व. श्रौ. सू. 5.10.21.24

7 ऐ. ब्रा. 14.1

8 ऐ. ब्रा. 16.1–4

अतिरात्र यज्ञ, अत्यग्निष्टोम यज्ञ, आप्तोर्याम यज्ञ तथा **वाजपेय यज्ञ** इन यज्ञों में भी जिन साम स्तोत्रों से इनका समापन होता है। प्रायः उसी के आधार पर इनका नामकरण होता है। अत्यग्निष्टोम यज्ञ में षोडशी यज्ञ से एक स्तोत्र तथा एक शस्त्र अधिक रहता है। यह यज्ञ अग्निष्टोम यज्ञ तथा षोडशी यज्ञ की तरह ही होता है।[1] आप्तोर्याम यज्ञ में अग्नि, इन्द्र, विष्णु के निमित्त सोम की आहुति दी जाती है। इस यज्ञ को पशु हित के लिए किया जाता है।[2] वाजपेय यज्ञ में सोमपान किया जाता है। इस यज्ञ में षोडशी यज्ञ की पद्धति को अपनाया गया है। यह यज्ञ सत्रह दिन से एक वर्ष तक किया जाता है।[3]

इस प्रकार सोमयज्ञों में सोम रस की आहुति से यज्ञ सम्पन्न किये जाते है। धार्मिक क्षेत्र में कर्मकाण्डों ने महत्वपूर्ण भूमिका प्रदर्शित की। भारतीय परम्परा की सांस्कृतिक गतिविधियाँ धार्मिक अनुष्ठानों के चहुँ ओर ही परिलक्षित होती है। अतः स्पष्ट है कि सोम का सांस्कृतिक क्षेत्र की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

5.8 अयाहुआस्का का सांस्कृतिक अध्ययन :—

किसी भी राष्ट्र के मूल तक जाने के लिए वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, जीवनशैली का ज्ञान अत्यावश्यक होता है। भारतीय संस्कृति के सदृश दक्षिण अमेरिका में भी संस्कृति तथा धार्मिक विशेषताएँ निहित है। दक्षिण अमेरिका के देशों में (ब्राजील, पेरु, इक्वोडोर आदि) भी अयाहुआस्का का धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर पर प्रयोग किया जाता है। अयाहुआस्का एक Psychoactive Banisteriasis Coabi बेल साइकोट्रिया बैरिडिश पत्तियों से निर्मित काढा है। प्राचीन काल से ही अमेजनवासी कई प्रयोजनों में इसका प्रयोग करते रहे हैं। Shaman सम्प्रदाय के लोग इसका प्रयोग आध्यात्मिक अनुभव करने के लिए करते है। पश्चिम देशों में अयाहुआस्का का उपयोग वैश्विक स्तर पर किया जा रहा है।

---

1 वैदिक धर्म और दर्शन, पृ. सं. 415

2 आश्व. श्रौ. सू. 9.11.1

3 वैदिक धर्म और दर्शक, पृ. 420

5.9 सामाजिक उपयोगिता :–

सामाजिक परिवेश में अयाहुआस्का का प्रयोग अनेक प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता है। यह केवल उपचार का साधन न होकर अनेक भंयकर बीमारियों को शान्त करता है। समाज में अयाहुआस्का के जादुई रूप ने निर्बलताओं को जन्म दिया है। अयाहुआस्का का प्रयोग स्वस्थ करने के लिए मानसिक तथा भावनात्मक रूप में उत्पन्न रोगों को शान्त करने के लिए उत्कृष्ट माना जाता है। अयाहुआस्का के विषय में मिलता है कि अयाहुआस्का का पान अमेजन जंगल की जनजाति करती थी। इसके बाद जब अयाहुआस्का चर्चों में प्रयुक्त होने लगा तब ईसाई सम्प्रदाय इसका पान करने लगा। अयाहुआस्का समाज में परस्पर प्रेम, शान्ति, ज्ञान, स्वास्थ्य सुधार लाने में सक्षम माना जाता है। समाज में अयाहुआस्का शुभ कार्य से पूर्व पीया जाता है। अमेजन के लोगों में धारणा व्याप्त है कि इसके पान से कष्टसाध्य कार्य भी सुगमतापूर्वक निष्पन्न हो जाते हैं। अयाहुआस्का एक शक्तिप्रद द्रव्य (काढा) है जो शत्रु समूह को नष्ट करने की क्षमता रखता है। इसके पीने से मनुष्य इच्छित वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है। समाज में इस पौधे को जादुई पौधा कहा जाता है जो अन्धविश्वास तथा जादू–टोना फैलाने में सक्षम है। अयाहुआस्का का प्रयोग नकारात्मक कार्यों के लिए होता रहा है परन्तु सकारात्मक पक्ष अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। सामाजिक प्राणी सुख प्राप्ति तथा दुःख की निवृति के लिए अयाहुआस्का का पान करते हैं। जनजातियाँ अयाहुआस्का को दिव्य पौधा मानती हैं। उनके अनुसार अयाहुआस्का धार्मिक विश्वास में सहयोग करता है। परमेश्वर से सम्पर्क कराने में अयाहुआस्का का महत्वपूर्ण योगदान है। अयाहुआस्का के प्रभाव से आत्मिक अनुभूति होती है। अमेजन के लोग कहते है कि यह कोई माया नहीं है बल्कि एक समानान्तर दुनिया की झलक है। जहाँ आत्माओं का निवास है, आत्माएँ रम्य हो जाती है अर्थात् पारलौकिक आनन्द का अनुभव करती है। अयाहुआस्का के पारम्परिक उपयोग से अनुभवजन्य ज्ञान, दिव्य दृष्टि तथा श्रवण शक्ति, आध्यात्मिक अनुभूति होती है।[1]

---

1 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy Kenneth William Tupper

ब्राजील अयाहुआस्का का प्रयोग करने में अग्रणी देश माना जाता है। वहाँ की संस्कृति तथा समाज में अयाहुआस्का का महत्वपूर्ण योगदान है। ब्राजील का समाज यूरोपीय तथा अफ्रीकी मिश्रण का परिणाम है। उसके कुछ क्षेत्र पर पुर्तगाली उपनिवेश की स्थापना है। अटलांटिक समुद्र तट के साथ होने पर यह आकर्षण का केन्द्र है। प्रत्येक राष्ट्र को यदा कदा परेशानियों का सामना करना पड़ता है, पुर्तगाली घुसपैठ अक्सर पारम्परिक संगठनों को तोड़कर ब्राजील के क्षेत्र में अधिकार करने में सक्षम हो जाते हैं। इसी कारण से ही अपरम्परागत धार्मिक आन्दोलन कैथोलिक, भारतीय, अफ्रीकी, संस्कृति से मिश्रित संस्कृति तथा सभ्यता को जन्म दे रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्राजील में अधिकांश मनुष्य कैथोलिक संस्कृति से प्रभावित हैं। एक व्यापक सहिष्णुता और विभिन्न सम्प्रदायों की विविधताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। ब्राजील के लोगों के सामाजिक जीवन में स्वतन्त्रता, धर्म के क्षेत्र में भौतिकवाद निहित है। वास्तव में उनके आध्यात्मिक क्षेत्र में विश्वास करना भी कठिन है वे स्वयं को नास्तिक कहते हैं।[1]

मानव विज्ञानी **जोसफ मारिया** अयाहुआस्का के प्रयोग पर शोध कार्य कर रहे हैं, उनका मानना है कि यह मानसिक तथा आध्यात्मिक प्रतीकों का समारोह है। जो पश्चिमी समाज द्वारा पारम्परिक तौर से त्याग दिया गया है। अयाहुआस्का मानसिक चिकित्सा के लिए महत्वपूर्ण संघटक है।[2] इससे स्वास्थ्य की हानि नहीं होती है। सामाजिक मूल्यों के अनुसार जीवन को नेतृत्व करने वाला तथा धार्मिक संगठनों के व्यवस्थित संचालन में मदद करता है। अयाहुआस्का के Psychoactive पदार्थ का सामाजिक, सांस्कृतिक विधि में प्रयोग किया जाता है। सैटो Daime और अन्य धार्मिक प्रयोजनों में आयाहुआस्का की समाजिक प्रभावशीलता में पुष्टि मिलती है। इसके द्वारा नशीली औषधियों के प्रभाव को नियन्त्रित किया जाता है। नशे से छुटकारा पाना आधुनिक समाज में अनेक बुराईयों से मुक्ति मानी जाती है। इसके उपयोग से तम्बाकू, शराब आदि पदार्थों का त्याग भी सुगमतापूर्वक हो जाता है।

---

1 The Ritual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae

2 Ayahuasca : Entheogenic Education and Public Policy Kenneth William Tupper

अमेजन की जनजातियाँ अन्य यूरोपिय देशों से भिन्न हैं। उनका रहन, सहन, खान, पान सर्वथा पूर्ण रूप से अलग है। इनके जीवन के तौर तरीके भिन्न–भिन्न हैं। शारीरिक दृष्टि से लम्बाई मोटापन, शारीरिक प्रक्रियाएँ भी अलग–अलग हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि उनका आहार प्रोटीन से भरपूर न रहा हो। इतना होने पर भी पश्चिमी देशों में अयाहुआस्का की खोज में खगोलीय बाधाओं के बावजूद भी ज्ञान का तीव्रता से विस्तार हुआ। जनजातियाँ एक–दूसरे के साथ व्यापार से सम्बन्धित हुई। इसके अतिरिक्त विवाह आदि सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यों के द्वारा परस्पर जुड़ी हुई है।[1] अयाहुआस्का के द्वारा जनजातियों में सामाजिक तौर पर परिवर्तन हुआ। वहाँ के लोगों का बौद्धिक स्तर विकसित हुआ है। सामाजिक क्षेत्र में अयाहुआस्का ने वैज्ञानिकता का समावेश किया। लोगों को जादू–टोनों, अन्धविश्वासों से बाहर निकाला। इस दिव्य औषधि ने क्रान्तिकारी परिवर्तन को जन्म दिया।

5.10 आर्थिक उपयोगिता :–

अयाहुआस्का ने आर्थिक क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान दिया। आधुनिक समय में अयाहुआस्का का प्रयोग वैज्ञानिक, शोधकर्ता अनेक माध्यमों से कर रहें हैं। जिसके कारण आर्थिक व्यवस्था में काफी सहयोग प्राप्त होता है। अमेजन निवासी अयाहुआस्का को मात्र आध्यात्मिक क्षेत्र तक ही कायम रखना चाहते थे परन्तु आधुनिक परिवेश ने इसे चिकित्सा, मनोविज्ञान, औषध, धार्मिक, प्रौद्योगिक, राजनीति इत्यादि क्षेत्रों में पहुँचा दिया हैं। इसके साथ ही गैर अमेजन वासी लोगों को दृष्टि में इसका महत्व कुछ भिन्न रूप में पाया गया। गैर अमेजनवासियों ने अयाहुआस्का को आय का महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं। इस कारण से इन दोनों में (अमेजनवासी तथा गैर निवासी) परस्पर विवाद रहता है। इस विवाद को लेकर अमेजनवासियों ने पर्यटकों, वैज्ञानिकों, गैर अमेजनवासियों पर अयाहुआस्का के उपयोग को लेकर प्रतिबन्ध लगा दिया।[2]

---

1. Ayahuascu.com > Spirit and Healing > Shamanism > on the origins of Ayahuasca
2. Experiences of Encounters with Ayahuasca – “The vine of the soul” Ed. Anette Kyellgren

अयाहुआस्का को व्यवसाय के रूप में दूसरे देशों में भेजा जाता है। कुछ का मानना है कि अयाहुआस्का का प्रयोग शराब के रूप में भी किया जाता है। अयाहुआस्का का प्रयोग आर्थिक क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर किया जाता है। आस्ट्रेलिया इटली, हॉलैण्ड और स्पेन देश भी इसका आपात–निर्यात करते हैं। अयाहुआस्का का वैश्विक रूप सामाजिक मुद्दा बनकर सामने आया जिसके कारण अन्य देशों में भी इसके आर्थिक पक्ष को सम्बल प्राप्त हुआ। अयाहुआस्का का आधुनिक समय में पूंजीवाद के रूप में खपत और उत्पादन बढ़ने लगा है।

आर्थिक उपलब्धि के लिए प्रयोगकर्ताओं ने अयाहुआस्का का विकृत रूप भी निर्मित किया हैं। उत्तरी अमेरिका के वैज्ञानिकों ने अयाहुआस्का के गैर पारस्परिक पौधों के साथ मिश्रित करके औषधी तैयार कर रहें हैं। इस प्रतिस्पर्धा के युग में अधिक उत्पादन करने के लिए अयाहुआस्का के गुणों से युक्त अन्य पौधों से भी अयाहुआस्का बनाया जा रहा है। जैसे गैर पारम्परिक (alkaloids) पौधे के साथ मिश्रित करके अयाहुआस्का का निर्माण किया जा रहा है। आस्ट्रेलिया के कई पौधे है जो DMT युक्त हैं। उनका प्रयोग भी अयाहुआस्का के लिए किया जाता हैं।[1]

1990 के दशक के अंत में अयाहुआस्का सम्पूर्ण यूरोप में फैल गया। अयाहुआस्का ने शहरी समुदाय को अत्यधिक आकर्षित किया। चिकित्सा के क्षेत्र में प्रयोग से इसकी आय का माध्यम अत्यधिक विकसित हुआ। अयाहुआस्का में रुचि लेने से शिक्षा के क्षेत्र में इसका माहात्म्य स्वीकार किया गया। व्यवसाय के क्षेत्र में अयाहुआस्का को चाय के रूप में स्वीकार किया जाता है। धार्मिक स्थलों UDV के समारोह में चाय का उपयोग करते हैं। चाय के रूप में भी अयाहुआस्का आर्थिक आय का स्रोत बनता हैं। फ्रांस में भी 2005 में चाय का उपयोग करने के पक्ष में कानूनी फैसला जीता। Winkelman वैज्ञानिक का तर्क है कि अयाहुआस्का केवल व्यक्तिगत वृद्धि करने में ही सहायक नहीं है अपितु अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर भी

---

1 (i) Ayahuasca.com : Spirit and Healing > Shamanism > on the origins of Ayahuasca
(ii) http://ayahuascaguide.org/ayahuasca_and_religion

व्यापार का परचम लहराया है। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि, शारीरिक, मानसिक शान्ति प्रदान करता है। इन्हीं कारणों से पर्यटकों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं के मध्य अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है।[1]

इतना ही नहीं दक्षिण और उत्तरी अमेरिका के लोगों ने आदिवासियों के साथ सम्पर्क बनाकर अमेजन निवासियों की सहमति से औपनिवेशिक भविष्यवाणी की। आर्थिक जगत् में अयाहुआस्का का प्रयोग एक नूतन वैश्वीकरण लेकर प्रविष्ट हुआ। इससे लोगों की मौलिक विश्वदृष्टि में परिवर्तन हुआ है।

5.11 राजनीतिक उपयोगिता :–

अयाहुआस्का के उपयोग को लेकर अनेक प्रकार के कानूनी मुद्दे दृष्टिगोचर होते हैं। दक्षिण अमेरिका, कनाडा, यूरोप, आस्ट्रेलिया के सैटो डेमेन चर्च के सदस्य अयाहुआस्का का प्रयोग वैधानिक तौर पर करते हैं। विभिन्न देशों के द्वारा सैंटो डेमेन चर्चों पर आरोप लगाया गया कि अयाहुआस्का में जो डी.एम.टी. घटक है, वह घातक सिद्ध होता है। इस चर्च के सदस्यों ने धार्मिक स्वतन्त्रता के तहत लड़ाई लड़ी। इसी कारण से ब्राजील के धार्मिक अनुष्ठानों में अयाहुआस्का का उपयोग वैध किया गया। ब्राजील सरकार ने अयाहुआस्का के प्रभाव का आकलन किया तदनन्तर कोई भी नकारात्मक प्रणाम नहीं मिला। तत्पश्चात् सरकार ने पक्ष में फैसला सुनाया। अयाहुआस्का का प्रयोग मंनोरजन के लिए नहीं माना जाता है अपितु यह तो एक आध्यात्मिक अभ्यास है। संयुक्त राज्य अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने भी Uniao (UDV) वनस्पति तथा सैंटो चर्च में अयाहुआस्का का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठान में उचित बताया। इसके साथ ही स्विट्जरलैण्ड, डेनमार्क और ग्रीस के कई यूरोपीय देशों में DMT का उपयोग वैध माना जाता है। इसके पश्चात् नीदरलैण्ड और स्पेन जैसे देशों में भी अयाहुआस्का वैध माना जाने लगा। अयाहुआस्का का प्रयोग सैंटो Daime चर्च में धार्मिक स्वतन्त्रता का मुद्‌दा बना।

---

[1] (i) Ayahunsca, Entheogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper
(ii) http://en.wikipedia.org/wiki/ayahuasca

चर्च सदस्यों के अनुसार अयाहुआस्का का उपयोग वैध तथा धार्मिक प्रथा है। सैंटो डेमेन के चर्च ने कानूनी तौर पर कई देशों में अयाहुआस्का उपयोग करने का अधिकार जीत लिया परन्तु कई देशों में अयाहुआस्का का प्रयोग अवैध माना जाता है जिसके लिए कानूनी तौर पर संघर्ष जारी है।[1] राजनीतिक संघर्ष में अयाहुआस्का ड्रग्स के रूप में प्रसारित किया जाने लगा। वास्तव में अद्वैतवादी धर्मों इस्लाम, इसाई, और यहूदी धर्मों में अयाहुआस्का के विषय में प्रतिस्पर्धा होने लगी। जिसके कारण धार्मिक वैधता के लिए अयाहुआस्का कानूनी हाथों में चला गया। धार्मिक क्षेत्र में प्रयोग के लिए सरकार तथा धार्मिक संगठनों में संघर्ष होने लगा।[2]

प्रमुख रूप से राजनीतिक संघर्ष अयाहुआस्का के लिए पारम्परिक ज्ञान तथा बौद्धिक सम्पदा संरक्षण के लिए किया गया। ब्राजील के स्वास्थ्य मन्त्रालय ने 1995 में अयाहुआस्का के उपयोग के लिए कार्य किए। इसके अतिरिक्त अयाहुआस्का प्रयोग प्राधिकरण सुप्रीम कोर्ट द्वारा वनस्पति के रूप में स्वीकार किया गया। अयाहुआस्का के विषय में अन्य राजनीतिक गतिविधियों का वर्णन द्वितीय अध्याय के "अयाहुआस्का कानूनी तौर से वैध या अवैध" भाग में वर्णित किया गया है।

5.12 धार्मिक उपयोगिता :–

अयाहुआस्का का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। सैंटो Daime के चर्च में अयाहुआस्का का संस्कार के रूप में उपयोग किया जाता है। चर्च में लोग इसका प्रयोग आध्यात्मिक अनुभव के करते हैं। अयाहुआस्का में डीएमटी (Dimethyltryptamine) नामक तत्व पाया जाता है, जो कई देशों में औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। धार्मिक उत्सवों में इसका प्रयोग विशेष रूप में किया जाता है। इसके उपयोग में चार धार्मिक संगठनों का वर्णन प्राप्त होता है।

---

1 Drug Ayahuasca, Church of Santo Daime Legality Sacrament

2 Brazilian Ayahuasca Religious in Perspective Beatriz Caiv. by. Labate, EdwardmacRae and Sandra Lucia, Houlart

प्रथम **Raimundo Lrineu Sera** इसका समय 1892–1971 तक स्वीकार किया जाता है। द्वितीय **परेरा डी Motos** इसका काल 1904 से 1958 तक माना जाता है। तृतीय **जोस Gabriel दा कोस्टा** जो 1922 से 1971 तक माना जाता है। चतुर्थ **Sebastiao मोटा** इसका काल 1920 से 1990 तक स्वीकार करते हैं। **Sebastiao मोटा सेरा** का अनुयायी था। इस प्रथम संगठन से ही सैंटो Daime चर्च का प्रादुर्भाव मान सकते है।[1]

इन धार्मिक सम्प्रदायों में कुछ मतभेद भी दृष्टिगोचर होता है। अयाहुआस्का के विषय में सेरा के अनुयायी मोटा तथा परेरा डी मोटोस सम्प्रदाय अयाहुआस्का को पवित्र सैंटो डेमेन काढा स्वीकार करते हैं3 परंतु जोस Habriel दा कोस्टा के अनुयायी इसको वनस्पति कहते है। इन धार्मिक समूहों द्वारा अयाहुआस्का का उपयोग एक सहनीय शक्ति के रूप में किया जाता है। सैंटो डेमेन चर्च में चिकित्सा तथा आध्यात्मिक विकास के लिए अयाहुआस्का का प्रयोग किया जाता है। अयाहुआस्का का अधिक प्रयोग ईसाई सिद्धान्तों पर आधारित है। अफ्रीकी देशों में भी आध्यात्मिकता के लिए प्रयोग किया जाता है। दक्षिण अमेरिकी शैमेनिज्म ने इसका उपयोग अन्य क्षेत्रों में भी इस्तेमाल करते है। दक्षिण अमेरिका के स्वदेशी लोग अयाहुआस्का का प्रयोग पवित्रीकरण, शारीरिक, मानसिक चिकित्सा के साथ–साथ आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए करते हैं। अयाहुआस्का के प्रभाव को देखकर इसे परिवर्तनकारी जीवन प्रदान करने वाला तत्व कहा गया। 1971 में सेरा की मृत्यु के पश्चात् अयाहुआस्का 1990 के दशक में विश्व में प्रसारित होना शुरू हो गया।[2]

अयाहुआस्का का धार्मिक समारोह में सैंटो डेमेन चर्च के सदस्यों द्वारा अत्यधिक उपयोग में लाया जाता है। सैंटो डेमेन चर्च के लोगों का मानना है कि यीशु मसीह की अभिव्यक्ति है कि उन्हें परमात्मा के साथ सम्पर्क बनाने में मदद

---

1 The Ritual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae

2 Drug Ayahuasca, Church of Santo Daime Legality Sacrament

करता है। चर्च के सदस्यों का मानना है कि अयाहुआस्का उन्हें परमात्मा के सदृश बनाने की मदद करता है। अयाहुआस्का का पान सर्वदा सुखकारी नहीं होता है। इसके पीने के अनन्तर कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जाने वाले मनुष्य उल्टी आदि अनेक परेशानियों से सामना करते हैं। परन्तु इन दुष्प्रभावों को सकारात्मक रूप में देखा जाता है। यही भौतिक परिवेश से आध्यात्मिक परिवेश के लिए मार्ग प्रशस्त करते है।

इसके अतिरिक्त एक धार्मिक संगठन का प्रादुर्भाव हुआ, जो मेस्त्रे गेब्रियल धार्मिक समूह के रूप में जाना जाता है। यह दक्षिणी महासागर में स्थित है। इसके समूह में 5000 से अधिक अनुयायी विद्यमान है। इस पन्थ के सदस्य अयाहुआस्का को वनस्पति के रूप ही स्वीकार करते हैं। यह समूह ब्राजील, अफ्रीकी के अधिकार पंथ में ही है। मेस्त्रे तथा सेरा का कोई सम्बन्ध दृष्टिगोचर नहीं होता है। धार्मिक संगठनों में भी अत्यधिक अन्तर मिलता है। परन्तु अयाहुआस्का के विषय में समानताएँ विद्यमान हैं। इसमें अयाहुआस्का का पान चर्च में किया जाता है तथा सैद्धान्तिक समानताएँ मिलती है। अनुष्ठान संस्कार के रूप में ही किया जाता है। अमेजन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के समान ही सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न किए जाते है। यद्यपि अयाहुआस्का का औषधीय पक्ष अत्यन्त शक्तिशाली है परन्तु धार्मिक संगठनों द्वारा चिकित्सा क्षेत्र में उपयोग लाने का विधान स्पष्ट प्रतीत नहीं होता है। उपचार के लिए प्रयोग न करके सम्भवतः परम्परागत रूप में शराब के लिए अवश्य प्रयोग करते हैं।[1]

इन धार्मिक स्थलों पर अयाहुआस्का पान का वर्णन मिलता है। जहाँ इसका पान किया जाता है वहाँ एक वेदी बनाई जाती है। जो मनुष्य धार्मिक उत्सव में भाग लेते हैं उनके लिए कक्ष में विशिष्ट स्थान होता है। यह कक्ष आयताकार होता है। इसमें स्त्री, पुरुष सभी मनुष्य उपस्थित हो सकते हैं। जो धार्मिक उत्सव में भाग लेने आते हैं उनके लिए अनुशासित रहने का आदेश होता है। इन चर्चों में

---

1 The Ritual and Religious use of Ayahuasca in Contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae

नृत्य आदि का विधान भी होता है। इस धार्मिक कृत्य में गायन पद्धति भी महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। Shamanic में संगीत रस्म प्राचीनकाल से ही की जाती है। अयाहुआस्का पान करते समय संगीत का महत्वपूर्ण माना जाता है। संगीत के समय ही इसका पान किया जाता है। इस समय मनुष्य मानसिक तथा शारीरिक भावनाओं से निवृत हो जाता है। संगीत के द्वारा मनुष्य परमेश्वर के साथ तादात्म्य अनुभव करता है। पौराणिक लोग इसको जादुई प्रतीकों के साथ जोड़ते है।[1]

अयाहुआस्का पीने में कटु होता है। इसके पीने के पश्चात् वमन तथा पेचिश होता है। कुछ समय तक मुख पर निश्तेजता रहती है, अन्य भागों में सामान्य अनुभूति रहती है, हृदयउत्तेजना तथा गति में वृद्धि होती है। अयाहुआस्का का पान संज्ञानात्मक परिवर्तन के लिए भी किया जाता है। इन प्राकृतिक अनुभवों को सिर्फ वैज्ञानिक क्षेत्र तक की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता हैं। अयाहुआस्का के प्रभाव को समझने के लिए ज्ञान की सीमाओं से परे जाना भी आवश्यक होता है। अयाहुआस्का पान को तीन चरणों में विभक्त किया जा सकता है।

1. **प्रथम चरण** :– इसके पीने से शारीरिक परिवर्तन होता है, जैसे वमन, उदरपीडा, अव्यवस्थित, दृष्टि में परिवर्तन होने से वर्ण विविधता का होना इत्यादि।

2. **द्वितीय चरण** :– इसमें व्यक्ति की क्षमता को नियंत्रित किया जाता है। अनुभवों को समायोजित करते हैं। इस काल के दौरान एकाग्रता के लिए प्रयास किया जाता है। अन्यथा शारीरिक तथा भावनात्मक (मानसिक) परेशानी होती है। नेत्रों के उन्मेष निमेष द्वारा वर्ण विविधता पर नियन्त्रण किया जाता है।

3. **तृतीय चरण** :– इसमें मस्तिष्क की गतिविधि में विशेष परिवर्तन होता है, जो व्यक्ति के विचारों से सम्भव होता है। मनुष्य भावनात्मक अनुभव से संयुक्त होता है। शारीरिक परिवर्तन के साथ–साथ स्नेह, इच्छाशक्ति, स्वयं के साथ वार्तालाप

---

[1] Brazilian Ayahuasca religious in perspective beatriz caiuby. Labate, Edward macrae and sandra Lucia Goulart

करना, ध्यान, धारणा, दृष्टि, श्रवण, गन्ध, स्वाद में परिवर्तन होता है।[1]

धार्मिक क्षेत्रों में अयाहुआस्का का प्रयोग करने से समाज शराब जैसे दुर्व्यसनों से पृथक् हो सकता है। अयाहुआस्का का अनुशासित प्रयोग करने से नशीली दवाईयों से बचा जा सकता है। इस प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों में शराब, नशीली दवाईयों की आदत त्यागने में यह विशेष प्रभावी रहा है। अयाहुआस्का का प्रयोग प्राचीन समय में अमेजन के क्षेत्र तक ही सीमित माना जाता है परन्तु आधुनिक समय में धार्मिक स्थलों से निकलकर महानगर ब्राजील, निर्माताओं, वैज्ञानिकों के समीप भी विद्यमान हैं।

---

1 Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology, Ed. Sudhanshu Tiwari

उपसंहार

उपसंहार

सोम वैज्ञानिकों द्वारा सदैव शोध का विषय रहा है। वनस्पति वैज्ञानिकों द्वारा अथक् प्रयत्न करने पर भी कोई निष्कर्ष प्राप्त नहीं हो पाया है। अनेक वैज्ञानिकों ने भिन्न–भिन्न पौधों को सोम के रूप में ग्रहण किया। कुछ विद्वानों ने 'पेरिप्लोका एफाइल्लाडेकने' (मदारकुल) को सोम माना है। **डॉ. वाट** ने सारकोटेस्टेम्मा एसिडम को सोम कहा है। **डॉ. उस्मान अली** तथा **नारायण स्वामी** ने 'सिरापिजिया' को सोम बतलाया है। वनस्पति **विज्ञानी एन.ए. काजिल्वास** के अनुसार एफेड्रा पैकिक्लाडा बौस ही सोम है। इसके अतिरिक्त एफेड्रा गिरार्डियाना, रूटा ग्रविलोलेसं, गिनसेनं नामक वनौषधियों में सोम के सदृश कुछ गुण होने से इन्हें सोम मानते है। अमेरिकी वैज्ञानिक **रिचर्ड गार्डन वैसन** ने 15 वर्षों के अनुसन्धान से 'प्लाई आगेरिक' नाम कुकुरमुत्ते की प्रजाति के 'अमानिता मस्कारिया' से सोम की पहचान की। इसके रस का सेवन करने से शारीरिक शक्ति बढ़ती है। दिन में स्वप्न दिखाई देते है तथा उन्मादकता बढ़ती है। सन् 1971 में कैनबरा (आस्ट्रेलिया) में हुए अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन में डॉ. वैसन ने सोम को मतिविभ्रमकारी फफूंद कहा, तो डॉ. आर.एन. दाण्डेकर तथा डॉ. एम. भट्टाचार्य ने युक्ति संगत तर्क देकर खण्डन कर दिया। वैदिक साहित्य में सोम पौधा मुञ्जवान् पर्वत पर मिलता है। इसमें औषधिजन्य शक्ति है। जिसका प्रयोग रोगनिवृति के लिए किया जाता था। सोम लता का रस निकालकर धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग में लाया जाता था। ऋग्वेद में सर्वाधिक सोम का सोमलता के रूप में वर्णन मिलता है। सोमलता को दिव्य लता माना गया है। एक मन्त्रस्थल में कहा गया है कि हमने सोम पी लिया हे, हम अमर हो गए है। हमनें देवों को जान लिया है (ऋग्वेद 8.48.3) देव–असुरों के युद्ध में विजयी होने के लिए सोम को सम्राट बनाने का वर्णन मिलता है। इन्द्र देव सोमपान करके ही वृत्र को मारने में समर्थ हो पाते है। अतः सोम शक्तिप्रद, उत्साह, उमंग प्रदान करने वाला तत्त्व है। सोम को चन्द्रमा भी

कहा गया है। सुश्रुत संहिता में चन्द्र के साथ बढ़ने व घटने वाली लता के रूप में वर्णन मिलता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में सोम का अन्न, वीर्य, श्री, प्रजापति, रस, यश इत्यादि रूपों में उल्लेख मिलता है।

प्रारम्भ से ही वैज्ञानिक इस तथ्य की खोज करते आए है कि वास्तव में वह कौन–सा पौधा है जो वेदों में सोम के नाम से वर्णित है! आज भी सोम का वास्तविक स्वरूप वैज्ञानिकों के लिए अगम्य विषय है। ऋग्वेद में लगभग 1000 बार सोम का उल्लेख हुआ है।

वस्तुतः कालानन्तर सोम का अस्तित्व लुप्त प्रायः हो गया है। जिस प्रकार सोम का वर्णन वेदों में मिलता है ठीक इसके विपरीत पश्चिमी देशों में अयाहुआस्का के विषय में कोई परम्परागत ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता है। अयाहुआस्का तथा सोम दोनों लताओं का वर्ण साम्य है। दोनों का रस निकालकर पान किया जाता है। यद्यपि किञ्चित् वैषम्य भी प्राप्त होता है। सोम के विषय में कहीं भी नहीं मिलता है कि उबालकर इसका प्रयोग करते है। परन्तु अयाहुआस्का को उबालकर काढा बनाया जाता है। सोम तथा अयाहुआस्का दोनों के पीने के पश्चात् वमन होता है। सोम पीने से वमन में रक्त तथा कृमि निकलते है। जबकि अयाहुआस्का पान से वमन में कृमि बाहर आते है। इस प्रक्रिया से शरीर की शुद्धि होती है। सोमपान करने से शरीर में परिवर्तन की प्रक्रिया पच्चीस दिन तक होती है। अयाहुआस्का पीने से मात्र छः घण्टे की अवधि में ही प्रक्रिया समाप्त होती है। सोम तथा अयाहुआस्का दोनों के पीने से आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव होता है। इसके पीने के पश्चात् दोनों संस्कृतियों में सात्विक आहार का वर्णन मिलता है।

सोम की तरह अयाहुआस्का को भी शक्तिप्रद पेय माना जाता है। सोमपान करने पर इन्द्र शत्रुसमूह का संहार करता है। रोगनिवृति के लिए इसका पान करते है। आध्यात्मिक सुख के लिए सोमरस पीते है। उसी प्रकार Kenneth William Tupper ने स्पष्ट किया है कि अयाहुआस्का पीने से शत्रु समूह को विनष्ट करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है। लक्ष्य की प्राप्ति शीघ्र होती है। औषधीय

गुण विद्यमान होने से असाध्य रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके पान के विषय में कहते है कि विशेष रूप से युद्धादि, शिकार अन्य अभियान से पूर्व इसका पान शुभ तथा आवश्यक माना जाता है। सर्वश्रेष्ठ कार्य परमेश्वर से सम्पर्क होना है। जनजाति इसका प्रयोग धार्मिक विश्वास के लिए भी करती है, ऐसा करना उनके लिए परमावश्यक होता है।

कुछ समानताएँ होने से क्या अयाहुआस्का सोम ही तो नहीं? देश, काल परिस्थितियों के भेद से नामकरण तथा उपयोग में भिन्नता हो सकती है। सोम का प्रयोग यज्ञानुष्ठान में किया जाता है ठीक उसी प्रकार अयाहुआस्का का प्रयोग धार्मिक स्थलों (चर्चों) पर किया जाता है। सोमपान का वर्णन यज्ञ के समय में प्राप्त होता है, ठीक उसी प्रकार चर्चों में अयाहुआस्का पान करते है। सोम तथा अयाहुआस्का के सांस्कृतिक स्वरूप में भी अधिक भेद स्पष्ट नहीं होता है। प्राचीन समाज में ब्राह्मण ही सोम का विशेष अधिकारी माना गया है। यज्ञानुष्ठान में पुरोहित होने के कारण सोम ब्राह्मण के अधिकार क्षेत्र में ही था। अयाहुआस्का को ईसाई–समुदाय पीता है क्योंकि चर्च पर इसी सम्प्रदाय का आधिपत्य विद्यमान है। आर्थिक क्षेत्र में सोम बहुमूल्य द्रव्य माना जाता है, जिसका क्रय–विक्रय, स्वर्ण, चाँदी, गौ आदि बहुमूल्य वस्तुओं से किया जाता है। यही नहीं सोम को व्यापार लाभ के लिए प्रातः स्मरणीय देवता के रूप में स्मरण करते थे। (ऋग्वेद 3.16.1) अयाहुआस्का को भी आय का प्रमुख स्रोत समझा जाता है। प्राचीन समय में अमेजन निवासी इसका प्रयोग आध्यात्मिक क्षेत्र तक ही करते थे परन्तु आधुनिक प्रौद्योगिकी, राजनीति, औषध गुणों के कारण अयाहुआस्का अनेक देशों में प्रयोग में लाया जाने लगा है। अयाहुआस्का का व्यवसाय शराब तथा चाय के रूप में किया जाता है। आर्थिक समृद्धि के लिए अयाहुआस्का के विकल्प में अनेक पौधों को उपयोग किया जा रहा है। जिस प्रकार सोम के स्थान पर अनेक वनस्पतियों का प्रादुर्भाव हुआ ठीक उसी प्रकार से धीरे–धीरे अयाहुआस्का का स्थान अनेक प्रजातियों के पौधों ने गृहण कर लिया। सोम तथा अयाहुआस्का के लिए युद्धों का वर्णन मिलता है। प्राचीन समय में सोम रस अत्यन्त मूल्यवान् द्रव्य था, इसके लिए परस्पर कलह और युद्ध होते थे। (कात्यायन श्रौत. सू. 7.8.25) अयाहुआस्का के

लिए ब्राजील स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा 1985 में घोषणा की गई कि धार्मिक स्वतन्त्रता के तहत चर्चों में इसका प्रयोग कर सकते है। सुप्रीम कोर्ट ने अयाहुआस्का को वनस्पति के रूप में स्वीकार किया। इसके साथ ही हॉलैण्ड, स्पेन इटली में भी इसका महत्व बढ़ा है। धार्मिक क्षेत्र में सोम का क्रय, अभिषवण करने के पश्चात् यजमान यज्ञ करने का अधिकारी माना जाता है। सोमसंस्था में सोमरस का ही प्रयोग किया जाता है। सोमयाग सभी यज्ञों में प्रमुख होता है।

अयाहुआस्का को धार्मिक स्थलों पर संगीत, नृत्यादि क्रियाएँ करते हुए पीने का वर्णन प्राप्त होता है। जितना माहात्म्य धर्म के क्षेत्र में सोम का मिलता है। उस प्रकार से अयाहुआस्का का स्वरूप दृष्टिगोचर नहीं होता है। सैंटो डेमेन चर्च के लोगों द्वारा यह अधिक उपयोग में लाया जाता है। इस चर्च के लोगों का मानना है कि यीशु मसीह का कहना है कि अयाहुआस्का रस परमात्मा से सम्पर्क करने में मदद करता है। यद्यपि अयाहुआस्का का सकारात्मक प्रभाव होने पर भी अमेजन के लोगों ने जादू–टोने के लिए भी इसका उपयोग किया, जो सर्वथा अनुचित है। भारतवर्ष में प्रयुक्त होने वाला सोमरस का ग्रहण कदापि इस प्रकार के प्रयोजन में नहीं होता था।

आधुनिक समय में अयाहुआस्का का औषध रूप में अधिक प्राप्त हो रहा है। वैज्ञानिकों द्वारा माइग्रेन, एड्स इत्यादि असाध्य बिमारियों में इसका प्रयोग अधिक मिलता है। आणविक जीव–विज्ञान द्वारा अयाहुआस्का की वैज्ञानिक खोज हो रही है। जबकि Shamans सम्प्रदाय आध्यात्मिक शान्ति के लिए प्रयोग करता है। इस प्रकार से दो विचारधाराएँ जन्म लेती हैं– (1) आध्यात्मिक तथा (2) वैज्ञानिक।

सोम और अयाहुआस्का में पर्याप्त साम्य तथा वैषम्य मिलता है। सम्पूर्ण अन्वेषण के बिना पूर्णरूप से अयाहुआस्का को सोम कहना भी अनुचित ही होगा परंतु दोनों का वर्ण बभ्रु, पीने पर प्रतिक्रियाएँ भी समान है, प्रयोग भी समानरूप से दृष्टिगोचर होता है। ऐसा भी सम्भव है कि यह अयाहुआस्का को सोम ही हो अधुनापि यह विषय शोध के योग्य है। मात्र एम.फिल् शोध की सीमा अवधि में इस गूढ तथ्य को स्पष्ट करना असम्भव है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

प्राथमिक स्रोत :–

- ऋग्वेदसंहिता, स्वामी दयानन्द भाष्य, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली, 2003
- ऋग्वेद संहिता, सायणभाष्य, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना, 1972
- ऋग्वेद संहिता, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर भाष्य, स्वाध्याय मण्डल पारडी, 1985
- ऐतरेय ब्राह्मणम्, श्रीमद्सायणाचार्य विरचित भाष्य समेतम् (सम्पा.) शास्त्री काशीनाथ, आनन्दाश्रम संस्कृतग्रन्थावलिः ग्रन्थांक – 32, 1998
- शतपथब्राह्मणम्, सायणाचार्यविरचित वेदार्थ प्रकाशाख्ययभाष्य समेतम् नागप्रकाशक, जवाहरनगर, दिल्ली, 1990
- दैवतसंहिता, (सम्पा.) सातवलेकर श्रीपाद दामोदर, स्वाध्यायमण्डल औंध (जि. सतारा) 1999
- ऋग्वेदभाष्यभूमिका, (सम्पा.) राम अवध पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1973
- वैदिक माइथौलोजी वैदिक पुराकथाशास्त्र, मैक्डोनेल (अनु.) रामकुमार राय चौखम्बा विद्याभवन, दिल्ली, 1984
- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीकृत, सं. युधिष्ठिर मीमांसक, रामलालकपूर ट्रस्ट सोनीपत (हरियाणा)
- ऐतरेय ब्राह्मण, आनन्द शर्मा, संस्कृतमाला, पुणे, 1930

- शतपथ ब्राह्मणम्, सं. ए. बेवर, लीपजिग 1924 और अच्युत ग्रन्थावली, काशी, 1937
- अष्टांगहृदयम्, वाग्भट्ट, निर्मलाहिन्दीटीकासहित, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2003
- चरकसंहिता, श्रीमदग्निवेशेन प्रणीता चरकदृढबलाभ्यां प्रतिसंस्कृता सविमर्शविद्योदनी हिन्दीव्याख्यायोपेता, पं. काशीनाथ पाण्डेय, डॉ. गोरखनाथ चतुर्वेदी, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी, 2001
- सुश्रुतसंहिता, आयुर्वेदतत्त्वसन्दीपिका हिन्दीव्याख्या, प्रथम भाग, डॉ. अम्बिकादत्तशास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2002
- शार्ङ्गधरसंहिता, जीवनप्रदासविमर्शहिन्दीव्याख्योपेता, डॉ. श्रीमती शैलजा श्रीवास्तव, चौखम्बा ओरियण्टल, वाराणसी, 1998
- चरक संहिता, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई प्रकाशन
- आयुर्वेद का बृहद् इतिहास, अत्रिदेव विद्यालंकार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (लखनऊ)
- श्रीमदवाजसनेयिमाध्यन्दिन शुक्लयजुर्वेद संहिता, श्रीमदुवटाचार्य विरचित मन्त्रभाष्येण श्रीमन्महीधरकृतवेददीपाख्यभाष्येण च संवलिता, (सम्पा.) वासुदेवशर्मा, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई, 1913
- कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता, सायणभाष्यसमेता, (सम्पा.) मण्डनमिश्रः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठम्, नई दिल्ली, 1986
- कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता, भट्टभास्कर मिश्र विरचित भाष्यसहिता, (सम्पा.) ए. महादेव शास्त्री तथा के. रङ्गाचार्य, मोतीलाल बनारसीदास, 1984

- अथर्ववेदः (शौनकीयः), श्रीसायणाचार्यकृतभाष्येण संयोजितः, (सम्पा.) विश्वबन्धु, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थानम्, होशियारपुरम्, 1961
- कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयब्राह्मणम्, श्रीमत्सायणाचार्य विरचित भाष्यसमेतम् (सम्पा.) नारायण शास्त्री, आनन्दाश्रमसंस्कृत ग्रन्थावलिः ग्रन्थाङ्क 32/1, 1999
- कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणम्, भट्ट भास्करमिश्रिविरचितभाष्यसहितम्, (सम्पा.) महादेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, 1911
- गोपथब्राह्मणभाष्यम्, (अनु.) पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी, (सम्पा.) प्रज्ञादेवी एवं मेधादेवी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1999
- सर्वानुक्रमणी (शौनकाचार्यविरचितानुवाकानुक्रमणी छन्दः संख्या च) श्रीमच्छ–ड़गुरुशिष्यविरचितवेदार्थ दीपिकानुवाकनुक्रमणीवृत्याश्च समवेता, (सम्पा.) मेकडानल ए.ए. (अनु.) राजेन्द्र नाणावटी, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 2001
- अथर्ववेद संहिता– सायणभाष्य, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान प्रकाशन, होशियारपुर, 1961
- तैत्तिरीय संहिता, सातवलेकर सवंत् 2013 तथा भट्टभाष्कर भाष्य (मूल) अनन्त शास्त्री, मुद्रणालय पारडी 1957 ई.
- मैत्रायणी संहिता (सम्पा.) वान श्रेडर लिपिफिग 1900–11 ई.
- वाजसनेयी संहिता महीधर भाष्य (सम्पा.) ए. बेवर लन्दन 1952 ई., निर्णय सागर प्रेस संस्करण, बम्बई, 1912
- बृहदारण्यकोपनिषद्, शांकरभाष्यसहित, हिन्दी अनुवाद सहित, गोरखपुर, गीताप्रेस, सम्वत्, 2009

- सामवेद भाष्योपक्रमणिका चौखम्भा संस्कृत सीरीज, बनारस
- सामवेद जैमिनीय संहिता, आचार्य रघुवीर, सरस्वती विहार, सन् 1938
- सामवेद उत्तरार्चिक, स्वामी श्री भगवदाचार्य, श्रीरामानन्द साहित्य मण्डल, अलवर
- सामवेद संहिता श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, 1939
- शुक्ल यजुर्वेद संहिता जगदीशलालशास्त्री सुन्दरलाल जैन, दिल्ली, 1971
- शुक्ल यजुर्वेद संहिता श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी, सूरत, 1946
- वैदिक इण्डैक्स (भाग–I, II) राकुमार राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1962
- एकादशोपनिषद्, प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, दिल्ली
- उपनिषद् रहस्य, नारायण स्वामी सार्वदेशिक प्रकाशन, दिल्ली
- निरुक्तम् दुर्गवृत्ति आनन्दाश्रम, संस्कृत ग्रन्थावली
- छान्दोग्य उपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2011 वि. सं.
- आश्वलायन श्रौतसूत्र, (सम्पा.) मंगलदेव शास्त्री, सरस्वती भवन टैक्टस काशी, 1936 ई.
- कात्यायन श्रौतसूत्र, (सम्पा.) विद्याधर शर्मा अच्युत ग्रन्थमाला, काशी, सं. 1987 ई.
- बोधायन श्रौतसूत्रम् (सम्पा.) डब्ल्यू. कलन्द कलकत्ता, 1904–23 ई.
- ऐतरेय ब्राह्मण, सायणभाष्य सहित, सं. सत्यव्रत सामश्रमी, कलकत्ता, 1952 ई.
- कौषितकी ब्राह्मण, सं. लिण्डेनर जैना, 1887

- गोपथ ब्राह्मण, (सम्पा.) राजेन्द्रलालमिश्र वी.आई. कोलकात्ता, 1872 ई.
- ताण्ड्यब्राह्मण, सायणटीका, बनारस, 1935–36 ई.
- तैत्तिरीय ब्राह्मण सायण भाष्य भाग 1–2 आनन्द आश्रम संस्कृत ग्रन्थावली, 1934 ई.
- जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण रामदेव लाहौर, 1921 ई.
- ईशादि नौ उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपरु, सं. 2066
- केनोपनिषद् पं. श्री दामोदर सातवलेकर आनन्दाश्रम पारडी, 1953
- ईशावास्योपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2066
- माण्डूक्योपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2065
- बृहदारण्यकोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1994
- छान्दोग्योपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 1995
- तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2060
- श्वेताश्वतरोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2066
- Ayahuasca : Enthaogenic Education and Public Policy, Ed. Kenneth William Tupper
- The Ritual and Religious use of Ayahuasca in contemporary Brazil, Ed. Edward Macrae, Ph.D
- Ayahuasca : An Ethnopharmacologic History, 1998 Dennis, J. Mckenna
- Ayahuasca Visions : The Religions Iconography of a Peruvian Shaman, Ed. Luis Luna Eduardo and Pablio Amaringo

द्वितीयक स्रोत :–

- वेदरश्मि, वासुदेवशरण अग्रवाल, स्वाध्यायमण्डल, पारडी, 1965
- वेदविद्या का पुनरुद्धार, फतहसिंह, वेदसंस्थान, नई दिल्ली, 2004
- वैदिक वाङ्मय का इतिहास, भगवत्तदत्त (सम्पा.) सत्यश्रवा, प्रणवप्रकाशन, दिल्ली, 1976
- वेदार्थ विचारः, महामहोपाध्याय श्रीसीतारामशास्त्री, कलिकातासंस्कृत महाविद्यालय गवेषणाग्रन्थमाला, 1882
- वैदिक सिद्धान्त मीमांसा (वेदांगादिविषयको द्वितीयभागः) युधिष्ठिरो मीमांसकः, (प्रकाशक) श्रीमती सावित्रीदेवी बागडिया ट्रस्ट, 170/जी ब्लाक, न्यू अलीपुर, कलकत्ता, 1992
- वेदार्थ प्रवेशिका, सम्पूर्णानन्द भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1969
- वैदिकदेवता, उद्‌भव और विकास, गयाचरण त्रिपाठी भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली, 1982
- अमूर्त वैदिक देवता, लक्ष्मीमिश्रा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2006
- वेदव्याख्या की दिशाएँ, ब्रजबिहारी चौबे, कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, होशियारपुर, 2006
- वैदिक व्याखानमाला, (सम्पा.) कृष्णलाल, डॉ. प्रहलाद कुमार, स्मारकसमिति तथा ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1982
- वेदांग वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास, कुन्दनलाल शर्मा, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, पंजाब

- वैदिक साहित्य और संस्कृति, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहरलाल बंगला रोड, दिल्ली
- वेदों का मौलिकस्वरूप, प्रो. लक्ष्मीश्वर झा, अभिषेक प्रकाशन जवाहर नगहर, दिल्ली–110007
- ऋग्वेदभाष्यभूमिका, हिन्दीव्याख्यासहित मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली
- ऋक्तन्त्र एक परिशीलन, डॉ. सुरेशप्रकाश पाण्डेय, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- वेदशास्त्र संग्रह, (सम्पा.) विश्वबन्धु, (हिन्दी अनु.) प्रभुदयाल अग्निहोत्री साहित्य अकादमी
- वेदवल्लरी, डॉ. श्रीमति पुष्पा गुप्ता, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
- वेदोदधिरत्नम्, डॉ. उपेन्द्र झा, कला प्रकाशन, बी.एच.यू., वाराणसी–221005
- वेदार्थ–विमर्श, रामगोपाल, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- वेद–वेदाङ्ग–विज्ञान, आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा
- वैदिक इतिहास विमर्श, वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार, प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान दिल्ली
- ऋग्वेद–विमर्श, डॉ. उर्मिला श्रीवास्तव, ईस्टर्न बुक लिंकर्स
- यज्ञतत्त्वप्रकाशः, (सम्पा.) पं. पी.एन्. पट्टाभिरामशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास
- वैदिक धर्म एवं दर्शन, सूर्यकान्त [ए.बी. कीथ रचित दि रिलिजन एण्ड फिलोसफी ऑफ दि वेद, एण्ड उपनिषद्स, हार्वर्ड ओरियण्टल सीरीज 31 का हिन्दी रूपान्तर] मोतीलाल बनारसीदास

- वैदिक देवता दर्शन, आचार्य, डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, ईस्टर्न बुक लिंकर्स
- वैदिक दर्शन, डॉ. फतह सिंह, संस्कृति–सदन कोटा, राजस्थान
- वेदों में आयुर्वेद, (सम्पा.) वैद्य पं. रामगोपाल शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- सामवेदीय ब्राह्मणों का परिशीलन, डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय, भारत भारती अनुष्ठानम्
- वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप, ओम प्रकाश पाण्डेय, विश्व प्रकाशन
- ऋग्वेदस्य दार्शनिक धरातलम्, डॉ. ओङ्कारनाथः तिवारी, नाग पब्लिशर्स
- यज्ञ संस्कृति और आयुर्विज्ञान, (सम्पा.) पं. मोतीलाल जोशी, मोतीलाल एण्ड सन्स, जयपुर
- वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप तथा विकास, प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय, नाग पब्लिशर्स
- वेदविज्ञान–चिन्तन, डॉ. ब्रजबिहारीचौबे, कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, होशियारपुर
- यजुर्वेद–भाष्य में इन्द्र एवं मरुत्, चित्तरञ्जन दयाल सिंह कौशल भिमवाल
- वेदमंजरी, डॉ. शीला डागा, विद्या निलयम्, दिल्ली, 2001
- वैदिक संग्रह, डॉ. कृष्णलाल, प्रवाचक रीडर संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, इन्दु प्रकाशन, दिल्ली
- वैदिक देवशास्त्र, ए.ए. मैक्डानल–रचित "वैदिक माइथोलोजी" का स्वतन्त्र हिन्दी रूपान्तर, डॉ. सूर्यकान्त, मेहरचन्द लछमनदास, नई दिल्ली

- वेदविद्या, वासुदेवशरण अग्रवाल, प्रकाशक रामप्रसाद एण्ड सन्स आगरा
- वैदिक व्याख्या पद्धति में शतपथ ब्राह्मण का योगदान, डॉ. पुष्पा सिंह जे.पी. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–110007
- वेदपरिचय, कृष्णलाल, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, (प्रथम संस्करण), दिल्ली, 1993
- धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी. काणे, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्ट्रीट्यूट, पूना, 1941
- अग्निष्टोम यज्ञ पद्धति विमर्श, डॉ. नारायण दत्त शर्मा, अमरग्रन्थ पब्लिकेशन, दिल्ली
- वैदिक साहित्य और संस्कृति, बलदेव उपाध्याय, तृतीय संस्करण 1967 ई. शारदा मन्दिर वाराणसी
- वैदिक अर्थव्यवस्था, डॉ. महावीर, समानान्तर प्रकाशन, दिल्ली
- मनुस्मृति, पं. तुलसीदास, स्वामी प्रेस, मेरठ
- ऐतरेय ब्राह्मण पर्यालोचनम्, चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, प्रथम संस्करण
- भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास सरस्वती सदन मसूरी, 1963 ई.
- ऋग्वेदीय ब्राह्मणों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. बलवीर आचार्य विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली
- उपनिषदों का तत्त्वज्ञान (समालोचनात्मक दार्शनिक विवेचन), आचार्य, जयदेव वेदालंकार, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2001
- उपनिषत्समुच्चय, दयानन्द सरस्वती, चौधरी एण्ड सन्स बनारस, 1933

- उपनिषद् रहस्य (एकादशोपनिषद्) महात्मा नारायण स्वामी, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, 2009
- उपनिषद् रहस्य, भाग–1, चन्द्रबली त्रिपाठी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1986
- उपनिषद् वाङ्मय विविधआयाम, वेदवती वैदिक नाग प्रकाशन दिल्ली, 1997
- उपनिषद्, अंक, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2006
- उपनिषद् सौरभ, अखिलदास, कबीरपारख संस्थान, इलाहाबाद, 1994
- एकादशोपनिषद् (ग्यारह उपनिषदों का सरल भाष्य), आचार्य सत्यप्रिय, वैदिक आश्रम तिजारा, अलवर, 1999
- उपनिषद्, दर्शन, वीरेन्द्रपाल सिंह, पंकज पब्लिकेशन दिल्ली, 1994
- A study of soma in the vedas, Mahabharata and Puranas by kusum lata Jain Ph.D Thesis University of Delhi, 1971
- Ayahuasca : From Ethnobotany to Pharmacology Sudhanshu Tiwari Agriculture University of Sao Paulo Piracicaba, Brazil
- The History and Principles of Vedic Interpretation Ramgopal, National Publications House, Delhi, 1987
- Aurvindo on vedic deities, Ramaranujan Mukharji R.S.S., 1995
- Cosmology and History in Peruvian Amazonia, Barthologmew Hainesuills University Press of Florida 2009
- Human Pharamcology of Ayahuasca. RIBA Brcelona 2003
- Ayahusca Religions : A Comprehensive bibliography and critical essays. Labate, B.C. rose, I.S. and Santos R.G. 2009

- The Ethnopnormacology of Ayhuasca, ed. SANTOS, R.G. Trivandrum
- Ayahuasca : An Ethnopharmacologic history 1998 Dennis, J. Mckenna, Ph.D
- Assessment of addiction severity among ritual users of ayahuasca
- Ayahuasca : Shamanism Shared Across Cultures. Author Luis Eduardo Luna
- Ayahuasca and spiritual crisis : Liminality as space for personal Growth, SARAE-Lewis, Columbia University
- Experiences of Encounters with Ayahuasca : “The vine of the soul” Ed. Anette Kjellgreh, Ph.D anders Eriksson, M.Sc and Tersten Norlander Ph.D
- Brazilian ayahuasca religious in perspective Beatriz Caiuby, Labate, Edward marcae and Sandra Lucia noulart
- A note on the use of Ayahuasca Among Urban Mestizo populations in the peruvian Amazon, Ed. Marlene Dobkin de Rios
- Drug Ayahuasca Church of Santo Daime legality sacrament
- Shanon, B (2002) The Antipodes of the mind charting the phenomenology of the Ayahuasca Experience Oxford University Press

कोशग्रन्थ एवं विश्वकोश :–

- भारतीय दर्शन बृहत्कोश, बच्चूलाल अवस्थी, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2004
- संस्कृत–हिंदी–अंग्रेजी शब्दकोश, डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, अनिलप्रकाशन, नई दिल्ली, 2003

- वाचस्पत्यम् (भाग 1–6) चौखम्भा संस्कृत ग्रन्थमाला, ग्र. सं. 94, वाराणसी, 1969
- शब्दकल्पद्रुम (भाग 1–5) चौखम्भा संस्कृत ग्रन्थमाला, ग्र. सं. 94, वाराणसी, 1967
- वैदिकपदानुक्रमकोश, सं. विश्वबन्धु, विश्वेश्वरानन्द, वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 2012
- वैदिककोष, हंसराज भगवद्दत्त, विश्वभारती शोधसंस्थान ज्ञानपुर, वाराणसी, 1992
- ब्राह्मणोद्धारकोष, भीमदेव, हंसराज, विश्वबन्धु, विश्वेशवरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर वि. सं. 2023
- संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, नाग पब्लिशस्र, जवाहरनगर, दिल्ली, 2002
- वैदिकवाङ्मयनिर्वचनकोश, रूपकिशोरशास्त्री, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2001
- वैदिकमन्त्रपदानुक्रमकोश, ब्लूमफील्ड वैदिकमन्त्रपदानुक्रमकोश का परिवर्तित, परिवर्धित एवं सम्बन्धित देवनागरी संस्करण, आर्य रवि प्रकाश, इण्डियन फाउन्डेशन फॉर वैदिक स्टडीज, रोहतक हरियाणा, 2003
- मीमांसाकोश, सम्पा. केवलानन्द सरस्वती, श्री सतगुरु पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1912
- अमरकोशः, अमरसिंह भानुजीदीक्षितकृतया 'सुधाख्यया' रामाश्रमीत्यपरनामधे–यया व्याख्यया सहित, सं. पं. शिवदत्तदाभिधः, राष्ट्रियसंस्कृतसस्थानम्, नई दिल्ली, 2003
- दयानन्दनिरुक्तिव्युत्पत्तिकोश, रुपकिशोरशास्त्री, गुरुकुलवृन्दावन स्नातकशोधसंस्थानान्तर्गत आदित्यपीठ, दिल्ली, 2003

- वैदिकदेवताऋष्यनुसारीमन्त्रानुक्रमकोश, आर्यरविप्रकाश एवं रामनारायण, इण्डियन फाउन्डेशन फॉर वैदिक स्टडीज रोहतक हरियाणा, 2005
- श्रौतपदार्थनिर्वचनम्, सं. विश्वनाथ शास्त्री एवं अग्निहोत्री प्रभुदत्त, पृथिवीप्रकाशन, दिल्ली, 1987
- अमरकोशः, (दक्षिणात्यव्याख्योपेतः) सं. रामानाथन, द आड्यार लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च सेन्टर मद्रास, 1978
- उणादिकोश, परोपकारिणी, सभा, अजमेर प्रकाशन
- भारतीय संस्कृति कोश, देवेन्द्र मिश्रा, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2006
- वैदिक पदानुक्रम कोश, मौरिस ब्लूमफील्ड, सं. ओमनाथ बिमली एवं सुनील कुमार उपाध्याय, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली (पुनर्मुद्रण), 2004
- उपनिषद्वाक्य महाकोशः, गजानन मेहरचन्द, लक्ष्मणदास, दिल्ली, 1996
- उपनिषद् महावाक्यकोश एस. गजानन, शम्भु सधाले, श्री तसगुरु पब्लिकेशन, दिल्ली 1940–41
- उणादिसूत्र व्याख्या उणादिकोष दयानन्द सरस्वती, (अजमेर सं. 2021)
- Sanskrit-English Dictionary, Monier Williams, Motilal Banarasidass Publishers, Delhi, 2005
- Oxford English-Hindi Dictionary, Oxford University Press, London, 2007
- Encyclopedia of Indian Philosophy, Vol. I-II, Karl. H. Potter, Motilal Banarsidass, Delhi, 1995

- A Vedic Concordence, Bloomfield maurice, Motital Banarasidass Publishers, Delhi, 1996

- Vedic Index of Names and Subjects, A.A. Mecdonell and Keith, Motilal Banarasidass Publishers, Delhi, 1982

- Vedic Bibliography, R.N. Dandekar, Vol. I (2nd Edition), 1986, Vol. II (Repriet) 1978, Vol. V, 1993, Bhandarkar Oriential Research Institute, Poona

वेबसाइट स्रोत :—

- http://wikipedia.org/wiki/ayahuasca

- http://ayahuascaguide.org/ayahuasca_and_religion

- htt://www.ayahuasca.com/ayahuasca_overviews/ayahuasca_religious_ and_nature